धागे

सुलझे रिश्तों की अनसुलझी कहानी

सायंतनी साहा

BlueRose ONE.com DIY
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sayantani Saha 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-6783-155-7

First Edition: April 2026

समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है मेरे पिता **श्री अपूर्ब कुमार साहा** को,

जिन्होंने अपने जीवन को हमेशा अपने नियमों पर जिया, और मुझे सिखाया कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी एक रास्ता होता ही है।
केवल दृष्टि को व्यापक करो, और वह राह दिखने लगेगी।
एक-एक कदम चलो, और मंज़िल तक पहुँचना निश्चित हो जाएगा।

तथा यह समर्पित है -

उन अनकहे शब्दों को, जो कभी संवाद न बन सके,
उन एहसासों को, जो निःशब्द ही मन की दीवारों पर उकेरे गए,
उन बिखरे हुए संबंधों को, जो जुड़ने की चाह में और उलझते गए।

यह उन सभी के नाम जिन्होंने कभी किसी रिश्ते की गिरह को खोलने का साहस किया, या फिर बस चुपचाप उनके साथ जीना सीख लिया।

उन मित्रों, परिवार, और प्यार के धागों के नाम, जो हमें जीवन में बाँधते भी हैं और आज़ाद भी करते हैं।

उन सभी पाठकों के नाम, जिन्हें यहाँ अपने बिखरे हुए धागों का कोई सिरा मिल जाए।

आपके विश्वास और प्रेम के लिए – सादर।

भूमिका

यह कथा न तो पूर्णतः प्रेम की है, न ही केवल वियोग की। यह उन तंतुओं की कहानी है, जो अलग-अलग अनुभवों को बुनकर जीवन का चित्र गढ़ते हैं। यह कहानी है प्रेम, संबंध, विश्वास, और संघर्ष की जो जीवन के विभिन्न आयामों को उजागर करती है।

'धागे' हमारे चारों ओर बिखरे अनगिनत रिश्तों की पड़ताल है, जो जीवन के ताने-बाने को आकार देते हैं। इसके पात्र केवल कल्पना नहीं, बल्कि समाज का प्रतिबिंब हैं। उनकी खुशियाँ, दुःख, सपने, और संघर्ष कहीं-न-कहीं हमारे जीवन की झलक प्रस्तुत करते हैं।

कुछ रिश्ते समय की आँधी में टूट जाते हैं, कुछ उलझ जाते हैं, और कुछ हमें फिर से नई शुरुआत करने का अवसर देते हैं। इस कहानी में आप उन धागों को देखेंगे जो टूटे हुए रिश्तों को जोड़ते हैं, और उन नए तंतुओं को भी जो नए संबंधों की नींव रखते हैं।

आशा है कि यह पुस्तक आपके दिल को छुए, आपकी आत्मा को स्पर्श कर जीवन की सच्चाइयों को उजागर करे, और आपको एक नया दृष्टिकोण दे। यदि इन पन्नों में आपको अपने जीवन की कोई हल्की-सी झलक मिल जाए, यदि कोई संवाद आपके मन के किसी कोने को छू जाए, तो समझूँगी कि **'धागे'** ने अपनी यात्रा पूरी कर ली।

रचनाकार का सार

सायंतनी साहा का जन्म 1988 में जमशेदपुर, भारत में हुआ। राजस्थान में पली-बढ़ी इस कवयित्री और कहानीकार की लेखनी जीवन के जटिल भावनात्मक धागों को उजागर करती है। उनका पहला काव्य संग्रह '**अर्थ - हिंदी काव्यांजलि**' ने पाठकों को भावनात्मक गहराइयों में ले जाने का काम किया। अब, **'धागे'** के माध्यम से, वे एक नई साहित्यिक यात्रा पर पाठकों को आमंत्रित करती हैं, जहाँ कथानक और भावनाओं की सूक्ष्म बुनाई उन्हें एक अनोखे संसार में ले जाएगी।

उनकी रचनाएँ रोजमर्रा की जिंदगी से प्रेरित होती हैं, और हर कहानी और कविता एक नया अर्थ और अनुभव प्रदान करती है। लेखन उनके लिए शब्दों का खेल नहीं, बल्कि दिल की आवाज़ है, जो पाठकों को उनके जीवन की कहानियों से जोड़ती है।

प्रस्तावना

सोशल मीडिया के इस दौर में किताबों का छपना, पढ़ना किसी मोजिज़े से कम नहीं। मगर जब तक सहरा है तब तक दीवानों की भी तादाद कम नहीं होने वाली।

सायंतनी साहा भी किसी दीवानी से कम नहीं जो अदब के सहरा में दिन रात मुहब्बत के फूल खिलाने की जुस्तजू में हैं।

अभी कुछ वक़्त पहले ही सायंतनी की कविताओं का संकलन मंज़रे-आम पर आया था। कच्ची-पक्की कविताओं से महकते हुए इस संकलन का अदबी हलक़ों में बहुत चर्चा रही है।

इस चर्चा की चमक अभी मद्धम भी नहीं पड़ी थी कि सायंतनी की नई किताब नॉवेल की शक्ल में 'धागे' उन्वान से मंज़रे-आम पर आने वाला है।

डॉ. अख़्तर नज़्मी साहब का एक शेर याद आ रहा है-

"इसी लिए तो बनाया है घर किताबों में,
कि बार बार तुम्हारी नज़र से गुज़रूँगा।"

शायद यही जज़्बा सायंतनी का है, अपने जज़्बात को किताब की तहरीर के आईने में देखने का हौसला ही अदब और साहित्य में इज़ाफ़ा करता है। सायंतनी भी अदब और साहित्य में इज़ाफ़ा हैं।

‘धागे’ उन्वान से प्रकाशित होने वाले इस पुस्तक में की भाषा वही है जो एक युवा लेखक की होनी चाहिए, कुछ जुमले तो फ़िक्र में डूबे हुए हैं, कहीं आँसुओं का सैलाब है तो कहीं भावनाओं के भँवर, कहीं चाँद सितारे हैं तो कहीं कहकशाँ अपने सबाब पे है। और जैसा कि उन्वान से ही ज़ाहिर है कि ये कहानी रिश्तों के धागों के टूटने बिखरने का ताना बाना है। उम्मीद करता हूँ कि ये साहित्य में एक मील का पत्थर साबित हो। मेरी दुआएँ सायंतनी के साथ हैं। किताब के उन्वान से रहीम दास याद आ गए-

“रहिमन धागा प्रेम का मत दीजो चटकाय,
जोड़े से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।”

- श्री अतुल अजनबी
अंतरराष्ट्रीय शायर

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में जिन विचारों, प्रेरणाओं और सहयोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनके प्रति मैं अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। यह उन सभी आस्थाओं और दृष्टिकोणों का परिणाम है, जिन्होंने मेरी लेखनी को संजीवनी शक्ति प्रदान की और मुझे हर चुनौती का सामना करने की प्रेरणा दी।

मैं उन पाठकों का भी विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिनकी निरंतर उम्मीदों और समर्थन ने इस यात्रा को संभव बनाया। आपके प्रेम और प्रोत्साहन ने मुझे हमेशा आगे बढ़ने की शक्ति दी है। आपकी प्रतिक्रियाएँ और समीक्षाएँ न केवल मेरी लेखनी को परिष्कृत करने में सहायक रहीं, बल्कि मेरी रचनात्मकता को भी नई दिशा देती रहीं।

मेरे मित्रों, परिवार और उन सभी सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद, जिनके साथ बिताए गए समय और चर्चाओं ने इस उपन्यास को एक नई ऊँचाई तक पहुँचाया। आपके विचार और सुझाव मेरे लिए अत्यंत मूल्यवान रहे हैं।

उन सभी का भी आभार, जिन्होंने इस रचना में किसी-न-किसी रूप में योगदान दिया। चाहे वह प्रेरणा हो, सलाह हो, या केवल सकारात्मक ऊर्जा, आपके योगदान ने इस यात्रा को संभव बनाया। आपके सहयोग और समर्थन के बिना यह कार्य अधूरा रह जाता।

अंततः, इस यात्रा में साथ देने वाले सभी पाठकों, समीक्षकों और शुभचिंतकों को भी मेरा स्नेहपूर्ण धन्यवाद, जिनके निरंतर प्रोत्साहन ने मेरी लेखनी को जीवन दिया। आपके बिना, इस पुस्तक का अस्तित्व संभव नहीं होता।

सभी के प्रति स्नेह और आभार।

अनुक्रमणिका

अध्याय १ परिचय 2
अध्याय २ मोह के धागे 6
अध्याय ३ अधूरी कड़ी 11
अध्याय ४ गिरह 27
अध्याय ५ ज़िन्दगी - धागों से बुनी कहानी 34
अध्याय ६ सूत्रों का पहिया 44
अध्याय ७ उलझे धागे 53
अध्याय ८ भूले-बिसरे रेशे 63
अध्याय ९ बंधन की नई गूँज 67
अध्याय १० नये रंग, पुरानी बुनाई 96
अध्याय ११ गठान 109
अध्याय १२ जटिल लड़ियाँ 138
अध्याय १३ स्पंदन का जाल 150
अध्याय १४ बंधे नहीं, जुड़े थे 157
अध्याय १५ भ्रम या तंतु? 169
अध्याय १६ पारदर्शी रेशे 189
अध्याय १७ अनकही गिरहें 197
अंतर्निहित प्रश्न 201
परिशिष्ट 202
पाठकों के नाम एक संदेश 205
आवरण: एक दृश्य में समेटी भावनाएँ 207
समीक्षाएँ 209
'अर्थ' पर पाठकों की प्रतिक्रिया 213

अध्याय १
परिचय

मार्च, 2021 | परिवार न्यायालय, नई दिल्ली | न्यायालय कक्ष के बाहर एक तरफ़ ग़ुमान से भरी छलकती पलकें। मन में संवेदनाओं का बाढ़ समेटे हुए, उसकी सबसे पसंदीदा ग़ुलाबी सूट में खड़ी, **पियू**। सोच रही है, कितना कुछ खोया या, कितना कुछ खोने वाली है अगले कुछ पलों में। एक तरफ़ अभिमान का सैलाब है तो दूसरी ओर मन बीते हुए लम्हों की यादों में गोते खा रहा है। डबडबायी आँखों से दूसरी छोर पर खड़े **अथर्व** को निहार रही है। अथर्व की कसमसाई काली कमीज़ से साफ़ पता चलता है कि रात भर वही पहने करवटों में वक़्त गुज़ारा है। आँसू भले न बह रहे हो लेकिन आँखों के कोनों से कुछ एहसास झाँक रहे हैं। दोनों के मन में टीस है कि आख़िर यह रिश्ता जुड़ा ही क्यों था? साथ एहसास भी है कि जो था, वो खूबसूरत था। न्यायालय कक्ष के बाहर भीड़, शोरशराबे में दोनों को सन्नाटा ही लग रहा है। मन के अंदर का कोहराम ही इतना बुलंद है कि बाहर का शोर अंदर नहीं जा रहा। अभी भी कुछ 30 मिनट हैं, न्यायाधीश साहब के सामने पेशी होने में। वही कलम उठेगी, जिसके दस्तख़त आज एक रिश्ते का अंत लिख देंगे। लेकिन उस मन के बंधन का क्या जो ग़ुमान में, ख़ुशी में, जज़्बातों में, आज भी साथ ही है।

"एक सुलझे रिश्ते की अनसुलझी कहानी।"

अगले 30 मिनट के लिए वकील साहब ने दोनों को इंतज़ार करने की इत्तेला दी। जब बारी आएगी तो बुलाया जाएगा। सामने बिरजू भैय्या की चाय की दुकान में सुलगती हुई आग, जिसमे चाय पूरे दिन बनती है। पियू और अथर्व के मन में भी ऐसी ही आग में कुछ ख़याल तप रहे हैं। जैसे चाय का पतीला जल रहा है, कालिख़ सोख़ रहा है, वैसे ही दोनों का मन भी दर्द के कालिख़ से भीग रहा है। चाय का गिलास हाथ में थामे दोनों एक दूसरे के आमने-सामने बैठे हैं। ख़ामोशी है मगर अजीब-सी है ये ख़ामोशी जिसमे लब सिले हुए और आँखों में कितने ही पलों का फ़लसफ़ा है।

कब उस चाय की चुस्की के साथ दोनों बीते लम्हों में बंध गए पता ही नहीं चला।

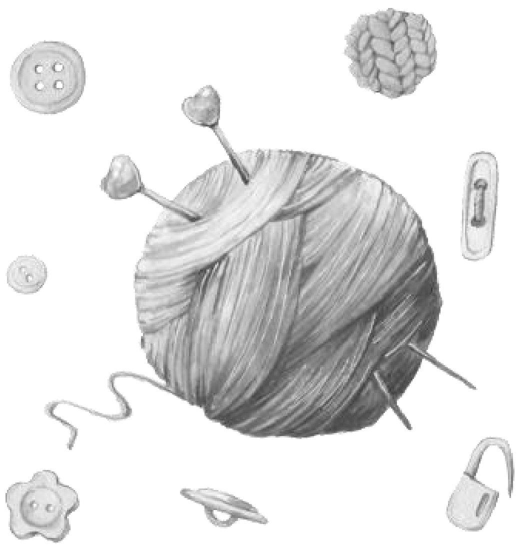

अध्याय २
मोह के धागे

दरयागंज, पुरानी दिल्ली | **सितम्बर 2005** | यह कहानी शुरू होती है पुरानी दिल्ली की गलियों में बने, शर्मा जी के घर से। 1950 के लगभग बनवाए गए इस मकान को शर्मा जी के परिवार ने मिलकर घर बनाया। इतने सालों में ज़्यादा मरम्मत हुई नहीं तो दीवारों पर बीतते उम्र की छाप दिखने लगी है। दरवाज़े पर '**श्री राजीव शर्मा**' का नामपट्ट। एक गैर-सरकारी महाविद्यालय में हिंदी अध्यापक थे। सेवा-निवृत्ति के बाद अपना ज़्यादातर समय अख़बार और किताबें पढ़ने में गुज़ारते हैं। कभी शाम को दोस्तों के साथ वृद्ध बागीचे में बैठकर चाय संग साहित्य की बातें करते तो कभी शाम ढ़ले मोहम्मद रफ़ी के गाने चलाकर, परिवार के साथ समय बिताते। परिवार में धर्म-पत्नी, **श्रीमती सुनंदा शर्मा**, बड़ी बेटी **नंदिनी** और बेटा **अथर्व**। इस घर के हर कोने में यादों का पिटारा है जो अक्सर शर्मा जी, श्रीमती जी के साथ बैठकर याद करते हैं। सुनंदा जी इसी घर में ब्याह कर आयीं थीं। शर्माजी की माने तो जब शादी हुई थी तब सुनंदा जी को चाय बनानी भी नहीं आती थी। धीरे-धीरे परिवार का मोह बढ़ा, रिश्ते बढ़े और हाथों का स्वाद भी। शर्माजी के दिल और पेट की ख़ुशी सुनंदा जी से जुड़े हैं। सुनंदा जी भी बड़े प्रेम से सबका मनपसंद खाना बनती हैं। यह जुगलबंदी रसोई तक सीमित नहीं, सुनंदा जी एक कोष हैं। सबके मन की बातें झट से समझ लेना और रिश्तों को पिरोये रखना, ख़ासियत है उनकी। एक ख़ुशहाल परिवार जहाँ एक दुसरे के प्रति प्रेम, सम्मान और दायित्व है।

अथर्व महाविद्यालय में पढ़ता है। कंप्यूटर में शुरू से ही दिलचस्पी रही है। शर्माजी चाहते थे कि बेटा किसी सरकारी नौकरी पर लगे, परन्तु अथर्व के सपने किसी दूसरी दुनिया में उड़ान भरते हैं। शर्मा जी ने कभी अपनी इच्छाओं को बच्चों पर थोपा नहीं। जीवन में हमेशा से अपने फ़ैसले लेने की आज़ादी रही है। शर्माजी का मानना है कि जब तक फ़ैसले नहीं लेंगे, गलतियाँ कैसे करेंगे और बिना गलतियों के कोई जीवन में आगे नहीं बढ़ता। जीवन में विशेष सीख देती हैं गलतियाँ। महाविद्यालय के ख़ुशनुमा दिन! अथर्व पढ़ाई में बचपन से ही आगे रहा है और छात्रवृत्ति मिलती है। घर का हाल माँ-पापा ने जतन से अच्छी तरह संभाला है। दोनों बच्चों ने जीवन के मूल का ज्ञान बचपन से सीखा है। घर में बुने हुए रिश्ते बहुत मज़बूत हैं तो बाहर सड़कों पर घूमना अथवा घर पर बग़ावत करने का ख़याल, कभी नहीं आया मन में। घर का खाना और पापा के साथ बैठकर ज़िन्दगी भर आराम करने के सुनहरे सपने। माँ का प्यार से थपकाना और कहना, "अरे! कुछ तो कर ले, जीवन भर मुझसे सेवा नहीं होगी।" महाविद्यालय में अंतिम वर्ष है। पढ़ाई, कुछ दोस्त और परिवार के साथ समय बढ़ रहा है। इस वर्ष के अंत तक शायद कहीं अच्छी नौकरी भी मिल जाएगी।

***

उन्हीं ख़ुशी भरे लम्हों में एक इतवार क़िताब बाज़ार से लौटते हुए टकरा गयी, **पियू**। ग़ुलाबी सूट, मासूम चेहरा और बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखें। अथर्व की तंद्रा टूटी, जब बीच सड़क गाड़ियों का शोर-गुल सुना। जब तक मोहकता से बाहर झाँका तब तक सड़क पर बड़ी मात्रा में भीड़ जमा हो गयी। बालों को संभालती, लड़खड़ाकर स्कूटी और सामान उठती हुई पियू, घबराई लग रही

है। किसी साइकिल वाले ने रास्ते में उसकी यातायात में रुकी स्कूटी पर धक्का मारा, जिससे वह गिर पड़ी। फिर क्या! सकपकायी... बीच सड़क कभी अपने आप को सँभालती, कभी अपनी चीज़ों को। अथर्व वहाँ खड़ा देखता रह गया। जैसे उसकी मासूमियत में बँध गया है, बस एकटक देखता रहा। फिर कुछ कदम आगे बढ़ाये और बिखरा सामान उठाने में मदद करने लगा। वहीं पियू के झोले से एक किताब गिर गयी। अथर्व ने बाकि सामानों की तरह ही उसे भी उठाया। पियू ने सामान बटोर कर गाड़ी उठायी। अथर्व के हाथों में अपनी किताब देख, उससे खींच कर वापस ले ली। जैसे जताना चाहती है, ये किताब नहीं, अभी वापस करो। थोड़ी देर में भीड़ तितर - बितर होने लगी। पियू भी जल्दी ही वहाँ से निकली और कुछ ही पलों में ओझल हो गयी। अथर्व घर की के रास्ते पर चल पड़ा। राहें घर की ओर बढ़ रही हैं लेकिन ख़यालों में, उसी ग़ुलाबी सूट वाली लड़की का चेहरा घूम रहा है।

घर पहुँचकर अपने कमरे की ओर जैसे ही बढ़ा, माँ ने आवाज़ दी, "आज बड़ी देर लगा दी आने में! चलो आकर खाना खा लो, पापा इंतज़ार कर रहे हैं। तेरा मनपसंद मीठा बनाया है।" अथर्व ने हामी भरी लेकिन आज उसका मन किसी और पसंद के बारे में ही सोचे जा रहा है। फिर भी वास्तविकता से जुड़ते हुए, वह जल्दी से हाथ-मुँह धोकर रसोई में गया।

पापा और दीदी इंतज़ार कर रहे हैं। दीदी, नंदिनी, ज़्यादा कुछ बोलती नहीं। लोग दिमागी बीमारी का हवाला देते हैं। नंदिनी के जीवन में कुछ बड़े बदलाव हुए थे, तब अथर्व बहुत छोटा था। अथर्व को उस समय इतना समझ में नहीं आया था लेकिन बदलते वक़्त के साथ उसने दीदी को और करीब से समझा है। चिकित्सा क्षेत्र में इस बीमारी को "एक्यूट सायकोसिस" कहते हैं।

चाहे दुनिया नंदिनी को किसी भी आँकड़े में तोलती है, अथर्व की जान बसती है उसमे।

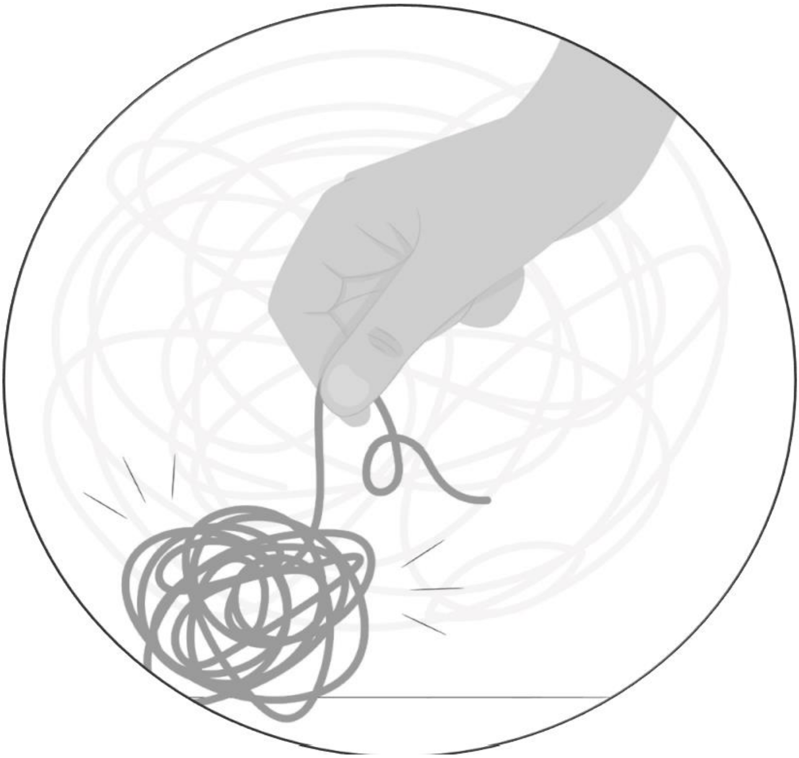

अध्याय ३
अधूरी कड़ी

अथर्व और नंदिनी के बीच लगभग 11 वर्षों का अंतर है। जब से अथर्व का जन्म हुआ, माँ से अधिक नंदिनी ने ही उसे पाला था। कभी भाई को बुखार आए तो रात भर उसे सीने से लगा कर रखना और कभी चोट लग जाए तो उसका मरहम बन जाना। बहुत गहरा रिश्ता है नंदिनी और अथर्व के दिलों का। भाई-बहन से ज़्यादा यह एक माँ और संतान का रूप दिखता है। आखिरकार माँ केवल कोख़ से जन्म देने वाली नहीं होती। इस रिश्ते का जन्म हृदय से होता है।

धीरे-धीरे दोनों अपने उम्र के पड़ावों पर बढ़ने लगे। बात उन दिनों की है जब अथर्व की उम्र लगभग कुछ 5 बरस की रही होगी और नंदिनी 16 की। नंदिनी के जीवन में पहले प्यार ने दस्तक दी। **स्पर्श**, 11वीं कक्षा में नंदिनी का सहपाठी। सहपाठी, फिर दोस्ती और फिर उस एक मीठे से रिश्ते की शुरुआत। ऐसी उम्र में होता है। दिल किसी की ओर चल पड़ता है। चोरी से देखना, मुस्कुराना, कभी पुस्तकालय में किताबों के बीच हल्के से उँगलियों का छू जाना। मासूम दिलों के लिए इतना जताना ही बहुत होता है। व्यवहारिकता की धूल नहीं होती मन पर। मन नहीं जानना चाहता कि बैंक में कितनी पूँजी जमा है। प्यार का बंधन उम्र-सा ही मासूम होता है, सच्चा होता है।

''बचपन का प्यार, कोई इसे आकर्षण कहेगा, कोई बचपना। जाने कितने रूपों में वर्णन हो जाए मगर जो चखे वही रम जाए।''

स्पर्श खन्ना, ‘खन्ना बुक स्टोर्स’ का इकलौता वारिस। ख़ुश-मिजाज़ परिवार के दिल का टुकड़ा। खन्ना बुक स्टोर्स स्पर्श के दादाजी ने शुरू किया था। बंटवारे के वक़्त, **नवजोत खन्ना** अपने परिवार के साथ दिल्ली आकर बस गए थे। समय के साथ धीरे-धीरे कदम से कदम मिलकर खन्ना बुक स्टोर्स ने एक अच्छा मकाम बनाया। दादाजी के बाद स्पर्श के पापा **अर्जुन खन्ना** ने खन्ना बुक स्टोर्स को संभाला था।

***

अर्जुन खन्ना की प्रेम कहानी उन दिनों 'ग़दर' की प्रेम कहानी से कम नहीं थी। स्पर्श की मम्मी ने एक मुसलमान परिवार में जन्म लिया था। **वफ़ा सिद्दीक़ी**, महाविद्यालय का रास्ता खन्ना बुक स्टोर्स के सामने से निकलता था। आते-जाते निगाहें टकराईं, फिर दिल। वफ़ा अपनी मेडिकल की पढ़ाई कर रही थी। उन दिनों ऐसे अंतर धर्म में विवाह अत्यधिक संघर्षपूर्ण होता था। एम.बी,बी.एस की पढ़ाई पूरी करने के बाद एक अस्पताल में चिकित्सक की नौकरी मिली। प्रेम का संघर्ष चलता रहा। पारिवारिक मतभेद बढ़ते गए। दोनों ने बहुत कोशिशें की, जिससे दोनों परिवार राज़ी-ख़ुशी विवाह के लिए मान जाएँ परन्तु सारे जतन नाकाम ही रहे।

अर्जुन के परिवार से ऐसी कोई विशेष बाधा नहीं थी जितनी वफ़ा के परिवार में समस्याएँ उत्पन्न हो रही थी। नवजोत जी और उनके परिवार ने बंटवारे के धर्म-युद्ध में कई रिश्तों की बलि चढ़ते देखी थी। वह जानते थे की धर्म के भेद ने इंसानियत को किस तरह धूमिल किया था। जब दिल्ली पहुँचे थे तब जेब में कुछ पैसे और अपनों के पीछे छूटने का दर्द था। अर्जुन नवजात थे। उस छोटे से बच्चे के साथ गठरी में सामान बाँधे वक़्त की बहुत मार सही

थी। नवजोत जी ने धर्म के नाम पर हुई दहशतगर्दी को बहुत करीब से देखा और महसूस किया था। एक लम्बा अरसा बीता था 'खन्ना बुक स्टोर्स' तक का रास्ता तय करने में। इसलिए नवजोत जी का दृष्टिकोण अंतरधार्मिक विवाह के विरुद्ध नहीं था। परन्तु उधर वफ़ा के घर की कहानी अलग थी। वफ़ा के पड़ौसी यहाँ तक बताते हैं कि उनका परिवार इस विवाह के इतने विरुद्ध थे कि एक बार उनकी अम्मी ने ज़हर खाने की कोशिश की थी। उस दौरान दोनों ने अलग हो जाने का फ़ैसला लिया। कोशिशें की, कुछ समय अलग रहने की। न कोई बात, न मेल-जोल, कुछ नहीं पर दिल एक दूसरे को दे चुके थे। बिना दिल के जीना बहुत मुश्किल होता है।

इसी बीच सिद्दीक़ी परिवार, वफ़ा का निक़ाह कहीं और करवा देना चाहता था। बात आगे बढ़ी। सुनने में आता है कि बारात चौखट तक आ गयी थी। अर्जुन से रहा नहीं गया और वह न चाहते हुए भी एक आख़िरी बार वफ़ा को देखने पहुँच गया। वफ़ा दुल्हन बनी थी लेकिन सूजी हुई आँखें और बुझी हुई शक्ल सारा फ़लसफ़ा बयान कर रही थी। अर्जुन पर नज़र पड़ी तो बिखर गई। सब छोड़कर चली गई एक कमरे में और खुद को बंद कर लिया। उसका दिल माना नहीं नए रिश्ते के लिए। परिवार ने बहुत समझाया, फिर से अम्मी ने ज़हर खाने की धमकी दी पर इस बार कोई मना नहीं सका। वफ़ा को ज़िंदगी भर अकेले रहना मंज़ूर था लेकिन किसी और का हो जाना नहीं। उस घटना के बाद भी बहुत समय तक अर्जुन और वफ़ा ने एक दूसरे से दूर रहने की असफ़ल कोशिशें की। प्यार खींचकर बाँध गया दोनों को।

एक दिन घरवालों को बिन बताए दोनों ने विवाह कर लिया। न्यायलय में अंतरधार्मिक विवाह की मान्यता होने के कारण कोई अड़चन नहीं आई।

घरवालों को पता चला तो वफ़ा के परिवार ने सारे रिश्ते तोड़ लिए। नवजोत जी नाराज़ हुए क्योंकि उन्हें भी इस बात की ख़बर नहीं दी थी अर्जुन ने। शांत हुए तो बेटे-बहू को प्रेम से अपना लिया।

वफ़ा हमेशा वफ़ा सिद्दीक़ी ही रहीं। कभी ज़बरदस्ती किसी ने 'खन्ना' बनाने की कोशिश नहीं की। जहाँ घर में एक तरफ़ माता रानी के जगराते होते वहीं दूसरी तरफ़ वफ़ा के साथ पूरा परिवार ख़ुशी से ईद मनाता। एक भव्य मिलन था दो धर्मों का। वहाँ कभी कोई बैर नहीं दिखा। प्रेम से बड़ा कोई धर्म नहीं।

"ऊपर ख़ुदा, नीचे हम, बीच में केवल एक डोर है प्रेम की और कोई बैर नहीं।"

अर्जुन की दो छोटी बहनें हैं जिनकी एक-एक कर शादी हो गई। जहाँ 'खन्ना बुक स्टोर्स' की तरक्की हुई, वहीं वफ़ा सिद्दीक़ी भी चिकित्सा जगत में एक जाना माना नाम था। कुछ वर्षों में स्पर्श का जन्म हुआ। उसने जितनी निष्ठा से मंदिरों में दीये जलाए, उतनी ही अकीदत से नमाज़ पढ़नी सीखी।

***

कभी-कभी विद्यालय के बाद का समय स्पर्श पापा के साथ दुकान पर बिताता। नंदिनी भी उन शामों को, अपनी सहेली के साथ पेन, कॉपी, रंग जैसी छोटी-मोटी चीज़ें खरीदने के बहाने दुकान का चक्कर लगाती। नंदिनी जैसे ही दुकान पर पहुँचती तो स्पर्श बाकि कर्मचारियों को हटने का इशारा करता और ख़ुद जाता सामान देने। नंदिनी पैसे देना भी चाहती तो नहीं लेता। कभी कोई कर्मचारी मज़ाक में बोल देता, "अरे भाभी! अब आपसे पैसे थोड़े ही लेंगे

भैय्या!" सुनकर नंदिनी शर्मा जाती। स्पर्श और नंदिनी आँखों-ही-आँखों में उस ख़ुशी को बाँट लेते जो इस बात को सुनकर दोनों के मन में होती। ऐसी ही कही-अनकही के बीच एक मीठा-सा रिश्ता अपनी नीव बना रहा था।

स्पर्श पढ़ाई के साथ खेल-कूद में भी बहुत आगे था। जब कभी फ़ुटबॉल प्रतियोगिता होती, भीड़ उसी का खेल देखने पहुँचती। कुछ ही महीनों में अंतर-विद्यालयी प्रतियोगिता शुरू होने वाली थी। स्पर्श जिस दल का भाग था, वह उसके नेतृत्व में पूरे ज़ोर-शोर से तैयारियों में जुटा था। शाम को अभ्यास खेल देखने के बहाने, नंदिनी अपनी सहेलियों के साथ विद्यालय में ज़्यादा देर रुक जाती थी। कभी-कभी मौका मिलता था स्पर्श को करीब से मिलने का। नंदिनी और स्पर्श ने कभी अपनी भावनाओं को शब्द नहीं दिए थे। सब कुछ अनकहा था लेकिन आँखों ने हर बात साफ़-साफ़ जताई थी। फ़ोन का ज़माना नहीं था तो मन की सारी बातें ज़्यादातर डायरी को पता हुआ करती थी। नंदिनी की काली वाली डायरी जिस पर एक चाँद बना हुआ था। रोज़ उस डायरी से अपने मन की बातों को साझा करती और ख़यालों की दुनिया में स्पर्श के साथ कुछ वक़्त बिताती। ऐसी ही कभी एक रात चाँद तले, हाथों में हाथ और जाने कितनी बातें।

“प्रेम का एक रूप यह भी है। शब्द, निशब्द, अर्थ, अर्थहीन। दिव्य! यत्र, तत्र, सर्वत्र!”

***

देखते-देखते वह दिन आ पहुँचा जिस दिन फ़ुटबॉल प्रतियोगिता थी। विद्यालय के बच्चे अपने दर्शक दीर्घा पर खेल शुरू होने का इंतज़ार कर रहे

थे। उधर नंदिनी ने मन पक्का किया कि प्रतियोगिता समाप्त होने पर स्पर्श को बोलकर रहेगी जो इतने वक़्त से दोनों के मन में है, बस होठों पर नहीं। अनकही को कहना था। जताना था कि आँखें जो कहती हैं वह सामने बोलने-सुनने में दिल की धड़कनें कैसा महसूस करती हैं।

नंदिनी सुबह तैयार हुई। एक सफ़ेद सूट पहना जो दीपावली पर पापा ने दिलवाया था। उस में चाँद-सी सुंदर लगती है। नंदिनी को पायलों का बहुत शौख था। जाने कितनी तरह की नक्काशी वाली पायलें ख़रीद कर जमा किए थे उसने। विद्यालय में पायल पहनना मना था किन्तु जब कभी मौका मिलता तो ज़रूर पहनती। उस साल उसके जन्मदिन पर स्पर्श और कुछ दोस्तों ने मिलकर एक छोटा-सा समारोह किया था। उसी दिन स्पर्श ने, उसे एक जोड़ी पायल तोहफ़े में दी थी। नंदिनी ने वही पायल पहनी। माँ ने नंदिनी को देखा तो उसका खिला हुआ चेहरा देखती रह गयी। मंदिर में जलते हुए दीये से कलीक निकलकर, काला टीका लगाते हुए बोली, "मेरी गुड़िया को कभी किसी की नज़र न लगे।" नंदिनी ने मुस्कुराते हुए अथर्व को आवाज़ दी, "आरू! चल... मैच शुरू होने वाला है। फिर हमें अच्छी जगह नहीं मिलेगी बैठने के लिए।" अथर्व जल्दी से अपने जन्मदिन पर ख़रीदी शर्ट पहन कर दौड़ा चला आया। नंदिनी ने चाहे कभी कहा न हो माँ से कि प्यार ने उसे छुआ था, परन्तु माँ का हृदय शायद सब जानता था। उन्हें एहसास था कि उसका मन किसी दूसरी उड़ान की तरफ़ रुख किए था। उन्होंने कभी उसे बाँधना नहीं चाहा। उनकी बेटी की समझ पर उनका भरोसा इतना था। उन्होंने देखा था उसे अथर्व की ज़िम्मेदारी को निभाते। एक अच्छी बेटी के रूप में। पढ़ाई में भी कभी उसे कहना नहीं पड़ा कि पढ़ने बैठो। जैसे सब कुछ सही।

नंदिनी और अथर्व एक दूसरे का हाथ थामे विद्यालय के लिए निकल गए। वहाँ स्पर्श और नंदिनी की लुकाछुपी दोस्तों से छुपी नहीं थी। जल्दी पहुँचकर दोस्तों ने नंदिनी और अथर्व के लिए सामने वाली पंक्ति में ही जगह रखी थी। खेल शुरू होने वाला था और सारे खिलाड़ी तैयार। नंदिनी को ढूंढती स्पर्श की निगाहें, जैसी ही उससे मिली तो एक पल को उसकी मोहकता से ठहर गया। फिर मुस्कुराकर अपने दल से बातें करने लगा। कुछ देर में खेल शुरू हुआ।

गेंद मैदान में छूटते ही स्पर्श तीर की गति से उसे अपने पक्ष में मोड़ता गोल की तरफ दौड़ पड़ा। दूसरा दल अपनी जगह से हिलता, उससे पहले गोल। पूरा मैदान ख़ुशी से चीख़ उठा और 'स्पर्श' के नाम की गूँज चारों तरफ़। नंदिनी का दिल उसका नाम सुनकर कितनी ज़ोर से धड़क रहा था, यह सिर्फ़ उसे ही पता था। इसी तरह तीव्र गति से 2, 3, 4… गोल। खेल बहुत रोमांचक बन गया और स्पर्श उस खेल का नायक। मध्यांतर में थोड़ा ही समय बचा था और स्पर्श के साथी खिलाड़ी, गेंद अपने पास रखकर केवल समय नष्ट करने लगे जिससे दुसरे दल को गोल करने का मौका न मिले। इधर-उधर घूमते-घुमाते, गेंद जा पहुँची दुसरे दल के खिलाड़ी के पास। मध्यांतर को केवल 5 पल ही बचे थे और सभी ने ढ़ील बरती। तभी उस दूसरे दल के खिलाड़ी ने बहुत तेज़ी से गेंद को स्पर्श की ओर मारा। वह गोल के उल्टी दिशा में खड़ा था, फिर भी! वह गेंद सीधा उसके सीने पर लगी और उस धक्के से वह मैदान में गिर पड़ा। दोनों दल एक दूसरे पर रोष प्रकट करने लगे कि यह गलत था। मुड़कर देखा तो स्पर्श उठा नहीं। 1-2 मिनट निकल गए, कोई हलचल नहीं। सभी खिलाड़ी, प्रशिक्षक, अध्यापक मैदान की तरफ़ भागे। एक भीड़ इकट्ठा

होने लगी। नंदिनी ने अथर्व को एक सहेली के साथ बैठाया और भागकर स्पर्श के पास गई। वहाँ जाकर देखा तो वह बेहोश दिखा। रोगी-वाहन को ख़बर भेजी गई। प्रशिक्षक ने भीड़ को एक ओर हटने का आदेश दिया। नंदिनी ने कस कर उसका हाथ थामा और घबराई हुई उसे देखने लगी।

रोगी-वाहन आ गई, उसे अस्पताल ले गए। नंदिनी, 2-3 दोस्त और प्रशिक्षक साथ गए। जाने से पहले नंदिनी ने अपनी सहेली से कहकर अथर्व को घर भिजवाया और घरवालों को सन्देश कि वह अस्पताल से सीधे घर जाएगी। स्पर्श के घरवालों को विद्यालय कर्मचारियों ने इत्तेला कर दी। रोगी-वाहन अस्पताल पहुँची और स्पर्श को चिकित्सक ने एक नज़र देखते ही 'इंटेंसिव केयर यूनिट' में ले जाने का निर्देश दिया। इन सब में कुछ आधा घंटा बीता होगा। मैदान में गिरना, अस्पताल पहुँचना, फिर आई.सी.यू। सभी वहीं आई.सी.यू के बाहर रुक गए। नंदिनी मन में सोच रही थी कि जैसे ही स्पर्श को होश आएगा, वह सबसे पहले उसे बता देगी कि कितना प्यार करती है उससे। जो हुआ, उससे घबरा गई थी।

लगभग और 20-25 मिनटों में खन्ना साहब, वफ़ा जी के साथ, अस्पताल आ पहुँचे। आते ही प्रशिक्षक से, अध्यापकों से पूछताछ करने लगे। वफ़ा जी स्वयं चिकित्सक थी तो वह आई.सी.यू में जाना चाहती थी। परन्तु उपचारिका ने उन्हें रोक दिया। नंदिनी ने आई.सी.यू के गलियारे के अंत में देखा तो उसके माँ-पापा भी आ रहे थे। अथर्व ने घर जाकर बताया था सारा माजरा। नंदिनी मन में 'आई लव यू स्पर्श' का रटन लगाए स्पर्श के होश में आने का इंतज़ार कर रही थी। लगभग 40 मिनट बाद चिकित्सक आई.सी.यू से बाहर आए। स्पर्श के मम्मी, पापा, दोस्त सभी चिकित्सक की ओर बढ़े। उधर नंदिनी

आई.सी.यू के थोड़े से खुले हुए दरवाज़े से अंदर झाँक कर देखना चाहती थी, स्पर्श कैसा है!

और तभी सब सन्नाटा। चिकित्सक ने जहाँ एक तरफ़ बताया कि स्पर्श को वहीं मैदान में ही दिल का दौरा पड़ा था और अस्पताल लाने से पहले ही वह दम तोड़ चुका था, वहीं दूसरी तरफ़ नंदिनी के कानों में यह बात पड़ी, साथ नज़र पड़ी स्पर्श पर, जो अंदर बिस्तर पर शांत लेटा हुआ और उसका नीला पड़ा शरीर।

***

एक पल में सब बिखर गया। वफ़ा जी चिकित्सक थी लेकिन बेटे की ख़बर सुनकर एक माँ पर असर हुआ और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। खन्ना साहब का विलाप। नंदिनी जैसे यह मानने को तैयार ही नहीं। कैसे हो सकता था! रास्ते भर उसका हाथ थामे आई थी। अभी तो उसने बताया भी नहीं कितना प्यार करती थी। 'आई लव यू स्पर्श' बोलना बाकी था ना! वह असहज वहीं कुर्सी पर बैठ गई। कुछ बड़बड़ाने लगी अपने आप से। नंदिनी के माँ-पापा स्पर्श के परिवार को सहारा देने की कोशिश कर रहे थे। अचानक सुनंदा जी ने नंदिनी की ओर देखा तो सिहर उठी। उसके पास गई और गले से लगा लिया। उसने माँ को अपने आप से अलग करते हुए अजीब नज़रों से देखा जैसे उसे समझ में नहीं आ रहा कि वह क्या परिस्थिति थी। मन-ही-मन बड़बड़ा रही थी। थोड़ी देर बाद स्पर्श की मम्मी को होश आया और वह दुःख से बिलख उठी। वफ़ा जी को लगा जैसे दर्द से उनकी छाती फट जाएगी। एक माँ का आँचल सूना पड़ना, यह दर्द और इस एहसास को शब्दों में व्यक्त करना असफ़लता ही है।

अस्पताल के कर्मचारियों ने पुलिस को ख़बर कर दी थी। पुलिस ने आकर पूछताछ की। सभी शोक में डूबे जितना बता सके बताया। वह नंदिनी से कुछ नहीं बुलवा सके। उसे पूछा, “क्या हुआ था?” उत्तर में केवल हकलाती हुई दोहराती रही, "स्स..स्पर्श को हो..होश आ..आने वाला आ..है!" पुलिस को समझ आ गया था कि वह आहत थी। उस वक़्त उसका बयान दर्ज करके कुछ नहीं होता। बाकियों का बयान लेकर पुलिस निकल गयी। कुछ समय बाद स्पर्श के पार्थिव शरीर को बाहर लाकर परिवार को सौंपा गया। सब उसे थामे विलाप कर रहे थे। जहाँ गेंद लगी थी वह सारा हिस्सा काला पड़ा हुआ था। वफ़ा जी कभी बेटे पर हाथ फेरती तो कभी अपने आप को कोसती। जाने कितनी बार बेहोश हुई। फिर होश आता और विलाप करने लगती। चिकित्सक थी तो शायद इस परिस्थिति को ज़्यादा समझना चाहिए था, परन्तु माँ भी तो थी ना! जिस बच्चे को कोख़ में रखकर जन्म दिया, रोज़ जिसके बड़े होने के सपने बुने, आज वही गोद पर निर्जीव सर रखे पड़ा था।

“प्रेम का बंधन यह भी तो है! जननी जो धर्म, कर्म, किसी भी बंधन से ऊपर है।”

नंदिनी उसे बस देखती रही। कितने सवालों में घिरी। कुछ न बोली, एक शब्द भी नहीं। सबको लगा उसके जीवन में पहली बार ऐसा कुछ हुआ था। किसी को इतने करीब से जाते देखा था शायद इसलिए घबरा गई थी। उसे समय देना ही ठीक लगा। स्पर्श को रोगी-वाहन में रखकर घर ले जाने लगे। नंदिनी साथ चल पड़ी। वैसी ही बेसुध। वहाँ से स्पर्श को मिट्टी में मिला देने तक, सारी रस्में, सब में वह थी। वैसी ही, चुप! सुनंदा जी को समझ में आने लगा था कि यह चुप्पी सरल नहीं थी। एक भँवर था जिस में वह हर दिन फँसती

जा रही थी। सबने बहुत कोशिशें की उसे रुलाने की, जिससे उसका दर्द फूट पड़े, दिल में जो भी दबाये रखा था उसे निकलने का ज़रिया मिले, कुछ कहे, लेकिन कुछ नहीं। सारा दिन आसमान की ओर देखती, मन में कुछ बातें करती रहती। उस दिन मैदान में अफ़रा-तफ़री में कहीं उसकी एक पायल खुल कर गिर गई थी। नंदिनी ने दूसरी पायल पैर से उतारी ही नहीं और न कोई दूसरी जोड़ी पहनी। वही एक पायल पहने रही। कुछ ही दिनों में पढ़ाई छूट गयी, विद्यालय छूट गया। चिकित्सकों को दिखाया, कई तरह की दवाइयाँ चली, कोई नतीजा नहीं।

अथर्व भी दीदी से कोई बात नहीं कर पा रहा था। कभी उनके कमरे में जाता तो सीने से लगकर बैठा रहता, घंटों तक। कोई बात नहीं होती किन्तु अथर्व का कोमल मन समझता था दीदी के अंदर चल रहे तूफ़ान को। एक दिन अचानक सुनंदा जी को कमरे से वह डायरी मिली जिस में नंदिनी ने मन की बातें लिखी थी। स्पर्श के साथ बंधे एहसास को लिखा था। उन्हें जिस बात का संदेह था वह यकीन में बदल गया। उसका मन उस दर्द को झेल नहीं पाया था और वह बिखर गई थी। इस कोमल उम्र ने उसे जुड़ना सिखाया था लेकिन ऐसे बंधन छुड़ाना कौन सिखाता?

यह बात उसके माँ-पापा ने स्पर्श के माता-पिता के साथ साझा की। शायद उन्हें बताना ज़रूरी था। सभी बड़ों ने आपस में विचार-विमर्श किया, वफ़ा जी ने कुछ मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों की सलाह ली और जाँच करवाई गई। परिणाम से पता चला इस दर्द ने नंदिनी को 'एक्यूट सायकोसिस' की तरफ़ ढ़केल दिया था।

बीतते वर्षों के साथ वह आगे नहीं बढ़ सकी। वक़्त अपनी गति से बीतते हुए चुपचाप कई मरहम लगाता चला गया।

***

अथर्व अब बड़ा हो गया है लेकिन नंदिनी के कमरे में और जीवन में आज भी केवल स्पर्श है।

स्पर्श के जाने के बाद काफ़ी समय तक उस लड़के के ऊपर पुलिस की कार्यवाही चली जिसने उस दिन मैदान में गेंद मारी थी। खन्ना जी न्यायालय के चक्कर लगाने में ही रह गए। मन रोज़ थोड़ा-थोड़ा टूटा। बेटे के जाने का ग़म और साथ न्यायालय के चक्कर। जिसने खोया उसे साबित करना था कि ऐसा क्या खोया जिसके लिए इंसाफ़ चाहिए। बाहर से कोई इस परिस्थिति को आँकेगा तो कहेगा केवल एक दुर्घटना ही थी। क्या सच में यह एक दुर्घटना थी? अथवा अपरिपक़्व बुद्धि के रोष का परिणाम? जिस लड़के ने वह हरकत की, क्या उसकी सोच को किसी ने समझा? एक खेल में उसने बिना सोचे समझे ऐसा फ़ैसला लिया जिसने किसी की जान ले ली। ऐसी घटनाओं की ज़िम्मेदारी किसकी? खेल की भावना को समझाने की ज़िम्मेदारी किसकी? इंसाफ़ तो चाहिए परन्तु वास्तविक दोषी कौन?

जब वफ़ा जी के घरवालों को यह ख़बर मिली तो उन से भी रहा न गया। बीते सालों की दूरी ख़त्म करके वफ़ा जी के अम्मी-अब्बू उनसे मिलने पहुँचे। जब से स्पर्श का जन्म हुआ था, तभी से धीरे-धीरे वफ़ा जी के घरवालों का झुकाव उसकी ओर बढ़ने लगा था। यह स्वाभाविक भी था। इतने सालों में हर

पर्व-त्योहार पर वफ़ा जी के घरवाले उससे मिल लिया करते। आज जब इतनी बड़ी बात पता चली, तो उनकी छाती भी दर्द से फट रही थी।

अपने अम्मी-अब्बू को पहली बार अपने घर की चौखट पर देखकर, वफ़ा जी अपने आप को रोक न सकी। दौड़कर उनके गले से लगकर फूट-फूट कर रो पड़ी। अपनी बेटी की इस हालत को देखकर अम्मी भी वहीं ज़मीन पर बैठ कर बिलखने लगीं। वफ़ा जी उनसे माफ़ी माँगती रहीं। ख़ुद को कोसती रहीं कि अपने जन्मदाता को उन्होंने इतना कष्ट दिया था, शायद उसी का मूल्य अपने आँचल को सूना कर, चुका रहीं थी। अम्मी-अब्बू ने उन्हें संभालने की कोशिश की। सांत्वना दी कि जो जन्म देता है, वह अधिकारपूर्ण कभी नाराज़ हो भी जाए, परन्तु अपनी औलाद को कभी बद्दुआ नहीं देता।

***

वक़्त कब महीनों में बीत गया पता ही नहीं चला। खन्ना जी जितने मस्त-मौला इंसान थे अब उतने ही टूटे और चुप-चाप रहने लगे। दुकान पर भी सारा माहौल गंभीर रहता था। सभी स्पर्श से इतने जुड़े हुए थे कि बीतते समय के साथ भी मन उस हक़ीक़त को मानने के लिए तैयार नहीं था। खन्ना जी के लिए जब तक घर से फ़ोन नहीं आता कि खाने का वक़्त हो गया, उनका ध्यान यादों में कहीं खोया रहता। पिता गर्भ से जन्म नहीं देता लेकिन पिता बनना एक संतान को अपने हृदय में जन्म देने जैसा ही अनुभव है। शायद चीख़-चिल्लाकर बाहर से कुछ बोल न सके लेकिन अंदर उनके भी कोहराम उतना ही कोलाहलपूर्ण था। वफ़ा जी ने मन लगाने की नाकाम कोशिशें की पर वह भी भीतर से शून्यता की ओर बढ़ने लगी। कुछ दिनों बाद नौकरी से इस्तीफ़ा दे

दिया। अब ज़्यादा-तर घर पर रहती अन्यथा किसी भगवान या ख़ुदा के दर पर सवाल पूछने जाती थी। जवाब माँग रही थी जैसे, इस अनहोनी का।

वहाँ नंदिनी की हालत देखकर खन्ना जी का परिवार उससे जुड़ता चला गया। उनको नंदिनी में वह बेटी दिखने लगी जो उन्हीं के साथ किसी अपने को खोने के ग़म से बिखरी हुई थी। कई रोज़ वफ़ा जी उसके साथ वक़्त गुज़ारने जाती। कोशिश करती समझाने की फिर दोनों ही चुपचाप उस खाली आसमान की ओर ताकते। एक माँ अपने बच्चे को और एक टूटा दिल अपने हमसफ़र को ढूँढ़ने की कोशिश करता। दोनों के दर्द का रिश्ता, दूसरे कई रिश्तों से करीबी और मज़बूत बनता चला गया। खन्ना साहब नंदिनी को कभी-कभी दुकान पर ले जाते, यही सोच कर कि शायद उसके मासूम दिल पर मरहम होगी। वहाँ भी बिना एक शब्द कहे, शून्य दृष्टि से देखती रहती। वहाँ एक दीवार पर स्पर्श की माला चढ़ाई हुई तस्वीर थी, उस दीवार की ओर उसने कभी ग़लती से भी मुड़कर नहीं देखा। वह उस सत्य को किसी भी तरह सत्य मानने के लिए तैयार नहीं थी। इन्हीं सभी के बीच न्यायालय की तारीखें बढ़ती रहीं। दोषी कौन? यह तय नहीं हो सका। न्यायालय ने इस वाक़िए को एक हादसा करार देते हुए, खन्ना जी के परिवार को दिलासे की एक टोकरी थामा दी। इस परिवार को यह समझ में नहीं आया कि उन दिलासों से एक पिता का टूटा दिल जोड़ा जाए या एक माँ की उजड़ी हुई गोद भरी जाए। नंदिनी को तो जैसे किसी से कोई उम्मीद थी भी नहीं कभी। उसे था तो केवल इंतज़ार, इस मायाजाल के अंत का इंतज़ार। स्पर्श के लौटने का इंतज़ार। एक उम्मीद कि वह एक दिन उसके सामने आ खड़ा हो, दरवाज़े पर दस्तक दे और कहे, "नंदिनी, यह सब बुरा सपना था! चलो मेरे साथ चलो।"

वक़्त कहीं नहीं थमा। नंदिनी थमी रह गई। स्पर्श के घर वाले भी आते जाते रहे इतने सालों में उससे मिलने। सबने कोशिशें की कि वह ज़िंदगी में किसी तरह दोबारा आगे बढ़े लेकिन वह रिश्ता सब से कटा हुआ ही रहा। आज इतने सालों बाद भी उसकी उम्र बढ़ी है, उसका मन वहीं उस मैदान में अटका है, स्पर्श का हाथ थामे। उन्हीं लम्हों में जहाँ वह अपने प्रेम को शब्दों में पिरोना चाहती थी। एक पैर में पहनी पायल छोटी होती गई, परन्तु नंदिनी पर उसका प्रगाढ़ प्रभाव देखकर माँ-पापा ने उसी पायल में वक़्त के साथ लड़ियाँ पिरोयी।

***

आज इतने वर्षों बाद अथर्व की एक कहानी शुरू हुई और नंदिनी-स्पर्श की कहानी वहीं थमी है।

अध्याय ४
गिरह

आज भी अथर्व दीदी के साथ ही खाना खाता है। खाने की थाल, फिर एक नया दिन। कुछ वक़्त बीता ग़ुलाबी सूट के ख़यालों में लेकिन वह तो बस एक संयोग था, सो यादों में कहीं रह गया।

महाविद्यालय के छोटे-मोटे खर्चे, परियोजना में कुछ लागत, किताबें, इन सभी खर्चों के लिए शर्मा जी ने कभी मना नहीं किया लेकिन अथर्व स्वयं इन खर्चों को उठाना चाहता है। अपनी ज़िम्मेदारी, अपने कन्धों पर लेना चाहता है। परवरिश का हिस्सा कह सकते हैं। आत्मनिर्भरता एक गुण है, जिसकी नीव बचपन से ही रखी जाती है और रखनी भी चाहिए। स्वावलम्बी होने की इच्छा, जीवन में परिपक्वता लाता है। महाविद्यालय में वार्षिक महोत्सव का आयोजन, एक छोटी सी संस्था, 'तंत्र' करती है। अथर्व भी हर कार्यक्रम में, बढ़ चढ़ कर भाग लेता है। वहीं जान पहचान हुई है, तंत्र के अभियुक्तों से। उन्हें उसका जोश बेहद अच्छा लगता है। जब उसने उनसे जुड़ने की इच्छा प्रकट की तो बिना किसी विलम्ब के, उसे एक पद मिल गया। अब महाविद्यालय के बाद का समय अथवा छुट्टियों में, तंत्र के साथ कार्यक्रम आयोजन करता है। इन सबसे जो वेतन मिलता है, उनसे अपनी छोटी-छोटी ज़रूरतों को पूरा कर लेता है। पहला वेतन मिला, उससे दीदी के लिए पायल ख़रीद कर ले गया, साथ माँ-पापा के लिए कुछ कपड़े। इतने वर्षों में जाने कितनी बार नंदिनी को कभी पापा ने, कभी माँ ने तो कभी स्पर्श के घरवालों ने पायलें ख़रीद कर दी

हैं। उसने उन सभी तोहफ़ों को अपनी अलमारी में रखा है लेकिन आज भी एक ही पैर में वही पायल है। कभी टूटी, कभी छोटी हो गई, हर बार मरम्मत होकर उसके पैर में ही दिखी।

***

तंत्र के साथ तीसरा महीना | एक शनिवार शाम गायन उत्सव की तैयारी में जुटा हुआ अथर्व, काम किये जा रहा है। पूरे दिन की तैयारी के बाद सब कुछ लगभग योजनाबद्ध है। करीब 7 बजे से लोगों का आना शुरू हुआ। मंच, अणुभाष, रौशनी सब कुछ निर्धारित जगह पर रख दिया। अथर्व थक कर थोड़ी देर एक कोने में जाकर बैठा। महफ़िल लगभग 8 बजे शुरू हुई। गायकों ने अणुभाष थाम लिया, बाकियों ने संगीत उपकरण और माहौल जमने लगा। लोग ख़ुशी से झूम रहे हैं और एक तरफ़ सिगड़ी की महक। अथर्व को कोने में उस जलते हुए कोयले ने, मानो भट्टी से आवाज़ दी। कबाब की सुगंध उसे खींचने लगी। वह भीड़ में अपना रास्ता खोजने लगा। एक दिशा में थोड़ी कम भीड़ दिखी, तो उठकर तंदूर की ओर चल पड़ा। जैसे-तैसे नाचती हुई भीड़ में रास्ता बनाकर कबाब अपनी थाली में रखा। कबाब का एक टुकड़ा मुँह में रखते ही ऐसा लगा जैसे स्वाद का बवंडर। इसका लुत्फ़, आराम से बैठकर उठाना चाहिए। एक चबूतरा बना है, वहीं चल पड़ा। अब कबाब की बात कहें तो मांसाहारी कबाब ही समझ में आता है और शर्मा जी का परिवार है शुद्ध शाकाहारी। घर में अंडे का प्रवेश तक वर्जित है। सुनंदा जी को उनकी सहेलियों ने कई बार सुझाव भी दिया कि बालों में अंडा लगाया जाए तो बाल अच्छे रहते हैं, परन्तु सुनंदा जी ने कभी इस बात को नहीं मानी। अथर्व भी शाकाहारी ही है किन्तु केवल घर पर। ख़ैर जिस चबूतरे पर बैठने गया, उसपर धूल है

लेकिन कबाब में स्वाद ज़्यादा है और बड़ी तेज़ भूख लगी है। धूल को अनदेखा कर बैठ गया और कबाब के मज़े। तभी एक हाँफती हुई आवाज़ आयी। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई नाचकर थक गया है। अथर्व ने नज़रें उठाकर भी नहीं देखा, वह अपने खाने में इतना मशरूफ़ है। तभी एक अनजानी आवाज़ सुनाई दी, "अरे तुम वही हो ना जो उस दिन बीच सड़क मेरी किताब ले जा रहे थे?" आवाज़ कानों में पड़ते ही अथर्व एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। नेत्रकमल उठाया तो हाथ में पकड़ा कबाब, थाली में लुढ़क गया। खुले बाल, माथे पर पसीने की कुछ बूँदें, वही बड़ी-बड़ी आँखें और मासूम चेहरा। अरे! यह वही लड़की है। बुद्धि भी थोड़ा धीरे ही उत्तर दे रही है और अस्मंजस से घिरे हुए, अथर्व ने हिचकिचाते हुए "हाय!" कहा। थोड़ा अस्वाभाविक लगा, समझ में नहीं आया जिसे पहली बार देखकर होश उड़ गए थे, आज बिलकुल बगल में बैठी घूर रही है। उसकी आँखें मानो झाँकने की कोशिश कर रही हैं कि इस लड़के का मानसिक संतुलन ठीक भी है!

अथर्व ने सकपकाते हुए ज़रा नज़रें चुराई। क़बाब की थाली बगल में रखी और झट से उठ खड़ा हुआ। फिर कमीज़ पर हाथ पोंछता, धीमी आवाज़ में बोला, "वो उस दिन किताब... नहीं... वो तो ऐसे ही मैंने देखा नहीं था... लेकिन मुझे चाहिए नहीं आपकी किताब!" पियू ने आटपटे ढंग से उसे देखा। उसे भी असामान्य लगा क्योंकि उसने भी बिना अधिक कुछ सोचे अथर्व को कह दिया था कि उसकी किताब ले जाना चाहता था, शायद सच में ऐसा नहीं सोचा हो उसने। वह भी हिचक कर बोली, "अच्छा ठीक है, असल में वो किताब मेरी सबसे पसंदीदा कहानी है। बहुत मुश्किल से उस दिन मिली थी किताब बाज़ार में। तो मुझे लगा शायद तुम..." दोनों आमने-सामने असहज

परिस्थिति में कुछ पल ख़ामोश खड़े रहे। फिर एक दूसरे की ओर देख कर ज़ोर से हँस पड़े। हिंबंजक पल था।

पियू ने हाथ आगे बढ़ाते हुए परिचय दिया। "संयाल - पियू संयाल!" यह सुनकर अथर्व ने व्यंग्य किया, "007 - बॉन्ड! जेम्स बॉन्ड!" फिर से दोनों हँस पड़े। अथर्व ने अपना परिचय दिया। कुछ हल्की-फुल्की बातों का दौर शुरू हुआ। थोड़ी देर में पियू के कुछ दोस्त आए और दोनों को घेर कर खड़े हो गए। सभी थके हुए हैं लेकिन खामोश। उन दोनों को कौतुहलता भरी दृष्टि से देख रहे हैं। पियू-अथर्व को समझ में नहीं आया ऐसा क्यों! तभी पियू की एक सहेली ने इशारा करते हुए कहा, "पूरा समय हाथ पकड़े रहना है या चलें खाना खाने?" एकाएक दोनों को एहसास हुआ कि परिचय करते समय हाथ मिलाया था, वह हाथ वैसे ही साथ बँधा रह गया। दोनों बातों में इतने खो गए। सबकी ज़ोरों की हँसी के बीच दोनों ने आपस में अपना फ़ोन नंबरों का आदान-प्रदान किया और पियू दोस्तों के साथ चली गई। अथर्व भी ख़ुश! जल्दी-जल्दी कबाब खाए और समारोह की निगरानी पर वापसी।

यह थी एक प्यारी सी दोस्ती की शुरुआत। पारंपरिक फ़ोन, स्थलीय दूरभाष से बढ़कर ज़माना धीरे-धीरे मोबाइल फ़ोन की दिशा में कदम बढ़ाने लगा है। अथर्व ने भी अपने वेतन में से कुछ पैसे जोड़कर, एक छोटा सा मोबाइल फ़ोन ख़रीद लिया। उधर पियू और उसके कुछ दोस्तों के पास भी मोबाइल फ़ोन है। अब दोस्तों के बीच में बातें होने लगी। हर बार स्थलीय दूरभाष की घंटी बजना और पूरे घर का संदेह कि किससे बातें हो रही हैं, वह अवरोधक अब नहीं है। पियू और अथर्व के कुछ दोस्तों की आपस में भी

दोस्ती हो गई। अब यह पूरा संगठन साथ में मिलते, कुछ समय साथ बिताते हैं।

***

वहीं किताब बाज़ार के थोड़ा आगे, नुक्कड़ पर चाय की एक टपरी है। वहाँ रियाज़ भाई कुल्लहड़ में 'स्पेशल मसाला चाय' के साथ 'वेजिटेबल चाउमीन' भी बेचते हैं। वर्ल्ड-फेमस वाला स्वाद। 10 रुपए प्लेट और 5 रुपए की चाय। पियू और अथर्व अपने-अपने दोस्तों के साथ वहीं जाते थे हमेशा से। अब जब से मुलाकात और दोस्ती हुई है, सब साथ ही जाते हैं। रियाज़ भाई अब खाने का ऑर्डर भी नहीं लेते। जैसे ही सारे दोस्त पहुँचे टपरी पर,वह स्वयं ही सबके लिए चाय और चाउमीन तैयार करने लगते। कभी-कभी ऐसा भी होता कि किसी दोस्त के पास पैसे नहीं होते। बाकी सभी फिर अपने-अपने पैसों को जोड़ने लगते कि सबको उनके हिस्से की चाउमीन और चाय मिल जाए। एक-दो बार रियाज़ भाई ने कुछ कहा नहीं पर अब जब कभी वह ऐसा देखते हैं तो एक-दो प्लेट मुफ़्त में ही खिला देते हैं। उनका भी इन सभी बच्चों के साथ बड़ा मन लगता है। धीरे-धीरे रियाज़ भाई से बातचीत भी बढ़ने लगी। उन्होंने बताया कैसे वह राजस्थान के एक छोटे से गाँव से, इतने बड़े दिल्ली शहर में अकेले आए। वह ग्रेजुएशन करना चाहते थे, परन्तु परिवार की आर्थिक समस्याएँ, तीन बहनों की शादी, उन्हें पढ़ाई छोड़कर काम शुरू करना पड़ा। पहले सिर्फ़ चाय बेचते थे, फिर कुछ पूँजी जोड़कर अब चाउमीन भी बेचने लगे हैं। पैसे जोड़ रहे हैं ताकि बहनों की अच्छे घरों में शादी हो जाए। इतनी कठिनाइयाँ हैं लेकिन कभी रियाज़ भाई के चेहरे पर किसी ने शिकंज़ नहीं देखी। ऊपर से मुफ़्त में खिला भी देते हैं कई बार। अथर्व को रियाज़ ने

बहुत प्रभावित किया है। कुछ करने का जज़बा, परिस्थितियों से हार न मानने का यह दृढ़ निश्चय, सीखने वाली बातें हैं। रियाज़ इस मंडली के सभी दोस्तों का नाम पता सब जानते हैं। गहरा एक रिश्ता बन गया है सबसे।

कुछ समय तक सब नियमित चलता रहा और कुछ महीनों में सबकी परीक्षाएँ शुरू हुई। फिर रोज़मर्रा के काम, मिलने का सिलसिला कम होता गया। सभी दोस्त अपनी-अपनी ज़िंदगी में व्यस्त हो गए। उधर पियू अपनी पढ़ाई और जीवन में व्यस्त हो गयी। दोस्त कुछ दूर हुए लेकिन वह दोस्ती साथ रह गई। फिर सामाजिक माध्यमों से ही सबको एक दूसरे की जानकारी मिलती रही। इन सभी दोस्तों में अथर्व और पियू की दोस्ती सबसे गहरी है। दोनों झट से एक दूसरे की मनोस्थिति को भाँप लेते हैं। महाविद्यालय जीवन समाप्त होने वाला है। बहुत सारी संस्थाएँ नियुक्तिकरण के लिए, महाविद्यालय में आने लगी हैं । अथर्व की एक अच्छी संस्था में नियुक्ति हुई। पियू भी नियुक्ति लेकर आगे बढ़ी। इस तरह दो दोस्तों की कहानी अलग-अलग चल पड़ी।

***

अध्याय ५
ज़िन्दगी - धागों से बुनी कहानी

पुणे | अक्टूबर 2008 | अथर्व को पुणे में एक बहुराष्ट्रीय संस्था में नौकरी मिली। नियुक्ति के लिए पुणे जाना हुआ। घर से कुछ सामान बटोर कर, आँखों में आशाओं की किरणें संजोए, पुरानी दिल्ली की बातों को पीछे छोड़, ट्रेन पर सवार। पुणे पहुँचकर सब कुछ नया लगा। लगने वाली बात भी है। कहाँ पुरानी दिल्ली की वो गलियाँ और कहाँ चमचमाता राजमार्ग और मराठी भाषा की लड़ियाँ। बचपन के कुछ दोस्त पुणे में रहते हैं। उन्हीं से संपर्क किया। सभी बेहद प्रसन्न हैं अथर्व के आने से। कुछ दोस्त एक घर किराए पर लेकर रहते हैं। उन्होंने अथर्व को अपने साथ रहने का प्रस्ताव दिया। अथर्व के लिए इससे ख़ुशी की बात हो ही नहीं सकती है। नई जगह में पुराने रिश्ते। यह संयोजन उत्तम है किसी भी नई जगह को अपनाने के लिए। शनिवार शाम पहुँचा और सोमवार को नियुक्ति के लिए कार्यालय पहुँचना है। रविवार को दोस्तों के साथ जाकर देख आया कार्यालय जाने का रास्ता। आस-पास भी कुछ जगह देखी।

माँ ने शाम को जानने के लिए फ़ोन किया कि पुणे कैसा लग रहा है। सब कुछ ठीक है कि नहीं। अथर्व की आवाज़ सुनकर माँ संतुष्ट हो गई। उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं पूछा क्योंकि बेटे की आवाज़ के उल्लास और ख़ुशी को वह झट से भाँप गई। अथर्व ने माँ को फिर भी सांत्वना दी कि वह बिलकुल ठीक है। घर में खाना बनाने के लिए एक आजी आती हैं जो बहुत प्रेम से सबके

लिए खाना बनाती हैं। माँ के हाथों का स्वाद नहीं है पर खाना स्वादिष्ट है। माँ, अथर्व की ख़ुशी से ख़ुश हुई और अगले दिन के लिए प्रोत्साहन दिया। पहला दिन है नौकरी का।

रात को सारे दस्तावेज़ तैयार करके जल्दी सोने चला गया। सोमवार सुबह, नया दिन, नया उत्साह, और एक नए दौर की शुरुआत। जल्दी उठकर तैयार हुआ और निकल पड़ा कार्यालय के लिए। कार्यालय में पहला कदम, दरवाजे से अंदर गया और इतनी बड़ी इमारत। बाहर से जितनी विशाल, अंदर से उतनी भव्य। दिल्ली में ऊँची, बड़ी इमारतें कई बार देखी हैं, लेकिन अंदर से उसका अनुभव कुछ और ही लगा आज। एक नया माहौल। थोड़ी झिझक है अभी। इस नए रंग को समझने की कोशिश कर रहा है।

आराम करते हुए ज़िंदगी बिताने की सोच, कहीं खो गयी। अब आँखों में एक नई चमक और फ़ुर्ती है। दस्तावेज़ का काम पूरा होने के बाद, एक जगह मिली बैठने की जो उसे नियुक्त की गयी। वहीं आसपास बैठे और लोगों से थोड़ी बातचीत हुई। सबकी नियुक्ति साथ में हुई है। सभी साथ में दोपहर का भोजन खाने गए। वापस अपनी जगह पर बैठे, कुछ समय बिताया और इस तरह पहला दिन ख़त्म हुआ। ऐसे ही धीरे-धीरे दिन महीने बने और महीने साल। कितने दोस्त मिले, अपने आप को और अच्छे से जाना। घर पर जहाँ एक अनुशासित जीवन था, वहीं अब दोस्तों के साथ और कार्यालय में जीने का ढंग थोड़ा बदलने लगा है।

ज़िंदगी अच्छी चल रही है। अच्छे दिन हैं, खुशियों भरे, थकान भरे, दोस्तों से घिरे। देखते-देखते नौकरी का पहला साल पूरा हो गया। अथर्व के काम से कार्यालय में सभी प्रभावित हैं। बहुत ध्यान से काम करता है। कोशिश

करता है कोई भूल ना हो किसी काम में। रोज़ शाम घड़ी में 5 बजते हैं और माँ का फ़ोन आता है। अब तो ‘स्मार्ट फ़ोन’ का ज़माना भी आ गया है। ‘वीडियो कॉल्स’ पर भी बात हो जाती है । माँ मज़ाक में पूछती, "कोई आदत ऐसी तो नहीं डाल ली जिसके बारे में मुझे बताने में शर्म आएगी?" अथर्व भी मज़ाक में कहता, "आदत है माँ! डाल भी ली तो तुम बदल देना।" वीडियो कॉल के समय, कई बार माँ फ़ोन नंदिनी के सामने ले जाती। वह अथर्व की ओर देखकर एक फीकी मुस्कान देती। अथर्व पूछता है कि कैसी हो, क्या खाया या फिर आज पूरे दिन क्या किया, उत्तर में केवल सिर हिला कर जवाब देती। एक बच्चा जीवन में तरक्की कर रहा है, आगे बढ़ रहा है और एक बेटी है जो जाने कहाँ लापता है। सामने है, फिर भी ग़ुम है। ऐसे माता-पिता की परिस्थिति समझना सामान्य भावनाओं से परे है। बीतते समय के साथ, नंदिनी में जैसे सहनशक्ति बढ़ती ही जा रही है। कभी-कभी सोच कर हैरानी होती है कि दर्द, बुख़ार, तक़लीफ़ कैसे सब सह लेती है! दर्द या चोट से आँसू भी निकलते हैं परन्तु आवाज़, कराहना सुनाई नहीं देते। इतने वर्षों में, माँ-पापा ने हालातों के साथ समझौता कर लिया है। नंदिनी अब दवाइयाँ बिलकुल नहीं खाती। बहुत कोशिशें हुई उसे समझाने की, ज़बरदस्ती भी की जिससे दवाई खा ले लेकिन वह इस एक ज़िद्द के साथ रही कि कोई दवाई नहीं खाना चाहती। अंत में सभी ने थक हार कर सब कुछ समय पर छोड़ दिया।

***

पुणे | दिसंबर 2013 | नौकरी के 5 साल, ज़िंदगी की रफ़्तार थोड़ी बढ़ गई है। अथर्व को हमेशा से घूमने जाना बहुत पसंद रहा है। दोस्तों के साथ सप्ताहांत में घूमने चला जाता है। पुणे के आसपास घूमने की बेहद सुंदर और

आकर्षक जगहें हैं। कभी पहाड़ों में ठंडी हवाओं को महसूस करना, कभी उगते सूरज को समुंदर किनारे बैठकर देखना। कार्यालय में काम अच्छा है। इतने सालों में प्रगति हुई है। घर की तरफ़ वित्तीय कोई ज़िम्मेदारी भी नहीं है। ज़िंदगी में जैसे सारी चाह पूरी होती नज़र आ रही है। पहले जिस घर में रहते थे वह छोड़ कर नया घर लिया है किराए पर, उन्ही दोस्तों के साथ। यहाँ की सुख-सुविधाएँ बहुत अच्छी हैं। नीचे व्यायामशाला है, स्विमिंग पूल है। जगह बदल दी लेकिन दोस्त नहीं।

"रिश्ता जो बार-बार बदल जाए वह रिश्ता नहीं, सौदा है।"

कुछ दिनों से अथर्व का मन कार्यालय में काम से ज़्यादा कॉफ़ी अवकाश में लग रहा है। कॉफ़ी अवकाश शायद बहाना है, किसी को चोरी से देखने का मौका है। न चाहते हुए भी उसका ध्यान किसी की ओर खिंच रहा है। निगाहें कभी आमने-सामने नहीं आई। जब भी वह नज़रें, अथर्व पर पड़ती तभी वह कहीं और देखने लगता। जैसे कुछ पता ही नहीं उसे। हर रोज़ उसी जगह पर दोबारा उन्हीं आँखों से टकराता। यह विचलित करने वाली नज़रें हैं, बिंदास से अंदाज़ वाली एक लड़की की। अपने दोस्तों के साथ आती है, कुछ झल्ली-सी बातों पर कभी हँसती है फिर कभी सूजे हुए मुँह के साथ बताती है कि कितना काम है। अथर्व का दिल उसे बार-बार देखने को करता है। कार्यालय में अथर्व के दो बेहद क़रीबी दोस्त हैं, **मणि और रमन**। उनके सामने इस बात को स्वीकारना पड़ा कि कोई है जो ध्यान खींचे हुए है। अब अकेले आकर बैठ नहीं सकता, इन्हीं दोस्तों की मदद चाहिए। थोड़ी ख़बर लगाई तो पता चला उन्हीं के कार्यालय के चौथे माले पर काम करती है और नाम है '**अस्मिता मिश्रा**'।

वैसे अथर्व को छठे माले पर होना चाहिए लेकिन काम की फ़ुरसत में अकसर चौथे माले पर ही घूमता है, साथ में मणि और रमन। कभी-कभी दोनों मज़ाक में बोलते हैं, "दोस्त! प्यार तेरा, देखना तुझे है, हम पूँछ बनकर क्यों घूम रहे हैं? ऐसे तो हम कुँवारे रह जाएँगे।" अथर्व भी भावुक होने का भान करता, "भाई नहीं है? दोस्त का साथ नहीं दे सकते? मेरा घर बसेगा तभी तुम्हारे लिए भी अच्छी लड़की ढूँढेंगे।" भाभी, घर बसना, सब ख़याली पुलाव पक चुके थे पर कभी हिम्मत नहीं हुई अस्मिता के सामने खड़े होकर बात करने की। जब कभी अपनी तरफ़ आते दिखती है, तीनों इधर-उधर से निकल जाते हैं। अपने मन में उन्होंने सोचा होगा कि किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या कर रहे हैं परन्तु यह बात अस्मिता की दृष्टि से ज़्यादा दिन कैसे छुपती? ऐसी उम्र में पीछा करती हुई निग़ाहें कभी-कभी अच्छी लगती हैं। धीरे-धीरे अस्मिता ने दूर से देखकर मुस्कुराना शुरू किया। जिस दिन पहली बार देखकर मुस्कुराई थी, रमन और मणि ऐसे खुश हुए थे कि एक बार अथर्व ने रुक कर उनको देखा कि ये दोनों इतने खुश! भाभी मुस्कुराई इसी बात पर चाय समोसा पार्टी हुई तीनों की।

इसी तरह एक दिन, तीनों प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अस्मिता कब आएगी अपने दोस्तों के साथ। अस्मिता इस बार पीछे से आई और अथर्व के पास जाकर खड़ी हो गई। वह देख पाता, उससे पहले रमन और मणि की नज़र पड़ गई। दोनों अचानक उठ खड़े हुए और निकलने लगे। अथर्व ने फ़ोन से बाहर नज़रें डाली ही थी कि अस्मिता ने कहा, "हाय!" फिर रमन और मणि की ओर देखकर बोली, "आप दोनों कहाँ चले? श्री राम के साथ इतने दिनों से चक्कर लगा रहे हैं, तो आज भी रुक ही जाइए।" अथर्व भी सकपकाते हुए खड़ा हुआ।

तीनों वहीं बुत की तरह खड़े हैं जैसे साँप सूँघ गया है। सोच रहे हैं आज तो पिटे! अस्मिता अपने तीन-चार दोस्तों के साथ आई है। अथर्व से मुस्कुराकर बोली, "अब सिर्फ़ आगे पीछे घूमना ही है या बात भी करेंगे? जब बात करने के लिए आती हूँ इधर-उधर भाग जाते हैं। अपने साथ लक्ष्मण और हनुमान जी को भी घुमा रहे हैं। इससे अच्छा है, बात ही कर लीजिये।v" हाथ आगे बढ़ते हुए बोली, "हाय! मेरा नाम अस्मिता है। आपको तो पता ही होगा। परन्तु श्री राम, अपना और अपने सहयोगियों का परिचय दीजिए।"

इस बात को सुनकर सभी ठहाका लगा कर हँस पड़े। अथर्व थोड़ा सामान्य हुआ। फिर एक दूसरे से परिचय हुआ। अब दोनों, कार्य के मध्यान्तरों में मिलते हैं। रमन और मणि कभी-कभी छेड़ते हुए कहते हैं, "हाँ भाई! श्री राम तो स्वयंवर की तैयारी में हैं। हनुमान और लक्ष्मण पर ध्यान ही नहीं देते।"

अथर्व और अस्मिता के रिश्ते की शुरुआत दोस्ती से ही हुई। यही दोस्ती दोनों को नज़दीक ले आई। इज़हार हुआ मोहब्बत का! मन पँख लगाए आसमान में उड़ने लगा। दोस्तों के साथ यदि शाम गुज़रती है तो रातों को अस्मिता के साथ लम्बी बातें। कार्यालय में साथ खाना खाने जाना, कभी छुट्टियों में साथ घूमने जाना। दोनों एक दूसरे के और करीब आते गए।

कभी दोनों के बीच कहासुनी हो जाती तो अथर्व मुँह फुलकर बैठ जाता है। अस्मिता अपनी प्यारी मुस्कान के साथ उसे मनाने का खूब हुनर रखती है। कभी-कभी चिढ़ भी जाती है कि क्यों हर बार वही मनाए, लेकिन फिर मोहब्बत का ज़ोर है, दूर रहने नहीं देता। अथर्व की ज़िंदगी की गाड़ी पटरी पर सरपट चल पड़ी है। साथ चलने को एक पैया भी मिल गया। जीवन संतुलित

लगने लगा है। घर का खाना ना मिले, दोस्तों का साथ और अस्मिता की बाहें उसे ख़ुश रखती हैं।

***

अस्मिता कानपुर में पली बढ़ी थी। उच्च शिक्षा के लिए पुणे आई थी। वहीं से नौकरी भी मिली, तो घर केवल छुट्टियों में जाती है। अस्मिता की एक बड़ी बहन है, **आरवी**, जो पुणे में ही दूसरी संस्था में कार्यव्रत है। जगह एक दूसरे से दूर है, इसी वजह से दोनों बहनें अलग रहती हैं। हफ़्ते के अंत में एक दूसरे के साथ समय बिताती हैं।

जब से अथर्व मिला है, अस्मिता अब दोनों दिन दीदी के साथ नहीं बिताती। कुछ-न-कुछ बहाने से घर लौट आती है ताकि अथर्व से मिल सके। यह लुका-छुपी आरवी के सामने बहुत दिनों तक नहीं चली। एक दिन अस्मिता से सीधे-सीधे बोल दिया, "कल किसी बहाने से वापस जाने की ज़रूरत नहीं। जिससे मिलने जाती है, उसे यहाँ बुला ले। मुझे भी मिलना है। देखें लड़का जिम्मेदार है कि नहीं, वरना बता देंगे पापा को अभी फ़ोन करके कि आपकी बेटी का मन बड़ा उड़ने लगा है।" अस्मिता की हवाइयाँ उड़ गईं कुछ पलों के लिए कि आरवी को कैसे पता चला। दोनों बहनों में घनिष्ठता बचपन से ही बहनों से ज़्यादा सहेलियों जैसी रही है। अस्मिता ने झट से अथर्व को फ़ोन किया और आरवी के घर का पता देते हुए बोली, "आरवी को मिलना है तुमसे, कल यही आ जाओ, साथ ही कहीं बाहर चलेंगे घूमने।"

अथर्व अगले दिन अच्छे से तैयार हुआ। एक ख़ुशी है अथवा कहें उत्साह, किसी ऐसे इंसान से मिलने की जो उससे से जुड़ा है जिसे आप जुड़े

हैं। आप जिन से दिल के माध्यम से जुड़ते हैं, कई बार उनके जीवन के हर एक हिस्से को जानने की एक चाह होती है। एक दृष्टिकोण यह भी है कि आपको अच्छा लगता है जब आपके रिश्ते को एक मान्यता मिलती है, उन लोगों से जो ऐसे लोगों के जीवन की किसी कड़ी से बँधे हुए हैं। शब्द शायद इन भावनाओं को सटीकता से व्यक्त न कर सकें, परन्तु कहीं-न-कहीं इस भाव का अनुभव सभी को जीवन में होता है।

बस, फिर अथर्व भी उसी ख़ुशी के साथ तैयार होकर चल पड़ा, अस्मिता के बताए हुए पते पर। वहाँ अस्मिता ने आरवी को अथर्व के बारे में बहुत कुछ बताया। क्या करता है, किस तरह का स्वभाव है, उसका पसंदीदा रंग, खाना, चलचित्र, और भी बहुत कुछ। दोनों बहनें बचपन से ही एक दूसरे के बहुत करीब हैं। एक दूसरे को समझना और वक़्त पड़ने पर एक दूसरे को साए की तरह थामे रखना। अथर्व, आरवी के घर के बाहर पहुँचा और अस्मिता को फ़ोन लगाया। अस्मिता और आरवी तैयार थे। घर से बाहर निकलकर अस्मिता ने आरवी और अथर्व का परिचय करवाया। आज बाहर जा रहे हैं भोजन करने, आरवी ने पहले से ही अपार्टमेंट के सुरक्षा कर्मी से कहकर ऑटो बुलवा रखी थी। ऑटो में बैठते समय अस्मिता ने अथर्व को धीरे से "आई लव यू" कहा और मुस्कुराकर ऑटो में बैठ गई। आरवी का ध्यान नहीं गया। अथर्व को अचानक क्या शरारत सूझी, ऑटो में बैठते ही आरवी से कहा, “देख लीजिए आरवी जी, आपकी बहन मुझे चुपके से ‘आई लव यू’ बोलती है। कहीं फिर मुझे भी प्यार हो गया तो इलज़ाम मत लगाइएगा कि पहले से अगाह नहीं किया!” अस्मिता अवाक रह गई लेकिन आरवी झट से बोल पड़ी, "अच्छा! आपको प्यार नहीं हुआ अब तक? तो आज का डिनर कैंसल। चलें घर

वापस?" अथर्व ने तपाक से उत्तर देते हुए कहा, "अरे, अरे, अरे! खाना नहीं छोड़ सकते, चलो प्यार ही कर लेते हैं। अस्मिता, आई लव यू टू!"

तीनों ठहाका लगाकर हँस पड़े। शाम अच्छी गुज़री। तीनों लगभग समान उम्र के हैं, इसीलिए काफ़ी बातें समान हैं। आपस में खूब जमी। घर लौटते समय, अथर्व ने पहले दोनों को घर छोड़ा, फिर अपने घर की ओर निकलने लगा। तभी आरवी ने अस्मिता की ओर देखकर धीरे से कहा, "हम जा रहे हैं अंदर, पापा को फ़ोन लगाने की दुल्हा ढूँढ़ लिए हैं। अब ब्याह करवा दो जल्दी छोटी का। तुम दोनों तब तक ब्याह की बातों पर चर्चा कर लो छोटी सी, और हाँ बहुत देर मत करना।" बोलकर अथर्व से अलविदा लिया और घर की ओर बढ़ गई। अथर्व और अस्मिता थोड़ा शरमाए। अथर्व ने अस्मिता को गले लगाया और कानो में कहा, "अपना ख़याल रखना। कल सुबह ऑफ़िस में मिलेंगे।" अस्मिता ने नज़रें भर कर उसे देख अलविदा कहा। ऑटो में बैठकर, अथर्व बोला, "साली साहिबा को बोलना, जीजा जी कानपुर जल्दी आएँगे अपनी सीता के स्वयंवर को जीतने।"

इस तरह अस्मिता और अथर्व की छोटी-सी प्यार भरी कहानी चल पड़ी। एक दूसरे को और जानने लगे। आरवी और अथर्व की भी दोस्ती हो गई।

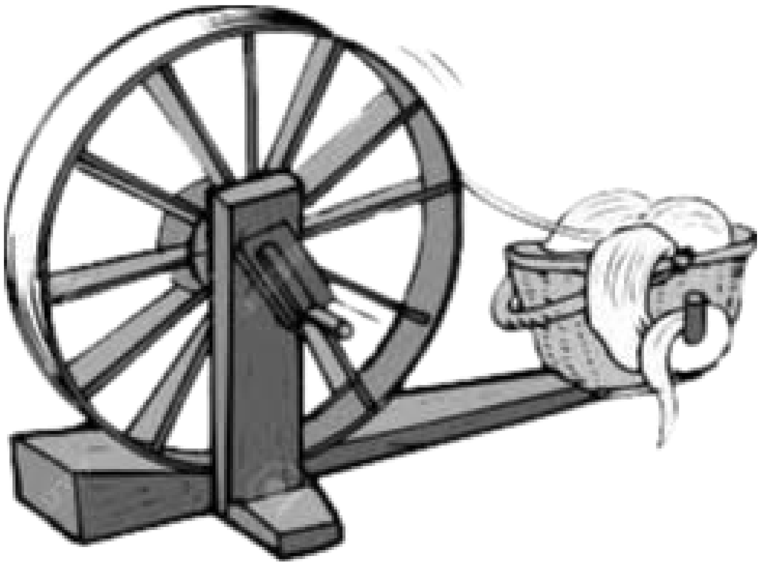

अध्याय ६
सूत्रों का पहिया

दिसंबर 2015 | **पुणे** | अथर्व और अस्मिता की कहानी समय के साथ पँख लगाए उड़ रही है। अब लगने लगा है कि कोई है, जो उसे उस जैसा चाहता है। कोई बदलाव नहीं चाहता। दुनियादारी से ऊपर है यह रिश्ता जो एक दूसरे का हाथ थामे, किसी भी परिस्थिति को पार कर जाएगा। अथर्व कहता भी है, "चलो अब शादी कर ही लेते हैं, कब तक ऐसे दूर रहेंगे?" अस्मिता ही मना करती है कि "नहीं! अभी कुछ वक़्त और बिताते हैं करियर बनाते हैं। जब पैरों तले ज़मीन थोड़ी और पक्की होगी तब करेंगे धूमधाम से शादी। मुझे तो बहुत आलीशान शादी करनी है। सोने के कलीरे पहनूँगी। उसके लिए पैसे चाहिए, बस वही जोड़ रही हूँ। और मैं कहाँ जा रही हूँ, यहीं हूँ, तुम्हारे साथ…"

वक़्त का पहिया ऐसे ही बढ़ रहा है।

***

करीब 15 दिसंबर की बात है, लगभग दिन के 2:00-2:30 बजे, अथर्व को एक कॉल आई। माँ ने घबरा कर फ़ोन किया है। अथर्व ने फ़ोन पर बात की और बेसुध बैठ गया। यह साल बहुत कठिनाइयाँ लाने वाला है। दिल लगना, दोस्ती, सब ठीक है लेकिन एक बड़ी सच्चाई से रुबरु होना है। ज़िंदगी ता-उम्र ज़िंदा कहाँ रहती है! कालचक्र उम्र के पहिए को तोड़ ही देता है। अथर्व के

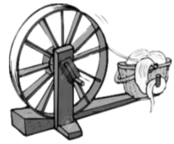

पापा को 'लंग कैंसर' है, स्तर चार। पता ही नहीं चला कब हुआ और कब इतना फैल गया।

कहाँ ज़िंदगी की धूप में खुशियों की सुनहरी किरणें और कहाँ अचानक सब थम गया। ख़ामोश हो गया। पापा की चिकित्सा शुरू हुई, लेकिन सबका मन धीरे-धीरे डूब रहा है। सुनंदा जी दिन भर शर्मा जी की सेवा में लगी रहती हैं। कर्क रोग की चिकित्सा महंगी ही नहीं, अपितु कष्टकारी भी है। शर्मा जी की हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ रही है। बालों का झड़ना बेहद सामान्य बात है, शरीर टूटने लगा है और साथ ही मन भी। शर्मा जी का खाना-पीना, दवाइयाँ, उनकी देखभाल, उनके साथ किताब पढ़ते और गाने सुनते कुछ वक़्त बिताना - सुनंदा जी जैसे सूइयों के साथ कदम मिलाये चल रही हैं। जब शर्मा जी की आँख लग जाती तो घर के बाकी कामों में व्यस्त हो जाती। शायद अपने भीतर उमड़ रहे दर्द के तूफ़ान को उभरने से रोकने का जतन कर रही हैं। इतनी मसरूफ़ रहती हैं की समय नहीं मिलता दर्द को छलकने का। लेकिन देर रात जब सोने जाती तो नेत्रों की खारी धार से सारा तकिया भीगने लगता। इतने वर्षों में समय के साथ एक स्त्री ने कई रूप धारण किये - वो माँ हैं, सहेली हैं, रिश्तेदारों में किसी की मामी, चाची और जाने कितने ही सम्बन्ध परन्तु एक प्रमुख रूप है अर्धांगिनी का भी। नज़रों के सामने शर्मा जी को कष्ट में देखकर कब तक अपने आप को संभाल पाती। मज़बूती से सबका मनोबल बनाये रखने की कोशिश करती है परन्तु हर रात्रि अपने दर्द से बिखर जाती, आँसुओं के माध्यम से वो दर्द फूटने लगता। अगली सुबह फिर सूइयों से गति मिलाये सब सँभालने की कोशिश करती हैं। शर्मा जी ज़्यादा बातें नहीं करते हैं परन्तु सुनंदा जी के मन को भलीभाँति समझते हैं। बीच रात कई बार सुनंदा जी की सिसकियों से उनकी

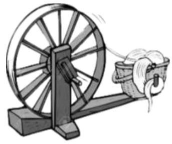

नींद टूट जाती। सुनंदा जी का हाथ थामे उन्हें दिलासा देने की कोशिश करते। मन के किसी कोने में वह भी समझ रहे हैं की उनका सफ़र अब अंत तक पहुँचने वाला है। सुनंदा जी का हाथ यूँ बीच राह छोड़ना नहीं चाहते लेकिन विधि का विधान कोई कैसे पलट सकता है।

नंदिनी मूक खड़ी हालातों को बदलते देख रही है। असहाय! पापा के आसपास ही दिन गुज़ारती है। जब पापा सोते हैं तब दरवाज़े के पीछे खड़ी एकटक उनको देखती है। सुनंदा जी का मन एक ओर नंदिनी को देखकर दुःखी होता है और दूसरी ओर शर्मा जी की हालत पर टूटने लगती हैं। खन्ना जी का परिवार इस परिवार के साथ अड़िग खड़ा है। वक़्त इन दोनों परिवारों को एक दूसरे के और करीब लाया है।

अथर्व का पुणे से दिल्ली आना-जाना, पापा की चिकित्सा का खर्च, कार्यालय में बढ़ती छुट्टियाँ, सब जैसे उलझने लगा। शर्मा जी सरकारी नौकरी पर नहीं थे, जो निवृत्तिभत्ता का सहारा मिलता। जीवन की जितनी जमा पूँजी थी केवल उतनी ही संपत्ति थी। अथर्व की कमाई का पैसा भी बहने लगा और घर की आर्थिक हालत तंगी में जाने लगी। साथ ही नंदिनी की दवाइयों का व्यय तो पहले से ही था। अब इतने बड़े इलाज ने मानो कमर तोड़नी शुरू कर दी। खन्ना जी भी कुछ मदद कर देते लेकिन शर्मा जी को यह मंज़ूर नहीं हुआ। रिश्तेदारों से जितना बन पड़ा किया किन्तु हर बीतते दिन के साथ उम्मीदें ढ़लने लगी। कार्यालय में भी अथर्व का मन नहीं लगता है, सारा ध्यान पापा के इलाज की व्यवस्था करने में रहता है। इससे कार्यालय के काम पर असर होने लगा है। उसे लगा अस्मिता के कंधों का सहारा मिलेगा परन्तु वह भी अचानक बदला रुख किए बैठी है।

असल में, पिछले कुछ महीनों में अथर्व बहुत चिढ़चिढ़ा हो गया है। एक तरफ़ पापा की बिगड़ती हालत, पैसों की तंगी, कार्यालय का फैला हुआ काम और ऊपर से दिल्ली-पुणे आने जाने की मेहनत। कभी-कभी सारा गुस्सा और निराशा, अस्मिता को झेलना पड़ा है। बहुत बार वह समझी भी लेकिन उसकी समझदारी, उसी उम्र के पड़ाव-सी कच्ची है। उसका मन इन सभी व्यवहारों से आहत होने लगा। उम्र का कच्चापन इस उतार-चढ़ाव को संभाल नहीं सका और जब तक अथर्व कुछ समझ सकता, दूरी बहुत बढ़ गई। शुरुआत में अस्मिता ने आरवी की बात मानकर अथर्व की हालत को समझने का बहुत प्रयास किया। आरवी ने अथर्व से भी बात कर परिस्थितियों को संभालने की चेष्टा की। परन्तु वक़्त ही कुछ ऐसा है कि सब कुछ फैलने लगा। अथर्व की प्रतिक्रिया संभवत: अनुकूल नहीं है, किन्तु उसकी मानसिक परिस्थिति भी बहुत संघर्षों से गुज़र रही है। ऐसे में अपनी हताशा अस्मिता पर मड़ना, अस्मिता ज़्यादा समय तक झेल नहीं सकी। आरवी के साथ कुछ दिनों की छुट्टी लेकर कानपुर चली गई। जाने से पहले आरवी गई थी अथर्व से मिलने और यह बताने की अस्मिता अब उससे कोई संपर्क नहीं रखना चाहती।

अथर्व को लगा थोड़ी नाराज़ होगी, मना लेगा। छुट्टियों में घर जाएगी तो मन बहल जाएगा। वह स्टेशन गया उससे मिलने। मिलकर कहा, "क्यों करती हो इतना गुस्सा? थोड़ा समझना चाहिए न! मेरी हालत ठीक नहीं है अभी। हमारा प्यार इतना कमज़ोर है क्या कि तुम यूँ...." अस्मिता ने अथर्व को रोकते हुए कहा, "हमारा! इस रिश्ते में 'हम' कहाँ हैं अथर्व? इसमें बस तुम हो! तुम्हारी हालत, तुम्हारा दर्द, तुम्हारी तकलीफ़ें, और मैं? मेरा है तो बस इंतज़ार और तुम्हें समझने की कोशिश। एक रिश्ते में दोनों बराबर होते हैं। दोनों का

दिल जुड़ता है और टूटता है। लेकिन ‘हम’ में सिर्फ़ तुम हो, मैं कहीं नहीं। अच्छे से रहना और भूल जाना अस्मिता नाम की किसी लड़की से कभी मिले थे।” इतना कहकर वह अपनी सीट पर जाकर बैठ गई। अथर्व को यह सब सुनने की उम्मीद नहीं थी। निर्वाक खड़ा देखता रहा उसे जाते हुए। ट्रेन चल पड़ी, कुछ कदम ट्रेन के साथ-साथ चला, अस्मिता को देखते हुए। पलकों पर आँसू और टूटे दिल की आवाज़।

प्रेम था, इसलिए ज़्यादा आहत हुआ, अभिमान हुआ कि इतनी आसानी से कैसे चली गयी। गुस्से और अभिमान से भर कर कुछ दिनों तक अस्मिता से कोई संपर्क नहीं किया। फिर दर्द का एहसास और बढ़ा तो अस्मिता को फ़ोन किया। उसका नंबर बंद आ रहा है। कई बार संपर्क करने का प्रयत्न किया, फिर अनुमान लगाया शायद सच में इतनी नाराज़ है कि संपर्क में नहीं रहना चाहती। आरवी से संपर्क करने की चेष्टा की। सोचा कि वह कुछ मदद करेगी अस्मिता को समझाने में परन्तु उसका नंबर भी बंद। अथर्व को विश्वास हो गया कि अस्मिता किसी भी तरह उससे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती। अंततः उसके कार्यालय के लोगों से पता लगाने की कोशिश की। कुछ दिनों में पता चला, अस्मिता ने निजी कारणों से इस्तीफ़ा दे दिया है। अथर्व को यह बात बहुत खटकी कि इतना भी क्या द्वेष जिसकी वजह से नौकरी से इस्तीफ़ा तक दे दिया। उसने अनुमान लगाया उसे कहीं और अच्छी नौकरी मिल गयी होगी इसलिए वह आसानी से जीवन में आगे बढ़ गयी। यही सब सोच-सोच कर और हताशा बढ़ गयी। अथर्व ने अपने आप को कमरे में बंद कर लिया। रौशनी अब उसे अच्छी नहीं लगती। कहते हैं ना, हार से पहले टूटी हुई हिम्मत हराने लगती है। ऐसा ही कुछ सिलसिला चल रहा है अथर्व की ज़िंदगी में भी।

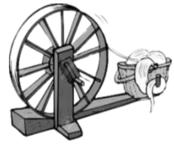

2016 जुलाई | पापा की चिकित्सा शुरू हुए छह-सात महीने बीत गए हैं। तीन महीनों की छुट्टी लेकर, अथर्व शाम की ट्रेन से घर लौटने की तैयारी करने लगा। तभी अचानक भरी दोपहरी में माँ की भरी हुई आवाज़ आती है , "पापा नहीं रहे!" माँ इससे ज़्यादा कुछ बोल नहीं पाई और अथर्व के पैरों तले ज़मीन सरक गई। एक पल में मानो सब थम गया। सब है, परन्तु अब कुछ भी नहीं। कैसे शाम हुई, वह कैसे ट्रेन तक पहुँचा, दिल्ली स्टेशन पर उतर, घर की ओर निकल पड़ा, उसे भी ज्ञात नहीं। पूरी दुनिया रुकी है। प्यार छूटा, पिता का साया खो दिया और घर की माली हालत पूरी तरह से टूटी हुई। देहलीज़ पर पहुँचा तो सबकी भरी हुई पलकें मानो उसी की राह देख रही थी। माँ की आँखें सूनी हैं। अथर्व ने बहुत कोशिश की लेकिन माँ की आँखों में झाँक न सका। सुनंदा जी ने एक उम्र बितायी थी शर्मा जी के साथ। कच्ची उम्र में विवाह हुआ था तब से शर्मा जी के चारों ओर ही सारे रिश्ते बुनते गए। एक जीवनसाथी के रूप में हर दुःख, हर सुख में साथ रहे। आज वो रिश्ता पीछे छोड़, एक आगे बढ़ गया जीवन चक्र में। जो चला गया, वो तो दोबारा नहीं लौटता, पीछे छूटे लोगों के पास रह जाती हैं यादें, साथ बिताये लम्हे और उन लम्हों में बीते रिश्ते। उन्हें बटोर कर शुरू से शुरू करना कठिन है। सुनंदा जी भी उन्हीं बिखरे लम्हों और यादों को समेटने की कोशिश कर रही हैं। लेकिन इतना आसान है क्या इतने बरसों की यादों को यूँ समेट लेना?

एक बार फिर नंदिनी को हालात की मार पड़ी। फिर से किसी अपने को जाते देखना। इस बार उसने रोज़ थोड़ा-थोड़ा पापा को जाते देखा है। कमरे में कैद रहने लगी है। डरी-सहमी हर नज़र पर शक करती है। तेरह दिन निकले

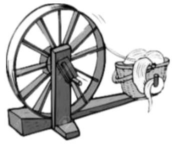

और फिर महीना। वक़्त नहीं रुका और न ही ज़िंदगी। तीन महीनों की छुट्टियाँ भी ख़त्म हुई, पता नहीं चला और अथर्व वापस पुणे आ गया।

मन में ख़ामोशी और शोर साथ में है। पिता ऐसे ही मायना रखते हैं जीवन में। अजीब दौर है। अथर्व मानो ख़ुद से भागने लगा। उसे रिश्ते इतने समझ में नहीं आ रहे हैं। घर से दूर है, अपने आप से दूर होने लगा। उधर नंदिनी भी पापा के जाने को समझ ही नहीं सकी। लोग उसे और नहीं समझ सके। माँ, अकेली यह नहीं समझ सकी कि किसको कैसे संभालें। शर्मा जी के जाने के बाद नंदिनी का संघर्ष बढ़ गया। उसकी हालत अचानक बिगड़ने लगी। चिकित्सकों के परामर्श पर उसे मानसिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया गया। खन्ना जी का परिवार हर कदम साथ रहा। रोज़ नंदिनी से मिलने जाते हैं। एक तरह से स्पर्श के बाद खन्ना जी और उनकी पत्नी ने नंदिनी से वह मोह जोड़ लिया है जो कहीं-न-कहीं उनका स्पर्श से जुड़ा हुआ था।

अथर्व की जिंदगी से बहुत कुछ टूट कर अलग होने लगा है। और वह कुछ कर भी नहीं सकता। अचानक बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ परन्तु दिशाहीन। जहाँ थोड़ी छाया मिली बस वहीं बसेरा बनाना चाहा लेकिन कहते हैं न- बादल के साए में आराम नहीं कर सकते, धूप कभी भी बादलों को उड़ा ले जाती है। ऐसे ही कुछ बिखरे हुए मोतियों-सा बिखरने लगा है उसका का मन भी।

***

देखते-देखते दो साल बीत गए। अपने अक्स से भागता हुआ कभी किसी जंगल में शांति ढूँढ़ने की कोशिश करता तो कभी महफ़िलों के शोर में खो जाने की इच्छा। ऐसा तो नहीं था अथर्व। लेकिन अब भाग रहा है। टूटे दिल के शोर

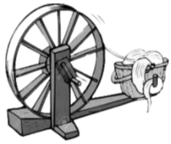

से, पापा के जाने से, दीदी के हाल से और आर्थिक तंगी में डूबी हालत से। जब मन का ऐसा हाल है तो कार्यालय का काम भी कैसे हो। वहाँ भी लोगों की निग़ाहें उसे तोलने में ही व्यस्त हैं। एक दिन उसी भागने के प्रयास में अथर्व ने नौकरी छोड़ दी और वापस चला गया अपनी उन्हीं गलियों में जहाँ से उसने शुरुआत की थी। सोचा शायद वहीं जाकर सुकूँ नसीब होगा।

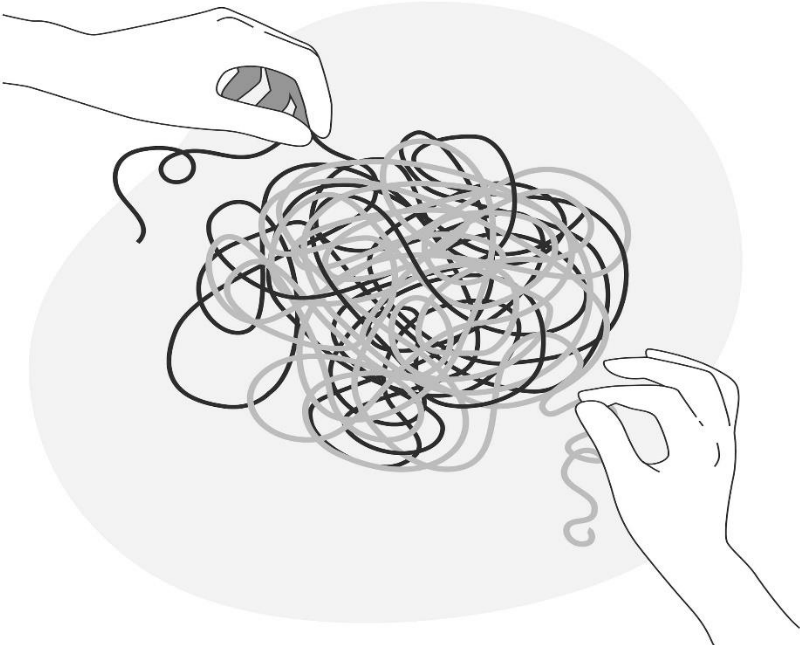

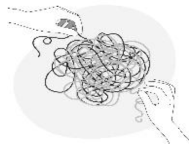

अध्याय ७
उलझे धागे

सितंबर 2018 | दरयागंज, पुरानी दिल्ली | अथर्व कुछ दिनों तक कोशिशें करता रहा जिससे परिस्थितियाँ पहले जैसी सामान्य हो सकें परन्तु माँ का मनोबल बढ़ा न सका। नंदिनी को हिम्मत कर वापस घर नहीं ला सका। ज़िंदगी अभी भी बिखरी है। खन्ना जी कभी-कभी एक-दो दिनों के लिए नंदिनी को अपने घर ले जाते हैं जिससे उसका मन बदले। इसी उम्मीद में कि नंदिनी फिर से जी उठे और उम्मीद का हाथ थामे। किन्तु कोई ख़ास बदलाव नहीं दिखता। स्पर्श की माँ कई बार नंदिनी को ज़ोर से गले लगाकर रो देती, कहती, "नहीं आएगा अब वो वापस, जाने दे उसे!" नंदिनी लेकिन आज भी वहीं है, उन्हीं बँटे हुए सपनों के बीच, हकलाती हुई कहती है…"स...स्पर्श.. अब.. अभी.. ठीक हो जाएगा। मैं उसे बोल दूँगी… अभी आने वाला है…" फिर कभी अपने पापा के साथ बिताए हुए बचपन की बातें करती। अथर्व भी अपनी लड़ाई लड़ रहा है। पुरानी बचपन की गलियाँ, दोस्त, शायद वहाँ कोई ठौर मिले सोच कर उसने कुछ पुराने दोस्तों को ढूँढ़ने की कोशिश की और अचानक कई नामों के बीच एक नाम दिखा - *पियू* का।

पियू इतने सालों में अथर्व की ज़िंदगी से कहीं खो गई है। नाम भी कभी-कभी ज़हन में आता है। आज दोबारा उसका नाम देखकर, चेहरे पर एक हल्की मुस्कान फूटी। वही पुरानी यादों का पिटारा। सोचा उसे मिलते हैं शायद मन थोड़ा हल्का लगे। यही सब सोचते विचारते उसने लिखे हुए नंबर पर संदेश

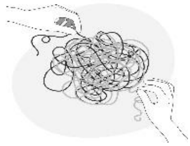

भेजा। थोड़ी देर तक फ़ोन को ताकता रहा लेकिन कोई जवाब नहीं आया। उसे लगा अब कोई जवाब नहीं आएगा। आख़िर उसकी ही नहीं, बाकी सभी की ज़िंदगियाँ आगे बढ़ी हैं। वह पुरानी बातों में खोया छत पर चला गया। शाम है, सूरज की लालिमा ढ़लने लगी है और तभी फ़ोन बजा जिसकी रौशनी में नाम दिखा *'पियू'*...।

***

बीते हुए वर्षों में पियू की कहानी भी कई मोड़ों से गुज़री थी।

फतेहपुरी, पुरानी दिल्ली | महाविद्यालय के पश्चात् पियू को नौकरी मिली, वहीं दिल्ली में। घर से आना-जाना करती थी। दिल्ली की गलियों में उसे अपना प्यार भी मिला था, **शेखर रायज़ादा**। शेखर, अमीर घर से ताल्लुक रखता था। जिस दिन दोनों को प्यार का एहसास हुआ, शेखर ने एक पल की देरी नहीं की। अपने माता-पिता को लेकर पियू के घर पहुँच गया, उसका हाथ माँगने। पियू की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। पियू के पिता, **श्री सागर संयाल**, सरकारी आयकर विभाग में नौकरी करते थे और माँ – गृहिणी, **श्रीमती रूपा संयाल**। अच्छा घर परिवार देख, सभी शुभ काम की तैयारियों में जुट गए। कुछ ही दिनों में बारात चौखट पर आई। चाँद जैसी सुंदर पियू, शादी के जोड़े में सबकी नज़रें अपनी ओर खींचे हुए थी। दोस्तों के सामने शेखर की छाती दो इंच और फूल गई। जहाँ एक ओर सारे रिश्तेदार उंगलियाँ डुबाकर पकवानों का लुत्फ़ उठा रहे थे, वहीं दूसरी ओर शेखर के घरवालों की दबी हुई आवाज़ें पियू के कानों में पड़ी। उसे पता चला कैसे उसके मध्यमवर्गीय परिवार पर तंज कसे जा रहे थे, और कैसे उसने शेखर को शादी के लिए मना कर बड़ा हाथ मारा था। पियू का कोमल मन दुःखी हुआ लेकिन शेखर का प्यार याद आते

ही उसकी मुस्कराहट लौट आई। शादी सम्पन्न हुई। एक लम्बी गाड़ी में बिदाई। बिदाई के समय, बेचारी का रो-रो कर हाल बुरा हो गया। आख़िर अपना आँगन छूट रहा था। ज़्यादा दूर नहीं था ससुराल लेकिन फिर भी अपने बाबा, अपनी माँ, अपना घर, सब छोड़ कर अब एक नई दुनिया बसानी थी।

***

वसंत विहार, नई दिल्ली | ससुराल में पहला दिन। सासू-माँ ने नई साड़ी दी पहनने के लिए। बताया मुँह-दिखाई की रस्म है इसलिए जल्दी से तैयार होकर नीचे आ जाए। सभी रिश्तेदार आ चुके थे। रात भर शादी की रस्में, सुबह बिदाई और अब तैयार भी होना था। पियू ने शेखर की ओर थकान भरी नज़रों से देखा। शेखर ने उसे छेड़ते हुए कहा "जल्दी रस्मों को पूरा करो, फिर मेरा वक़्त है, आख़िर बीवी हो अब!" पियू शर्म से सिहर उठी और सारी थकान जाने कहाँ फुर्र हो गई। शेखर के साथ बिताने वाले लम्हों के बारे में सोचते-सोचते जल्दी से तैयार होकर नीचे पहुँची। सासू-माँ की दी हुई हरी साड़ी में बेहद सुंदर लग रही थी। माथे पर एक बड़ी लाल बिंदी और होठों की लाली मानो चार चाँद जड़े हुए थे, उसके रूप में। पियू की माँ ने एक सोने की चेन दी थी जो उन्हें उनकी शादी में मुँह-दिखाई पर मिली थी। वही चेन पहने सबके सामने घूँघट करके बैठ गई।

सासू-माँ ने बड़ी ख़ुशी से बहू का घूँघट हटाया और सबसे परिचय करवाया, "देख लीजिए! यह है रायज़ादा खानदान की बहुरानी।" ठिठोली करती हुई बोली, "रूप में कोई कमी नहीं बस मायके से कुछ ठीक नहीं लाई। लेकिन अब हमारे खानदान की है, हम बहू को ऐसे फीका नहीं रखेंगे। यह रहा नौ-लखा हार। हटाओ ज़रा यह पतली चेन।" पियू को इस तंज की उम्मीद नहीं

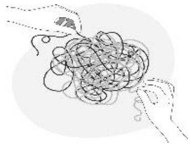

थी। उसका मन आहत हुआ परन्तु चुप रही। जब तक कुछ और समझ पाती, सासू माँ ने उसकी माँ की दी हुई चेन उतार कर मेज़ पर रख दी और एक भारी हार पहना दिया। पियू वहाँ सबके बीच करीबन एक घंटा बैठी रही और उसे केवल अपने मायके की कमियों का ही पता चलता रहा। रुआँसी पियू, शेखर के कमरे की ओर जाते हुए चुपके-से माँ की चेन को मुट्ठी में भींच कर ले गई। इतना अपमानित महसूस कर रही थी कि उसे समझ में नहीं आया कि कैसे बर्ताव करे। कमरे में पहुँचते ही जैसे उसकी हिम्मत का बाँध टूट गया और आँसू फूट पड़े। शेखर कुछ काम कर रहा था, पियू का हाल देख कर उसे ठीक से समझ में नहीं आया, और भागकर उसे बाहों में भर लिया। पुचकारते हुए पूछा "क्या हुआ?" पियू ने रोते-रोते सारी बातें बताई कि कैसे उसके मायके को सबने मज़ाक का पात्र बनाया हुआ था। बातें सुनकर शेखर ने उसे सांत्वना दी कि बुरा न माने, ऐसी छोटी बातों से मन खराब न करे। समझाते हुए शेखर यह बोल पड़ा, “वैसे एक तरह से सब ने सही कहा है ना .. तुम अब ऊँचे खानदान से हो, वह सोने की हल्की-फुल्की चीज़ें तुम पर अच्छी नहीं लगेगी। तुम यहाँ रानी की तरह रहो। सबको बस हुक्म करो। भूल जाओ अपने वह दिन जब तुम रिक्शा से ऑफ़िस जाती थी। अब तो ऑफ़िस भी जाने की क्या ज़रूरत, बस राज करो, घर सजाओ, पैसों की कोई कमी तो है नहीं…” ।

पियू को एक पल के लिए अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ। शेखर! जिससे वह इतना प्रेम करती है, यह क्या कह गया। सोने की उस हल्की चेन में लिपटे, भारी जज़्बात उसे कैसे नहीं दिखे? रिक्शा पर जाती हुई स्वतंत्र पियू उसे कैसे नहीं दिखी? हड़बड़ी में उसने ज़्यादा कुछ सोचना ठीक नहीं समझा। उसे लगा कि शायद शेखर ने यह सब उसका ध्यान बटाने के लिए कहा था।

पियू को अपने रिश्ते पर इतना भरोसा तो था। इन्हीं सब में शेखर ने पियू को ज़ोर से बाहों में भरा और करीब आते हुए कहा, "अच्छा, अब दुःख भरी बातों का समय गया। अब मेरा वक़्त है तुम्हारे साथ खुशियाँ बाँटने का।" पियू भी आँसुओं को भुला कर शरमाती हुई, शेखर के गले से लग गई।

साँसों की आहटें, एक दूसरे की ख़ामोशी में घुलती हुई करीबियाँ। कपड़ों में ढकी हुई चाहतें अब हर बंधन को तोड़ कर एक-दूसरे से रुबरु हुई। कशिश इतनी गहरी थी कि दोनों को प्रेम राग में पिरोए डूबा कर ले गई। पियू-शेखर के बीच की हर दीवार डेह गई।

अगली सुबह रसोई में जैसे ही पहुँची, घर में काम करने वाली सभी महिला कर्मचारी, पियू के गले पर चुपके से झाँकते हुए निशान की ओर देख कर मुस्कुरा रही थी। वह शरमाती-सकुचाती, पल्लू से छिपाती हुई जैसे-तैसे सबकी नज़रों से बचने की कोशिश कर रही थी। तभी सासू-माँ ने रसोई घर के दरवाज़े पर खड़े होकर आवाज़ दी, "पियू! नाश्ते की मेज़ पर चलो, साथ मिलकर नाश्ता करते हैं। पापा और शेखर को भी आवाज़ लगा दो।" कुछ ही देर में सभी मेज़ पर साथ बैठकर नाश्ता करने लगे। इसी बीच ससुर जी ने पूछा, "बहू, तुम नौकरी से इस्तीफ़ा कब दे रही हो? अब जितनी जल्दी घर संभाल लो, उतना अच्छा है। रोज़-रोज़ नौकरी पर जाना, धक्के खाना, कोई ज़रूरत नहीं।" पियू अवाक उनकी ओर देखने लगी। कुछ समझती, उसे पहले सासू-माँ बोल पड़ी, "हाँ, अब तो अगले साल तक पोते की शक्ल देख लें, फिर चारों धाम की यात्रा पर जाएँगे।" पियू को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उससे यह क्या बोला जा रहा था। शादी से पहले शेखर ने कभी ऐसा कुछ नहीं बोला। वह जानता था कि कितनी मेहनत से पियू ने अपना मकाम बनाने की

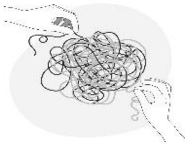

कोशिश की थी। पियू ने हिचकिचाते हुए कहा, "शादी से पहले तो ऐसी कोई बात नहीं हुई थी। मैं नौकरी नहीं छोड़ना चाहती। मेरा संघर्ष, मेरी मेहनत से मैंने अपने लिए एक जगह बनाई है।" इतना बोलना ही था कि न जाने क्यों सासू-माँ ज़ोर से बरस पड़ी। उसे इतना सुनाने लगी कि किस तरह इतने बड़े खानदान से जुड़कर, बड़ों की बातों की अवहेलना कर रही थी। बढ़ते-बढ़ते बात इतनी बढ़ गई कि शेखर गुस्से में उठकर दफ़्तर निकल गया। पियू हैरान, परेशान, सहमी हुई कमरे की ओर चली गई। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि पिछले दो दिनों में क्या-क्या बीत गया जिसने उसकी ज़िंदगी उलट पुलट कर रख दी। अब यह लगभग रोज़ होने लगा था। छोटी-छोटी बातों पर ताने मारना और इस्तीफ़ा देने का दबाव। बाकी समय सासू-माँ यह गिनवा देती थी कि कैसे उसके घर-परिवार से नाता जोड़कर उन्होंने ग़लती की। हद उस दिन हो गई, जब एक इतवार पियू के माता-पिता उसके ससुराल पहुँचे।

सागर जी और रूपा जी सोफ़े पर बैठ कर बेटी का इंतज़ार कर रहे थे। किसी ने उनसे पानी तक नहीं पूछा। कुछ ही देर में पियू जैसे ही उनके सामने पहुँची, वैसे ही सासू-माँ के निर्देशन पर घर के नौकर-चाकर उनके आस पास घूमने लगे। दूसरी ओर सासू-माँ अपने कमरे में जाकर बैठ गयी। पियू के माँ-बाबा को यह माहौल कुछ अटपटा लग रहा था, इसलिए वे तुरंत ही वापस लौटने के लिए तैयार हो गए। यह असहजता पियू के लिए बहुत कष्टदायक थी। भीगी पलकों से पियू रसोई में गयी और एक डब्बे में कुछ मीठा डाला। माँ-बाबा के निकलने से पहले उनके हाथ में वह डब्बा थमा दिया। जाने कहाँ से तमतमायी सासू-माँ आई और अजीब तरह से पूछ बैठी, "क्या पार किया जा रहा है मायके?" पियू की माँ तो सकपका गई। इतने अपमान की उम्मीद

नहीं की थी। उन्होंने डब्बा खोल कर मेज़ पर रख दिया। उसमें रखा मीठा देख कर सासू-माँ हँसते हुए बोली, "अरे, मैं तो मज़ाक कर रही थी.. अब बड़े घर से डब्बे जाते हैं, किसी का भी मन मचल सकता है!" ठिठोली करती, अपने कमरे में वापस चली गई। पियू के माँ-बाबा ने भली-भाँती भाँप लिया था कि नए रिश्तों की कैसी उलझनों में पड़ी थी उनकी बेटी। परन्तु उस वक़्त कुछ न बोलते हुए दोनों चुप-चाप लौट गए।

अपमानित पियू आज स्वयं को रोक न सकी और सासु-माँ के कमरे की ओर गई। दरवाज़ा खोल कर बोली, "माँ जी, हम चाहे मध्यमवर्गीय हैं लेकिन अपनी मेहनत की खाते हैं। चोर नहीं हैं! और मैं कोई अबला नहीं हूँ जो कोई भी कुछ भी बोल जाए, अगली बार सोच के बात कीजिएगा।" इतना बोलकर पैर पटकती हुई अपने कमरे में चली गई। शाम तक घर में ख़ामोशी थी लेकिन शेखर के घर लौटते ही कोहराम मच गया। सासु-माँ ने कई रंग लगाकर शेखर को बताया कैसे पियू ने उनका अपमान किया, कैसे उसके माता पिता ने उसे सिखाया था यह सब। शेखर ने भी चिढ़कर पियू की एक बात नहीं सुनी, और उसे फटकार लगा दी। पियू को ठेस लगी कि आखिरकार शेखर ने भी उसकी बात नहीं सुनी।

रात को भोजन करते समय किसी ने पियू से कोई बात नहीं की और भोजन के पश्चात सभी वैसे ही चले गए अपने-अपने कमरों में। शेखर पर अभिमान था, उसे लगा वह उसे मनाएगा लेकिन पियू स्तब्ध रह गई जब शेखर ने भी उससे कोई बात नहीं की, अपितु एक पति होने का अधिकार उससे छीन लिया। उस रात बिस्तर पर एक चादर-सी बिछी थी पियू। कुछ एहसास नहीं हुआ। जहाँ पहले शेखर के करीब आते ही उसे उसकी दिल की धड़कनें सुनाई

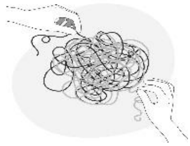

देती थी, आज वही उसे सब एक बुत जैसा लग रहा था। किसी सीरहन, किसी छुअन का कोई एहसास नहीं था। ये सिलसिला बस ऐसे ही अलग-अलग तरीकों से चलता रहा।

3 महीने बीत गए, लेकिन कुछ नहीं बदला। अब तो कभी-कभी शेखर का हाथ भी उठ जाता था। पियू बिस्तर पर मुर्दे-सी लगने लगी थी। उसका टूटा हुआ दिल शायद नजर नहीं आ रहा था शेखर को। और एक दिन पियू की सहनशक्ति ख़त्म हो गई। सारा सामान बाँधकर वह घर से निकल गई। ज़ख़्म कई बार दिखाई नहीं देते और जो ज़ख़्म नहीं दिखते वो नसूर बनते देर नहीं लगाते। इससे पहले कि ये हालात उसको और तोड़ते, वो सब कुछ पीछे छोड़ कर निकल गई। शेखर ने उसके बाद कभी कोशिश नहीं की उसे वापस बुलाने की। और दोनों ने कुछ समय में अलग होने का फ़ैसला ले लिया। देखते ही देखते तलाक भी हो गया।

पियू का दिल टूटा था, मगर अब वह शांति से साँसें ले रही थी। अब उसे अपने अस्तित्व की लड़ाई, अपनों से नहीं लड़नी थी। किसी के अहंकार की पूर्ति के लिए अपनी गरिमा को लुटाने की जरूरत नहीं थी। अब उसका मन शांत था। अकेला था, लेकिन शांत था। इन सब में 2 साल और बीत गए। फिर साल से साल जुड़ते चले गए, वह अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ती गई और 7 साल पंख लगाकर उड़ गए। कई बार कई लोगों ने उसे अपनाने की कोशिश की, लेकिन पियू को अब भरोसा करने में डर लगता था। डर था कि फिर उसे कोई तोड़ न दे। फिर उसके अस्तित्व पर कोई सवाल न उठाए।

***

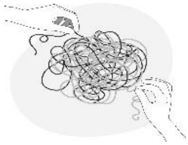

आज इतने सालों बाद उसे एक नाम की झलक दिखी - अथर्व। फ़ोन पर उसका संदेश देखते ही पियू को वह पुराने दिन याद आ गए। कार्यालय के कामों में व्यस्त थी, जल्दी से काम निपटा कर अथर्व को कॉल लगाई... घंटी बज पड़ी... पियू का दिल भी ज़ोरों से धड़क उठा। सोचने लगी कि इतने सालों बाद उसकी आवाज़ सुनकर कैसा लगेगा, क्या बात होगी, ज़िंदगी में क्या कुछ बदला होगा। तभी दूसरी ओर से आवाज़ आती है - "हेल्लो!"

धागे

अध्याय ८
भूले-बिसरे रेशे

कितने ही साल बीत गए। ज़िन्दगी किसी के लिए नहीं थमी । वहीँ एक पुराने दोस्त की आवाज़, मन को खींच कर ले गया उन दिनों की ओर जहाँ सब परी लोक कथा जैसा हुआ करता था।

खुशियों से भरे वह पुराने दिन जैसे एक चित्रकथा की तरह आँखों के सामने चलने लगे। पियू ने उत्तर दिया, "हैलो अथर्व! कैसे हो?" । अथर्व को वह आवाज़ मन के भीतर तक सिहरन दे गई। वह बोला, "007 बॉन्ड - जेम्स बॉन्ड! तुम कैसी हो?" और दोनों हँस पड़े। दोनों के भीतर का ख़ालिपन एक पल को मानो ख़त्म हो गया। वह दोस्ती, वह खुशियाँ... सारी यादों ने जैसे एक पल में दिल की चोटों पर मरहम लगाने का काम किया।

एक लम्बा अरसा बीता चुका था, लेकिन वह दोस्ती आज भी दिलों की गहराईयों में है। कुछ पलों की बातों से दोनों को ही इसका एहसास हो गया। फिर मिलना तय हुआ। पुरानी दिल्ली की बात ही अलग है। न गलियाँ बदलती हैं, न रिश्ते। अब दोनों को अगले दिन की शाम का बेसब्री से इंतज़ार है। बेचैनी है कि यह रात कटे, सुबह हो और फिर शाम। शाम को मिलने जा रहे हैं। वहीं पुरानी दिल्ली की गलियों में जहाँ कई शामें चाय पीते, बातें करते और चौमीन खाते बिताया करते थे। उन दिनों इतने पैसे नहीं थे तो वह चाय की टपरी ही बड़े रेस्तरां की तरह लगता था। अब इतनी यादें जुड़ गई हैं उस जगह से कि किसी बड़े रेस्तरां में भी वह मन न लगे।

इतने सालों बाद, मन में पुराने दोस्त से मिलने की ख़ुशी थी, जिसके साथ बेफ़िक्री के दिन बिताए थे। तब का दौर कितना आसान था, आज पता चलता है। न घर चलाने की चिंता, न सामाजिक दबाव की कोई फ़िक्र। उन्हीं पलों में दोनों खोए हुए पहुँच गए रियाज़ चाय वाले भैया की दुकान पर। इतने वर्षों बाद पियू को देखते ही अथर्व के मन में अचानक एक हूक उठी। सामने वही दोस्त जिसे देखकर एक दिन बीच सड़क रुक गया था। समय बीत गया है परन्तु कुछ ख़ास बदला नहीं है। दुकान के मालिक रियाज़ भैय्या ने देखते ही झट से दोनों को पहचान लिया। खुले मन से मिले। उन्हें आज भी याद है दोनों की मनपसंद मसाला चाय। रियाज़ भैय्या ने उन्हें बैठने को कहा और चल दिए स्पेशल वाली चाय बनाने, साथ में उनकी दिल्ली की वर्ल्ड फेमस चौमीन। कितनी छोटी बात है, लेकिन कितने गहरे जज़्बात। इंसान के दिल पर छूटी हुई छाप बहुत लम्बे अरसे तक रहती है और कभी-कभी तो आजीवन काल तक। उसके लिए बड़े किसी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं, केवल एक मुस्कुराहट भी वह काम कर जाती है। रियाज़ भैय्या स्वयं चाय लेकर आए। चाय का गिलास आगे बढ़ाया और पूछे, "दीदी-भैय्या, इतने सालों बाद?" फिर अथर्व से बोले, "पियू दीदी तो आपके जाने के बाद भी कभी-कभी आती थी फिर अचानक गायब हो गई। मुझे तो लगा चली गई दिल्ली से बाहर। फिर देखा मैंने 3-4 बार, लेकिन कभी रुकी नहीं।" दोनों की ओर देखते हुए आगे बोले, "अब बड़े लोग हो गए क्या दीदी? रियाज़ भैय्या की टपरी छोटी लगने लगी है?" अथर्व ने भावुक होकर कहा, "भैय्या कहीं भी चले जाएँ, आपके हाथ की बनी स्पेशल चाय हमेशा याद आती रही है। पिछले कुछ सालों में, ज़िंदगी ने बहुत दौड़ा दिया है। अब जब वापस रुकने का मौका मिला, तो चला आया अपनी पुरानी दुनिया में। आपकी बहनों की शादी हुई?" पियू केवल मुस्कुराई। रियाज़ ने बड़ी ख़ुशी से कहा, "भैय्या सब आप लोगों की ही दुआ का असर है। बहनों की शादी हो गई, ख़ुद भी शादी कर ली और एक साल की बिटिया है मेरी।

अब बस और मेहनत करनी है ताकि उसे अच्छी जगह पढ़ा सकूँ।" उनकी आँखों से ख़ुशी साफ़ झलक रही है। यह सुनकर, अथर्व और पियू को बहुत अच्छा लगा। रियाज़ भैय्या ने दोनों को संबोधित करते हुए कहा, "दीदी-भैय्या, आज भी यह आपकी दुकान है। आराम से बैठो और बोलते जाओ क्या-क्या खाना है। मेनू में और भी कुछ जोड़ा है। आज सब मुफ़्त है आपके लिए। इतने सालों बाद मिले, बहुत अच्छा लगा। चलिए अब आप मजा लीजिए खाने का और बात कीजिए। मैं ज़रा दूसरे ग्राहकों को देखता हूँ। वर्ना हमारा छोटू, सब फैलाएगा।" इतना बोलकर उन्होंने उनके पास काम करने वाले लड़के से कहा, "छोटू! चल जल्दी-जल्दी ऑर्डर लगा और ध्यान दे अच्छे से। दीदी भैय्या जो मांगे उनको फटाक से लगा कर दे।" अथर्व-पियू का मन बहुत नम हुआ इस व्यवहार से। वह अपनापन आज भी महसूस हुआ। लगा पुराने रिश्ते वक़्त के साथ हमेशा नहीं बदलते। कुछ मज़बूत एहसास होते हैं जो वैसे ही रहते हैं, अटूट।

वही पुराने किस्से, कहानियाँ, यादें का दौर। दोनों उन्हीं पुराने दिनों में खोए बातें कर रहे हैं। साथ में मसाला चाय जिसने और जाने कितनी यादों को ताज़गी दे दी। बातों-बातों में कुछ बातें गुज़रे समय की हुई, जिससे दोनों को एक-दूसरे के रिक्तता का एहसास होने लगा। शून्य हृदय और भावशून्य नज़रें जाने कितनी कहानियों को बयाँ करने लगी। सालों की दोस्ती है, समय नहीं लगता एक-दूसरे के हालातों को समझने में। बातें करते हुए शाम कब देर रात में बदल गई, पता ही नहीं चला। अथर्व ने पियू को घर छोड़ा और बीती शाम को याद करते हुए घर की ओर बढ़ गया। बहुत समय बाद मन हल्का लग रहा है। फिर से मन को प्रसन्नता मिली जो पिछले कुछ वक़्त में, जाने कहाँ खो गई थी। दोनों अपने-अपने मन के भँवर में गोते खा रहे हैं। एहसास है कि कैसे कुछ पलों की मुलाकात ने अचानक बरसों की अपूर्णता को पूर्ण कर दिया।

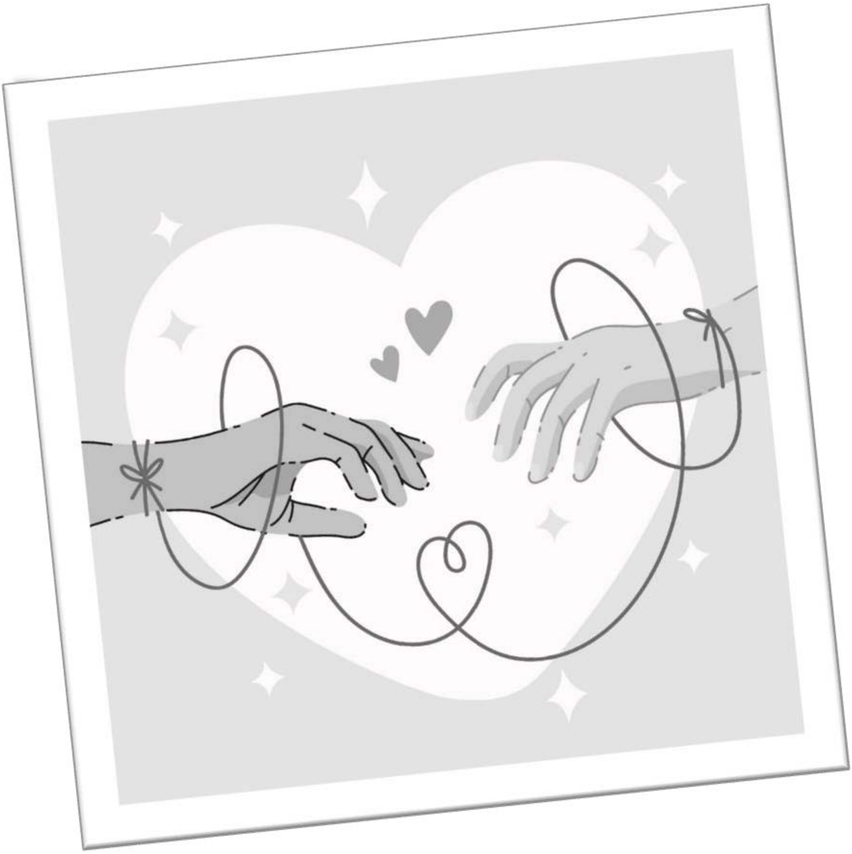

अध्याय ९
बंधन की नई गूँज

दिसंबर 2018 | पिछले 2 महीनों में अथर्व ने वहीं दिल्ली में एक नौकरी ले ली। पिछली नौकरी से वेतन भी अच्छा है। घर पर रहता है, इसलिए घर की आर्थिक स्थिति भी संभाल रहा है। अब हर शाम थोड़ी देर पियू से फ़ोन पर बातें भी होती हैं। रियाज़ भाई के चाय के साथ अब कई शामें उन पुराने दिनों की यादों में बीतती हैं और कई नई यादें बन रही हैं। एक दूसरे को संभालते हुए अंजाने ही वह पुरानी दोस्ती गहरा रही है। एक रोज़ पियू की बचपन की एक सहेली 'अस्मिता' का फ़ोन आया। पियू-अस्मिता विद्यालय की सहपाठी और सहेलियाँ हैं। कैनेडा में अस्मिता अपने परिवार के साथ रहती है। फ़िलहाल छुट्टियों पर दिल्ली आई हुई है। उसके जन्मदिन पर एक छोटे से जलसे का आयोजन किया गया है, जिसमें वह चाहती है विद्यालय के सभी पुराने दोस्त मिलें। आखिर इतने बरसों में सभी से मुलाकात हो नहीं पाई। फ़ोन पर जन्मदिन की बात सुनकर पियू प्रसन्न हुई, परन्तु जलसे में जाने का मन नहीं है उसका। पिछले इतने वर्षों में किसी जलसे में गई ही नहीं। वहाँ लोगों के बीच अकेली पड़ जाती है। कोई-न-कोई आकर पूछ ही लेता है कि शादी क्यों टूटी थी अथवा दोबारा शादी क्यों नहीं कर रही। ऐसे सवालों से उसका मन आहत हो जाता है। इसलिए उसने ऐसी महफ़िलों से दूरी बना ली है। आज अस्मिता ने बहुत बार कहा आने के लिए। दोस्ती का वास्ता भी दिया। अब पियू से न 'हाँ' कहते बन रहा है, न ही 'ना'। उसने कोई जवाब नहीं दिया, बस इधर उधर की दूसरी बातें की और फ़ोन रख दिया। मन में अस्मंजस है कि क्या करे... ? अस्मिता

ने इतनी बार बोला है, इतने सालों बाद आई है दिल्ली और फिर जलसे में होने वाली चर्चाएँ। इसी बीच अथर्व का फ़ोन आता है। कार्यालय से घर को लौट रहा है। पियू की आवाज़ सुनते ही बोल पड़ा, "क्या बॉन्ड! परेशान साउंड कर रही हो। कुछ हुआ क्या?" कुछ पल के लिए पियू स्तब्ध रह गयी। अनजाने ही पुराने कुछ ज़ख़्म याद आ गए। शेखर, एक आदमी जिससे वह इतना प्यार करती थी, उसकी कही बातों को समझ ही नहीं पाया और एक यह एक दोस्त है, ख़ामोशी को भी इतनी बरीकी से पढ़ लेता है। फिर अथर्व ने कहा, "अरे! क्या हुआ? कुछ बोलोगी या खो गयी किसी और दुनिया में?" उसकी आवाज़ सुनकर पियू की पुराने यादों की तन्द्रा भंग हुई और थोड़ा हिचकते हुए बोली, "एक स्कूल ही सहेली है अस्मिता, दिल्ली आई है तो अपने जन्मदिन की पार्टी पर बुला रही है। मन नहीं कर रहा लेकिन इतनी बार बोल रही है!" उधर अथर्व के कानों में 'अस्मिता' नाम पड़ते ही जैसे उसके कदम बीच सड़क पर धसने लगे। उसने दोबारा पूछा, "क्या नाम बताया सहेली का?" उसके इस सवाल से पियू के ध्यान में आया कि अस्मिता नाम तो अथर्व के जीवन से भी जुड़ा हुआ है। अथर्व ने बताया था कैसे उससे अलग होना इतना मुश्किल रहा। पियू हिचकिचाने लगी। उसने जान बूझ कर नहीं कहा है परन्तु उसे चिंता थी कि कहीं अथर्व को ठेस न पहुँचे। बोली, "सुनो! रहने दो, मेरा वैसे भी मन नहीं है जाने का। चलो हम कहीं मिलते हैं चाय पर।" अथर्व ने पूछा, "कब है जन्मदिन?" पियू ने उत्तर दिया "कल, मगर मेरा बिलकुल जाने का मन नहीं है..." अथर्व ने थोड़ा ज़ोर देते हुए कहा, "पूरे हफ्ते सिर्फ़ ऑफ़िस और घर, यही करती हो। तुम्हें जाना चाहिए। कल वैसे भी शनिवार है, पूरे दिन घर में बैठकर क्या करोगी? बाहर जाओ, सामाजिक जीवन में थोड़ा मन लगाने की कोशिश करो। हम इतवार को मिलेंगे।" पियू बोली, "फिर तुम क्यों नहीं चलते

मेरे साथ पार्टी में? तुम्हें भी थोड़ा बदलाव मिलेगा और मुझे थोड़ी हिम्मत रहेगी। काफ़ी सालों से ऐसी पार्टियों में नहीं गई हूँ।" अथर्व शायद ऐसे कभी न जाता परन्तु वह नाम 'अस्मिता' ने कुछ हलचल की है उसके भीतर कि वह एकदम से राज़ी हो गया। बोला, "चलो मिलते हैं कल शाम 6 बजे। मैं तुम्हारे घर आता हूँ, फिर साथ चलेंगे।" पियू को अंदाज़ा नहीं था कि अथर्व इतनी जल्दी मान जाएगा लेकिन उसकी बात सुनकर वह ख़ुश हो गई। फ़ोन रखा और अस्मिता को सन्देश भेजा कि जलसे में आ रही है, अपने एक दोस्त के साथ।

शनिवार शाम, समय से अथर्व, पियू के घर के बाहर पहुँच गया। पियू भी तैयार है, दोनों मिले और ऑटो से निकल पड़े रेस्टोरेंट की ओर जहाँ अस्मिता के जन्मदिन का जलसा है। पहुँचकर देखा कुछ 20-25 लोग आए हुए हैं। पियू के विद्यालय के बहुत सारे मित्र सपरिवार आए हैं। सब एक दूसरे से गले मिले, अपने-अपने परिवारों से एक दुसरे का परिचय करवाया। पियू ने भी अथर्व से सबका परिचय करवाया। जब से अथर्व रेस्टोरेंट में घुसा है, तब से उसके दिल की धड़कनें अचानक ही तेज हो गई हैं। उसके मन के किसी कोने में दबी एक स्मृति ने हलचल मचाई है। ये नाम 'अस्मिता' उसे व्याकुल कर रहा है। तभी पियू ने सामने की ओर इशारा करते हुए आवाज़ लगाई, "वो रही अस्मिता! अस्मिता, कैसी हो?" अस्मिता पलटी और अथर्व ने एक लंबी साँस ली। सिर्फ़ नाम एक-सा है। ये तो कोई और है। अथर्व हमेशा से जनता था की ये कोई और है लेकिन मन जाने कितने छलावे करता है मस्तिष्क के साथ। सत्य पता है, परन्तु सब भ्रमित। अस्मिता से मिलकर दोनों ने उसे जन्मदिन की बधाइयाँ दी। अभी तक सब इतना अच्छा लग रहा है कि पियू सोचने लगी कि क्यों

इतने साल नहीं गई किसी से मिलने। वक़्त बदल गया है। जलसे में लगभग 1 घंटा बिताया कि तभी एक सहेली शामिल हुई, **श्रेया आनंद**। श्रेया आज कल अपने परिवार के साथ अमेरिका में रहती है। मायके आई हुई है, छुट्टियों पर। श्रेया ने पियू को मिलते ही अथर्व की ओर इशारा करते हुए पूछा, “यह तुम्हारे पति हैं?' पियू को अटपटा लगा और उसने संकोच के साथ उत्तर दिया, “नहीं, मिलो ना अथर्व से। दोस्त है मेरा।” तपाक से श्रेया बोली, “ओह! हाँ तुम्हारा तो कई साल पहले तलाक हो गया था ना! क्यों उसके बाद शादी नहीं की? कुछ परेशानी है क्या जो तलाक हो गया और अब तक अकेली हो?” यह सब अचानक इस तरह सुनकर पियू का मन जो हर्षित हो रहा था, समझ गया, ज़िंदगी आगे बढ़ गई है, परन्तु लोग आगे बढ़े ही नहीं। सोच अभी भी वही है।

पियू का मन आहत है। न कुछ बोलते बन रहा है न चुप रहते। दर्द की एक सुराही जो किसी कोने में बंद कर दी थी फिर से फूट पड़ी। हर बार ऐसा ही कोई तंज इसी तरह चोट कर जाता है। समझने वाली बात है, क्यों किसी को जानना है कि बंद दरवाज़े के पीछे ऐसे क्या वाकिये हुए कि एक रिश्ता टूट गया? जब साहरा चाहिए था तब किसी को कुछ नहीं जानना था। आज जब उस कड़ी का अंत हो चुका है, आगे बढ़ने की कोशिश हो रही है तभी सभी को कहानी जाननी है। केवल स्वाद की अनुभूति के लिए। यह कैसा न्याय है? शब्द जैसे पियू के गले में आकर फँस गए और आँखों से आँसुओं का बाढ़ रोके नहीं रुक रहा। अथर्व को पियू का यह दर्द भीतर तक झँकझोर गया। वह आगे बढ़कर श्रेया पर तंज कसते हुए बोला, “पिछले इतने सालों में पियू से आपका नाम तक नहीं सुना। अगर पता होता कि आपको उसकी इतनी चिंता है तो पहले संपर्क करते।” इतना कहकर अथर्व ने पियू का हाथ थमाते हुए

कहा, "इनकी वकालत पता नहीं कब समाप्त होगी, लेकिन हमें देरी हो रही है, चलो यहाँ से।" पियू का हाथ थामे चुप-चाप जलसे से निकल गया। दोनों सड़क पर वैसे ही चल पड़े। अथर्व गुस्से से भरा हुआ है। गुस्सा, पियू की बेइज़्ज़ती पर, कुछ अपने बीते हुए सालों पर, हर उस पल पर जिसने उसे तोड़ा था। इधर पियू भी चुप-चाप चल रही है, आँखों से आँसू गिरे जा रहे हैं। तभी एक आँसू का बूंद अथर्व के हाथ पर गिरा और उस बूंद ने जैसे ज्वालामुखी का काम किया। अथर्व के दर्द और गुस्से को सहन करने की शक्ति जैसे क्षय हो गई। उसके मन का सैलाब इतना ऊँचा और बुलंद है जैसे उसे ही डूबा रहा हो। और वहीं पियू की शक्ल पर जो दर्द है उसने अथर्व के मन में इस विचार को और अटल कर दिया है कि अब वह पियू को इस तरह अकेले नहीं रहने दे सकता। यह हाथ थामे जो बढ़े जा रहा है, यही करना ठीक है। बिना ज़्यादा कुछ भी सोचे वह अपने घुटनों पर बैठ गया, वहीं बीच सड़क। पियू इतना डूबी हुई है अपने भावों में कि उसे लगा शायद अथर्व गिर गया और वह उसे सहारा देने के लिए थोड़ा झुकी। अथर्व ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, उसके बालों में उंगलियाँ फेरते और आँसू पोछते हुए कहा, "बॉन्ड! मुझसे शादी कर ले। मैं यह हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ूँगा। यह दोस्ती हमेशा रहेगी, बस ज़िंदगी साथ बाँट ले।" पियू हड़बड़ा गयी क्योंकि ऐसा यकायक होगा उसे अनुमान नहीं था। लेकिन यह बात सुनकर जैसे वह भी बिखर पड़ी। बिखरी है उन मोतियों की तरह जिसे वह चाहती है अथर्व हमेशा के लिए अपने मुट्ठी में संजोह कर रख ले। बिखरी है उस रेत सी, जो अथर्व के साये के समुंदर में घुल जाना चाहती है। बीच सड़क जब अथर्व ऐसे घुटनों पर बैठे पियू से हाथ थामने की गुज़ारिश कर रहा है वहीं पियू फूट-फूट के रो रही है। दर्द, अकेलापन इंसान को हर दिन तोड़ता है। दोबारा जब मन भरोसा करने के लिए तैयार होता है तब

उस भँवर को रोकना किसी बाँध के बस का रोग नहीं। अथर्व ने माहौल को हल्का करते हुए कहा, “जल्दी बता यार! ऐसे कॉन्क्रीट की सड़क पर घुटनों के ऊपर बैठना बहुत मुश्किल है। थोड़ी देर और बैठा रहा ऐसे तो घुटने फूट जाएंगे मेरे।” और दोनों हँस पड़े। आँखों से आँसू जो दुःख से बह रहे थे वह अब भी बह रहे हैं लेकिन अब मन में उमंग है और होंठ मुस्कुरा रहे हैं। पियू ने उसी तरह हँसते-रोते कहा, “तुम्हारे दिमाग पर सच में चोट है। पहली बार मिली थी तभी पता चल गया था। मेरी किताब लेकर भागने वाले थे। वह तो अच्छा हुआ मैंने अपनी किताब छीन ली। अब इंतज़ार करो, कल बताऊँगी, और फ़िलहाल चलो ऑटो लेते हैं। घर बहुत दूर है, इतना पैदल नहीं जा सकते।"

वहीं थोड़ी ही दूर, लगभग 100 कदम पर, चौक है। ऑटोरिक्शॉ मिलती है। अथर्व उठा और पियू का हाथ थामे चौक की ओर बढ़ गया। चौक पर एक ऑटोरिक्शॉ चालक से पूछा, “भैय्या जी जाएँगे फतेहपुरी छोड़ते हुए दरयागंज?” दिसंबर की ठंड में सारे ऑटो चलाने वाले एक छोटा-सा घेरा किए बैठे बातें कर रहे हैं और आग ताप रहे हैं। एक ऑटोरिक्शॉ चालक उठा और ऑटो की तरफ़ इशारा करते हुए आगे बढ़ गया। अथर्व, पियू का हाथ थामे उनके पीछे चल दिया। थोड़ी ही दूरी पर ऑटो खड़ी है। उसे बाहर सड़क पर मोड़कर, भैय्या उस पर बैठ गए और मुँह में पान दबाए अथर्व से बोले, “लपक के बैठ जाइए। हम लपक के छोड़ आते हैं फिर लपक के आग तापेंगे।” अथर्व ने मुस्कुराते हुए कहा, “चलिए भैय्या, लपक के स्टार्ट कीजिए अपनी शाही सवारी।” और ऑटो चल पड़ा। रास्ते में अथर्व और पियू को ज़्यादा कुछ बोलने की ज़रूरत नहीं है, ऑटो वाले भैय्या काफ़ी मनोरंजक हैं। मुँह में पान दबाए जाने कितनी बातें सूझ रही हैं उनको। अचानक पूछते हैं, “भैय्या जी

जहाँ दिल्ली के हो? जा बाहर से आए जहाँ रहने?” इससे पहले कोई जवाब आता, आगे बोलते गए, “आज कल सब इत्ते उत्ते से ही ज़्यादा लोग आए हैं, दिल्ली की सड़कों पे भीड़ बढ़ी ही जा री है! हम जब यहीं आए ना, कितने सालों पहले तो सड़कों पे इतनी भीड़ नहीं हुआ करती थी। वैसे हमाया नाम हुआ पियूस। जूपी (यूपी) वाले हैं हम। आप भी कुछ बताओ अपनी... दीदी को घूमने लाए थे? सर्दी के मौसम में रात को घूमने जाना वैसे तो ठीक नहीं दिल्ली में लेकिन इसका मजा मानो घूमकर ही पता चले है।” अथर्व ने मुस्कुराते हुए कहा, “अच्छा पियूस भाई, आप तो सच में इन दीदी के भाई ही हैं। इनका नाम हुआ पियू और आपका पियूस। हुए ना भाई बहन? और हमारे होने वाले साले साहब!देखो, रिश्ता है अब तो हमारा…” पियू शरमा गई। उधर पियूष तपाक से बोला, “सच कह रे हो भाईय्या? हैं दीदी? फिर तो सच में आप हमारी बहन लगी। जब भी लगे तो बस एक फोन घुमाना हम लपक के ले आएंगे ऑटो फिर जहाँ तहाँ ले चलेंगे जैसा बोलोगे।” अथर्व ने आगे पूछा, “तो साले साहब कौन-कौन हैं आपके घर में? रैन बसेरा है या बस मस्त मौला घूम रहे हो?” पियूष ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, “भाईय्या हमाया भी नया ब्याह हुआ है। लुगाई को लेकर आए हैं अपने साथ दिल्ली। भगाकर! गांव में जात-पात बड़ा माने हैं लोग। वो ऊँच जात और हम ठहरे गरीब, हाथों से कमाने वाले। कहाँ बात बनती। तो हमने बस फैसला ले लियो जो हाथ थामा है, जिसे मन लगाया है, उसे ऐसे न छोड़ेंगे बीच राह अकेला। चुपके से दो-चार कपड़े बाँधे, कुछ पैसे जमाए थे और ले आए। अब अपनी छोटी-सी दुनिया बसाने की कोसिस है। भाईय्या जी एक और बात कहें, चाहे एक रोटी कम हो खाने को, लेकिन उसका साथ न बहुत ठंडक देता है मन को। लगता है बस जहीं है जिन्दगी। अच्छा आप लोगों का ब्याह कब है? हमें ज़रूर

बुलाइएगा।” अथर्व ने हँसते हुए हामी भरी। पीयुष ने कुछ प्यार भरे गाने चला दिए स्पीकर में और ऑटो चलता गया पियू के घर की तरफ़। अभी पीयुष ने अपनी एक छोटी सी कहानी सुनाई जो बहुत दुर्लभ नहीं है, रोज़ ऐसे होता है देश भर मे लेकिन उसमें बसे हुए प्यार के बंधन की गहराई में बहुत ताक़त है। पियू और अथर्व दोनों के दिलों में यही बात अटक गई है। कैसे प्यार हो तो सब खुद-ब-खुद ठीक लगने लगता है। प्यार दोनों को पहले भी हुआ है और उसका दर्द भी दोनों ने महसूस किया है, फिर भी दिल दोबारा किसी का हाथ थामना चाह रहा है, दोबारा किसी के साथ जीवन साझा करने का इरादा है। शायद इतना ही सरल है प्रेम, या फिर बहुत ही जटिल।”

इन्हीं भावनाओं की उढ़ेद्बुन में पियू का घर आ गया। पियू के पापा दरवाज़े पर ही इंतज़ार कर रहे हैं। पियू ऑटो से उतरी और पीयुष ने गानों की आवाज़ धीमी कर दी। दूर से ही अथर्व ने पियू के पापा को नमस्ते किया और पियू को देखकर कहा, "बॉन्ड! जवाब का इंतजार रहेगा।" पियू ने कुछ न कहते हुए केवल एक मुस्कुराहट के साथ अथर्व को देखा और घर की ओर मुड़ गई। पियू के पापा ने भी अथर्व को दरवाज़े से अलविदा किया। अथर्व ने पीयुष से कहा, "लपक के चलें अब मेरे घर, साले साहब?" पीयुष ने ऑटो घुमाई और बढ़ गए दरयागंज की ओर। अथर्व ने कुछ सोचते हुए ऑटो से बाहर झाँक कर देखा तो पियू वहीं दरवाज़े पर ही खड़ी है। शायद इसी उम्मीद में कि अथर्व पलटकर देखेगा। उस एक पल में जब अथर्व ने पलट कर देखा और पियू से निग़ाहें मिली, उसके दिल को पता चल गया की अगले दिन पियू का क्या जवाब आने वाला है। वह पल आया, गुज़रा और अपने पीछे गहरी अनुभूतियों की एक लहर छोड़ गया।

अथर्व को घर पहुँचने में देरी हो गई। धीरे से किवाड़ खोलकर घर में घुसा तो देखा कि माँ अब भी जागी हुई है। उसका इंतज़ार कर रही है। वैसे अथर्व ऐसे रात को देर से घूमता फिरता नहीं, लेकिन कभी-कभी देर हो जाती, तब माँ इंतज़ार करती हैं। उसे खाना खिलाकर ही सोने जाती है। माँ को देखकर अथर्व उनके पास जाकर बैठ गया। माँ ने पूछा, "खाना लगा दूँ?" उनके गोद पर सर रखकर बोला, "नहीं! पहले थोड़ा-सा सर सहला दो ना! बहुत मन कर रहा है।" माँ ने प्यार से उसके सर पर उँगलियाँ फिराई और आँखों के कोने से एक आँसू का बूँद छलक गया। वह दिन याद आए जब पूरा परिवार साथ था। अभी कल की ही बात है मानो, अथर्व अपने पापा के साथ बैठा कितनी बातें करता था। आज पापा साथ नहीं हैं और नंदिनी घर पर नहीं है। नंदिनी के घर पर न होने की वजह, माँ अपने आप को मानती है और कोसती है। चिकित्सकों की सलाह को भी नज़र अंदाज़ नहीं कर सकती। माँ के उस अनकहे दर्द को अथर्व ने भाँप लिया और दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह अब हालात सुधारकर ही रहेगा।

मन को उम्मीद की एक झलक भी मिल जाए, तो असंभव को संभव करने की ऊर्जा अपने आप पैदा हो जाती है। माँ से कहा, "माँ, अब खाना खिला दो। कल से बहुत कुछ बदलेगा। बहुत हो गया यह अँधेरा। अब फिर से दरवाज़े खुलेंगे, और हम सब मिलकर एक नई रौशनी देखेंगे। तुम चिंता मत करो। मैं सब ठीक कर दूँगा।" बेटे के इस विश्वास भरे शब्दों ने माँ के मन को गहराई से छू लिया। सुनंदा जी ने पिछले कुछ समय में अथर्व को हारते हुए देखा है। उनका डर नंदिनी को लेकर तो था ही, अथर्व को ऐसे टूटा हुआ देख वह घबरा जाती। कुछ बोलती नहीं परन्तु उनका हृदय अपने बच्चे का दर्द

भली-भाँती समझता और महसूस करता है। आज अथर्व की आवाज़ सुनकर उनका डर थोड़ा कम हुआ। उठी और रसोई की ओर जाते हुए बोली, "जाकर हाथ-मुँह धो ले, मैं अभी दो मिनट में तेरी प्लेट लगाती हूँ।"

जब तक अथर्व ने अपना भोजन पूरा नहीं किया, वह उसके साथ वहीं बैठी रही। दिन भर की बातें की और दोनों सोने चले गए। अथर्व को अगले दिन की व्याकुलता है। मन में गहरे विचार हैं, जिन्हें अब अमल में लाना है और इस अंधेरे को मिटाना है। रात्रि आधी-अधूरी नींद में कटी है और दूसरी ओर पियू का मन भी डर रहा है, साथ ख़ुश है। हर इतवार सुबह उठने के बाद अथर्व घर के कामों में जुट जाता है, लेकिन आज उसने पहले तैयार होकर नंदिनी से मिलने का फैसला किया। लगभग 10 बजे पहुँच गया केंद्र पर। पियू वहाँ केंद्र के बेरंग कपड़ों में, एक पेड़ के नीचे अकेली बैठी है। अथर्व जाकर दीदी के पास बैठा। नंदिनी ने शून्य दृष्टि और हल्की मुस्कान के साथ उसे देखा। अथर्व ने पूछा, "कैसी हो?" नंदिनी ने खुले आसमान की ओर ताकते हुए सर हिलाया। अथर्व ने सांत्वना दी, "बस! अब सब ठीक होगा।" और केंद्र के मुख्य-कार्यालय की ओर चला गया। नंदिनी की नज़रें आसमान में उड़ते पंछियों का पीछा करती रहीं। अथर्व ने जाकर चिकित्सकों से बात की। थोड़ी देर बाद लौटा और बोला, "घर की छत पर भी आसमान इतना ही खुला दिखता है। तुम्हारे बिना घर खाली लगता है। चलो घर चलते हैं, साथ में आसमान देखेंगे।" नंदिनी ने असमंजस भरी निगाहों से अथर्व को देखते हुए धीरे से बोली, "नहीं! वहाँ नहीं… वहाँ सब चले जाएँगे। एक-एक करके.. कोई ले जाता है सबको।" कहते हुए अथर्व से दूर सरकने लगी। अथर्व ने बहुत गंभीरता से उसकी ओर देखकर उसके हाथ पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम ना

चाहो तो कोई कहीं नहीं जाएगा। स्पर्श भी तो है तुम्हारे साथ अभी भी। कोई ले जा सका उसे तुमसे दूर?" नंदिनी की आँखें बड़ी हो गई इस बात को सुनकर। वह मूक देख रही है अथर्व को। आगे बोला, "इसलिए बोल रहा हूँ, चलो अपनों के पास वापस। सब तुम्हारे हैं और सब तुम्हारे साथ हैं।" नंदिनी ने फिर कुछ नहीं कहा। अथर्व उसका हाथ थामे कमरे की ओर चल पड़ा जहाँ नंदिनी रुकी है । उत्साहित एवं संतुष्ट है कि आज उसका पहला कदम सफ़ल रहा। सोच रहा है कि छोटा-सा था यह पड़ाव, केवल कदम आगे बढ़ाने की देरी थी। काश पहले ही हिम्मत कर ली होती। अपनी ही दीदी से तो कहनी थी यह बात जो इतने सालों में नहीं कही। वही दीदी जिसके सीने से लगकर माँ के छुअन की अनुभूति होती थी। कमरे में पहुँचा तो वहाँ कर्मचारी नंदिनी का सामान बाँध रहे थे। एक महिला कर्मचारी ने नंदिनी से कहा, "नंदु! भाई नहीं, बाप आया है तुझे लेने। तेरी सब चिंता ख़त्म। समझी! अपने घर जा..सब ठीक होगा।" इन वाक्यों ने अथर्व के हृदय पर गहरी छाप अंकित कर दी। एक विशिष्ट उत्तरदायित्व का असर अपने मन पर महसूस हुआ। आज तक नंदिनी ने माँ की भूमिका निभाई थी, और आज अथर्व को एक पिता जैसा दायित्व महसूस हुआ। कहा, "दीदी! जल्दी से कपड़े बदलो, मैं बची हुई औपचारिकताएँ पूरी करके आता हूँ। फिर घर निकलेंगे। माँ को कुछ नहीं पता अभी तक, उनके सामान जाकर उनको चौंका देंगे।" बोलकर वह मुख्य-कार्यालय की ओर चला गया। इधर नंदिनी ने भी कपड़े बदल लिए। उसको अथर्व की बातों पर भरोसा है जिस तरह उसने हाथ थामा और आँखों में देखकर वह नाम लिया जो इतने सालों से उसके भीतर बसा हुआ है।

अथर्व ने दस्तावेज़ी औपचारिकताएँ पूरी कर लीं। दवाइयों की हिदायतें ध्यान से सुनने के बाद, नंदिनी के साथ घर की ओर रवाना हुआ। वही पियूष भैया आए हैं, अथर्व के साथ अपनी ऑटो से। सुबह अथर्व ने उनको फ़ोन करके बुलाया था। वैसे तो पियूष को दीन-दुनिया की बातें सूझती हैं लेकिन जैसे ही नंदिनी और अथर्व ऑटो में बैठे, वो चुप हो गया। उसे परिस्थितियों को समझने में देर न लगी। ऑटो चल पड़ा। थोड़ी दूर जाकर अथर्व ने खुद ही बात छेड़ी। पियूष की ओर ऑटो के काँच से देखते हुए बोला, "पियूष जी! यह हैं मेरी दीदी नंदिनी। दुनिया की सबसे बेस्ट बहन हैं।" पियूष थोड़ा सहज हुआ और बोला, "हैं दीदी? आप भैय्या की दीदी हुई तो हमारी भी दीदी हुई। हम पीयुस। जहाँ ऑटो चलाते हैं। कभी जरूरत हो तो कॉल कीजिएगा, हम लपक कर आ जाएंगे ऑटो लेकर। जैसे भैय्या के पास है ना नंबर।" फिर अथर्व की ओर इशारा करते हुए बोला, "भैय्या दीदी को नंबर दे देना, हम भी तो अब उनके भाई ही हुए।" अथर्व ने मुस्कुराकर हामी भरी। नंदिनी की नज़रें दौड़ती हुई सड़क पर टिकी रही। कैसा भूलभुलैया है चक्षुओं का! हम आगे बढ़ रहे हैं या यह सड़क पीछे छूट रही है?

कुछ समय में घर आ गया। ऑटो से उतरकर नंदिनी वहीं किनारे ही खड़ी रही। अथर्व ने सारा सामान पियूष की मदद से उतारा, पैसे दिए, और सामान उठाकर घर के दरवाज़े की ओर बढ़ा। कुछ कदम चलने के बाद पीछे मुड़कर देखा, तो नंदिनी साथ नहीं आई; वह वहीं खड़ी है। अथर्व को उसकी झिझक और अंदर छिपा असमंजस साफ़ महसूस हो रहा है। सामान देहलीज़ तक ले जाकर रखा और नंदिनी के पास लौटकर आया। उसका हाथ थामते हुए कहा, "दीदी! अपने घर से कोई डर नहीं होता। यहाँ अच्छा बुरा सब अपना होता है

क्योंकि यहाँ सभी अपने होते हैं। वैसे भी तुम्हारा कमरा माँ रोज़ साफ़ करती है, चलो मैं हूँ ना साथ!"

आज नंदिनी ने अथर्व में एक बड़े भाई और पिता की छवि देखी। वह छोटा सा अथर्व जो दीदी का हाथ थामे उनके आगे पीछे घूमता था, कहीं कुछ साल पहले ग़ुम गया था, आज हाथ थामे भरोसा दिला रहा है। नंदिनी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी दृष्टि के गहरे किसी कोने में अथर्व पर विश्वास झलक उठा। अथर्व का हाथ थामे हुए, नंदिनी ने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाए। घंटी सुनकर माँ ने दरवाज़ा खोला और सामने नंदिनी को खड़ा देख रो पड़ी। सुनंदा जी के जीवन में एक आँधी ने समय के साथ सब कुछ बिखेर दिया था। आज एक छोटी-सी आशा को बँधते देखकर, भावनाओं की बाँध टूटने को तैयार है। उन्होंने कोई सवाल, कोई जवाब नहीं किया। नंदिनी को गले से लगाया और अथर्व के सर पर प्यार से हाथ फेरा।

नंदिनी घर में घुसते ही सीधे पापा के कमरे की ओर गई। वहाँ पापा की एक हँसती हुई तस्वीर लगी है। उस पर माला चढ़ी है। पहले कमरे में घुसने में थोड़ा हिचकिचाई। वहीं दरवाज़े से अंदर झाँकने लगी। माँ ने पीछे से आकर उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "जाने वाले का शरीर चाहे चला जाए, वो यहीं होता है हमारे आस पास। ख़ुशी से उसे याद रखो ताकि तुम्हारी ख़ुशी उन तक पहुँच सके।" नंदिनी ने बिना पलटे ही माँ की बात सुनी। कुछ छोटे कदम लिए कमरे के अंदर और पापा की तस्वीर के सामने खड़ी हो गई। कुछ पल देखती रही फिर हाथ बढ़ा कर माला उतार कर वहीं बगल में रख दी। निहारती रही तस्वीर को और मुड़कर अपने कमरे की ओर चली गई। अथर्व ने चुपचाप यह सब कुछ होते देखा। नंदिनी के कमरे में जाने के बाद उसने माँ को सहारा

देते हुए कहा, "माँ! यह एक छोटा-सा कदम था, सब ठीक होने की शुरुआत है। आज से पापा की तस्वीर पर माला नहीं चढ़ेगी। हम सब पापा को वैसे ही याद रखेंगे जैसे वह हमारे साथ थे।" जेब से कुछ दवाइयों की पर्चियाँ निकालकर दवाइयाँ लेने निकल गया। माँ अपने रोजमर्रा के घरेलू कामों में लग गई। आज बहुत समय बाद परिवार साथ है। सुनंदा जी का घरोंदा फिर शायद तिनका-तिनका जुड़ने लगा है जो समय की आँधी में तितर-बितर हो गया था।

नंदिनी अपने कमरे में गई और अपने सामान से वही काली डायरी निकालकर बिस्तर के सिरहाने पर रख दिया। एक घूँट पानी पिया और खिड़की के पास जाकर बैठी। माँ ने इतने समय में, जब नंदिनी घर से दूर थी, उस कमरे को ऐसे ही रखा जैसे नंदिनी रहती है। रोज़ पानी भर कर रखना, सफ़ाई करना। कभी मन दुःखी होता तो सामान को उलटना पलटना और दोबारा समेटना। आज जब नंदिनी वापस आई है तो कमरा वैसा ही है, उसके जैसा, जैसा उसे पसंद था हमेशा से, वैसा। इन्हीं सब में दिन ढ़ल गया। अथर्व को समय नहीं मिला पियू से संपर्क करने का। संदेश भेजकर मिलने की बात तय कर ली। शाम को वहीं रियाज़ भाई की टपरी के पास मिलना है। आज जीवन में शायद एक कदम और आगे बढ़े। इसी आनंद और आशा से भरा हुआ वह शाम को समय पर पहुँच गया। पियू अभी पहुँची नहीं है। अथर्व को लगा कहीं यातायात में अटक गई होगी। उसका मन उतावला हो रहा है पियू से मिलने के लिए। 2-3 बार पियू को फ़ोन भी लगाया परन्तु कोई उत्तर नहीं आया। करीब 1.5 घंटे बाद दूर से पियू आती दिखी। उसकी पलकों में छिपी बेचैनी कुछ कहने को आतुर है, मगर होंठ खामोश हैं। अथर्व ने पियू की असहजता भाँप ली। आँखों

को देखकर समझ गया कि बहुत देर तक रोई है। उसने कुछ प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। रियाज़ को आवाज़ देते हुए कहा, “भैय्या एक और स्पेशल वाली चाय लाइए।” पियू ने दबी आवाज़ में "हाय!" कहा और बेंच पर बैठ गई। चाय आई, लेकिन अभी तक कोई बातचीत नहीं हुई। पियू उलझन में है, समझ नहीं पा रही कि क्या बात करनी है और कहाँ से शुरुआत करनी है। अथर्व भी उस पर कुछ थोपना नहीं चाहता। उसकी हालत, शक्ल से साफ़ झलक रही है, इसलिए अथर्व ने एक कदम पीछे ही रखा। फिर चाय की 2-4 चुस्कियों के बाद अथर्व ने पहल करते हुए कहा, "ओए बॉन्ड! इतना स्ट्रेस मत ले। पति नहीं तो क्या हुआ, बेस्ट फ्रेंड तो मैं ही हूँ तेरा। समझी! चल अब रोनी शक्ल बदल कर मुस्कुरा दे।" पियू ने गहरी नजरों से उसकी ओर देखा, और उसकी पलकें नम हो गईं। रुआँसी आवाज़ में बोली, "तुम्हारा बनने में कोई हर्ज़ नहीं है, बस डर इस बात से है कि यदि तुम्हारे अपनों ने मुझे नहीं अपनाया तो?" इसके आगे कुछ नहीं बोल सकी। उसका अस्वीकृत रहने का डर स्पष्ट झलक उठा। अथर्व ने मुस्कुराते हुए कहा, "ये ले! इस बात पर रो रही थी? क्या बॉन्ड! तू भी! अच्छा सुनो अभी मैं कुछ देर में तुमको घर छोड़ देता हूँ। तुम घर जाकर अपना ग़ुलाबी वाला सूट तैयार करो। मेरी माँ को भी ग़ुलाबी रंग बहुत पसंद है। मैं यह निमंत्रण इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि कल तुमको साक्षात मेरी माता के हाथों का लज़ीज़ खाना चखने का मौका मिलने वाला है। कल लंच मेरे घर पर, मेरे परिवार के साथ।" पियू थोड़ा हिचकिचाहट में बोली, "मगर… उनको.. मतलब.." अथर्व ने कहा, "कोई मतलब नहीं। मुझसे पहले उनकी बनकर देखो जो मेरे अपने हैं। अगर बन पाई तो ठीक वर्ना जो तुम कहो वही।" फिर थोड़ी देर यूँही बातें हुई और अथर्व ने उसे घर तक छोड़ दिया। आज घर की ओर

जाने से पहले पियू ने धीरे से अथर्व को गले लगाया और चली गई भागकर घर के अंदर। अथर्व ने हल्की मुस्कान के साथ घर की ओर कदम बढ़ा दिए।

घर पहुँचकर अथर्व माँ और नंदिनी के साथ खाना खाने बैठा। खाना खाते हुए उसने पियू के बारे में बात छेड़ी। पियू के बारे में थोड़ा-बहुत सुनंदा जी को पता है क्योंकि बहुत घनिष्ठ दोस्त थे फिर वापस दिल्ली आने के बाद भी अथर्व कई बार मिलने जाता है मगर बहुत विस्तार में कुछ नहीं जानती थी। अथर्व ने बात बढ़ाते हुए कहा, "माँ! पियू को तो जानती हो ना तुम। एक बार घर आकर तुमसे और दीदी से मिलना चाह रही है। अगर तुमको ठीक लगे तो… खाने पर बुलाऊँ?" माँ ने दबी हुई मुस्कुराहट के साथ अथर्व की ओर देखा। इससे पहले ऐसे किसी दोस्त के घर आने की अनुमति नहीं माँगी। माँ ने भी व्यंग्य करते हुए कहा, "अच्छा! ठीक है कभी बुलाओ, हम भी मिल लेंगे, क्यूँ नंदिनी? तुम क्या बोलती हो?" नंदिनी ने हामी में सर हिलाया और इतने में अथर्व ने तपाक से कहा, "हाँ! फिर ठीक है कल लंच पर बुला लेता हूँ। मैंने तो उसे बता दिया है कि आप बहुत अच्छा खाना बनाती हो।" माँ ने कहा, "अच्छा! तो पहले से ही तय हो चुका है कल का लंच?" माँ हँस पड़ी। अथर्व सकुचाया। भोजन करने के पश्चात् सभी अपने कमरों में चले गए। अथर्व सोने से पहले नंदिनी के कमरे में गया और पर्ची में लिखी नियमित दवाइयाँ नंदिनी के हाथ में रखा। नंदिनी ने कहा, "बाद में खाती हूँ! तू जा..." अथर्व ने पानी की बोतल भर दी और अपने कमरे की ओर चला गया।

आज लंबे अरसे के बाद सोने से पहले चेहरे पर एक सुकून है और बेसब्री से इस रात के ख़त्म होने का इंतज़ार भी। कल होने वाली नयी सुबह का इंतज़ार, और उस सुबह से जुड़ी एक नयी उम्मीद का इंतज़ार। सुबह, अथर्व

की नींद जल्दी खुल गई। उठकर सबसे पहले माँ के पास दौड़ा, पूछने की कहीं कुछ सामान मंगवाना है दिन के भोजन के लिए। माँ उसका उत्साह देखकर मुस्कुराई। फिर वह नंदिनी के कमरे की ओर बढ़ा। नंदिनी कमरे में नहीं है। अथर्व एक पल के लिए घबरा गया और नंदिनी को आवाज़ दी। जब उसकी 1-2 आवाज़ें माँ के कानों में पड़ीं, तो माँ ने बताया कि नंदिनी छत पर गई है। अथर्व छत की ओर गया और जहाँ सीढ़ियाँ ख़त्म होती हैं वहीं रुक गया। नंदिनी दिखी, खुले आसमान की ओर निहारती हुई। लगा मानो वह पंछियों के साथ गगन में उड़ जाना चाहती है। आसपास गेहूँ चावल के कुछ दाने बिखरे हैं। शायद उसने ही डाले हैं। कुछ पंछी धीरे-धीरे आते, थोड़ी देर चुगते और उड़ जाते। नंदिनी आज खामोश नहीं, शांत दिख रही है। कई दिनों बाद अपनों के साथ अपने घर में रात बिताई है, शायद यही कारण है। अथर्व ने उसे देखा और चुप-चाप दबे पाँव वापस नीचे आ गया।

तैयार हुआ और निकला पियू से मिलने। माँ ने पूछा, "कब तक वापस आओगे? वैसे तैयारी लगभग सब हो चुकी है।" अथर्व ने उत्तर दिया, "बस आधे-एक घंटे में आ जाएँगे" और निकल गया। पियू के घर तक गया है उसे लेने। गेट के बाहर कुछ पल इंतज़ार किया, तभी पियू अपने बाबा के साथ सामने से आती हुई नज़र आई। अथर्व ने पियू के पापा को नमस्ते का इशारा किया। पियू ने कुछ कदम आगे बढ़ाए और पलट कर अपने बाबा की ओर देखा, कुछ बात की और निकल आई। अथर्व, पियू के साथ घर की ओर चल दिया। रास्ते में बातचीत हो रही है, उसी में अथर्व ने पूछा, "घर पर क्या बता कर आई हो?" पियू ने धीरे से उत्तर दिया, "बाबा को बताया मैंने, जो हमारी बात हुई।" अथर्व थोड़ा चौंका और कौतुहलता में पूछा, "सच! क्या कहा

उन्होंने?" पियू ने बताया, "इस बार भी उन्होंने मुझ पर भरोसा दिखाया। एक ही बात कही, कि वही होगा जो तू चाहेगी।" अथर्व ने माहौल को थोड़ा हल्का करते हुए कहा, "तो जाकर कह दो ससुर जी को, पियू अथर्व को ही चाहती है।" पियू शरमाती हुई मुस्कुराई। देखते-देखते घर आ गया। अथर्व ने दरवाज़े पर दस्तक दी, और कुछ ही पलों में सुनंदा जी ने दरवाज़ा खोल दिया। पियू आज से पहले अथर्व के परिवार में किसी से मिली नहीं थी। सामने सुनंदा जी एक मुस्कुराहट के साथ खड़ी दिखी। पियू उनके पैर छूने के लिए झुकी तो सुनंदा जी ने उसे गले से लगाते हुए कहा, "हमारे यहाँ बेटियाँ पैर नहीं छूतीं।" सुनंदा जी की यह पहली बात पियू के दिल को छू गई। सभी जाकर साथ में बैठे। थोड़ी सामान्य बातचीत हुई जैसे पियू के परिवार में कौन-कौन है, वह क्या करती है, कहाँ रहती है, सुनंदा जी की रोज़मर्रा की ज़िंदगी में क्या चलता है। अथर्व ने ज़्यादा बातें नहीं की, केवल माँ और पियू की बातचीत सुनकर प्रसन्न हो रहा है। कुछ देर बाद अंदर गया और नंदिनी के साथ बाहर आया। पियू जानती थी नंदिनी के बारे में, उतना ही जितना अथर्व ने बातों-बातों में बताया था। इतने सालों की जान पहचान है तो कहीं-न-कहीं परिवार के लोगों के बारे में भी समय के साथ पता चलता है। नंदिनी आकर बैठी और पियू की ओर देखकर मुस्कुराई, कुछ कहा नहीं। अथर्व ने परिचय करवाते हुए नंदिनी से कहा, "दीदी, यह पियू है।" नंदिनी ने केवल सर हिलाया। दो पलों की ख़ामोशी के बाद पियू ने ही पहल की और नंदिनी से कहा, "दीदी! आपकी बहुत बातें करता है। मुझे काफ़ी समय से मन था आपसे मिलने का, और आज मिल भी लिए। बहुत अच्छा लगा, सच में।" नंदिनी ने एक बार अथर्व की ओर देखा, फिर माँ की ओर और मुस्कुराई। तभी पियू की नज़र दीवार से सटे एक अलमारी पर पड़ी जिसमे कई तरह की किताबें रखी हुई हैं। पियू स्वयं को रोक

नहीं पाई और अलमारी की ओर उत्साह से इशारा करती हुई बोली, "इतनी सारी किताबें और इतने अच्छे लेखकों की! किसे पढ़ने का शौक है?" सुनंदा जी ने उत्तर दिया, "आरू के पापा को साहित्य का बहुत शौक था। वही किताबें मंगवाते थे। कई बार तो आरू भी ले आता था, यहाँ किताब बाज़ार से। अब उनके बाद मैं अपना ख़ाली समय इन्ही किताबों के साथ बिता लेती हूँ। वैसे तुमको मन हो तो बेझिझक कोई भी किताब उठा लेना।" अथर्व ने माँ की बात को आगे बढ़ते हुए कहा, "माँ, पियू को भी पढ़ने का बहुत शौक है। और बात यहाँ तक है कि पहली बार मैं और पियू किताब बाज़ार से लौटते समय ही टकराये थे।" फिर पियू की ओर देखकर कहा, "याद है जेम्स बॉन्ड, मुझसे किताब छीन ली थी तुमने।" दोनों हँस पड़े। माँ ने तभी कहा, "हाँ तू तो वैसे अपनी कोई बातें बताता नहीं। और सुन उम्र भी हो गई है अब तेरी। कोई है जो तेरी बातें सुनने को तैयार है तो बता दे वरना रेखा बुआ ने बताये हैं कुछ रिश्ते। क्यों पियू! ठीक कह रही हूँ की नहीं?" पियू शर्मा गई और अथर्व ने मौन रखा। थोड़ी हिम्मत जुटा कर सीधी बात बोल दी। कहा, "माँ उसी के लिए चाहता था आप सब लोग एक बार मिल लें। मतलब पियू भी मिलना चाहती थी बहुत समय से। मतलब मैं ..." माँ ने कहा, "ओह अच्छा! तो बात यह है। तभी सुबह से खाने की इतनी तैयारी करवा रहा है। तो बेटा जी... यह सब बातें अब घर वालों से होगी। वैसे पियू तो हमें बहुत प्यारी लगी। अब तुम बताओ पियू, हम तुम्हें कैसे लगे?" इससे पहले कोई और बात होती, पियू ने गंभीरता से सुनंदा जी से एक बात कही, "आंटी जी, अथर्व ने बताया या नहीं लेकिन मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ।" एक पल की शांति और आगे बोली, "मैं एक डिवॉर्सी हूँ। पहले शादी कर चुकी हूँ, 6 महीनों के लिए, मार खा चुकी हूँ, बेइज़्ज़त हुई हूँ, कई बार और जिस दिन सहन करने की शक्ति ख़त्म हो गई,

उस दिन सब समेट कर उस ज़िन्दगी से निकल आई। चाहती हूँ आप मेरे बारे में सब जान लें और फिर ही हम आगे कोई बात सोचें। मन में कोई हिचक नहीं रहनी चाहिए।" सुनंदा जी ने कुछ पल पियू की ओर गौर से देखा। अथर्व भी स्तब्ध है। वह घर पर यह बात बताता ज़रूर परन्तु उसने सोचा नहीं पियू बात इस तरह से सामने रखेगी। नंदिनी की भी नज़रें पियू पर रुकी। पियू भी ख़ामोश सिर झुकाए बैठी है। सुनंदा जी ने गंभीरता से उत्तर दिया, "मुझे तुम पर गर्व है पियू। रिश्ते जब बेड़ियाँ बन जाएँ तो उनको तोड़ देना ज़रूरी होता है। लेकिन इसे तोड़ने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए। तुमने वह हिम्मत दिखाई।" फिर अथर्व की ओर देखते हुए बोली, "आरू, हमें बहुत अच्छी लगी पियू। अब तुम उससे पूछ लो हम उसे कैसे लगे तब तक मैं खाना लगाती हूँ।" नंदिनी इधर अब भी एकटक पियू की ओर देख रही है। पियू नंदिनी के पास जाकर बैठी, तो नंदिनी थोड़ा असहज हुई और नज़रें इधर-उधर हटाने का प्रयास करने लगी। पियू ने नंदिनी का हाथ धीरे से छुआ और बोली, "दीदी! मेरे मन में ढ़ेरों बातें है, लेकिन सुनकर उन बातों को समझने वाला कोई नहीं। आपको देखकर लगता है, मेरी बातें समझ पाएँगी आप।" नंदिनी ने पियू की ओर देखा और 'हाँ' में सर हिलाते हुए मुस्कुराई। अगर कोई अजनबी नंदिनी के आसपास आना चाहे फिर वह पड़ौस की कोई महिला ही क्यों न हो, उसे असहज लगता है और वह पीछे हट जाती है। किन्तु आज उसने पियू का थामा हुआ हाथ छुड़ाया नहीं। माँ ने आवाज़ दी, "चलो-चलो जल्दी आओ, खाना लगा दिया है।" सभी भोजन की मेज़ के चारों ओर कुर्सियों पर बैठे और माँ खाना परोसने लगी। पियू ने मदद करने का आग्रह किया, तो माँ ने प्रेम से कहा, "आज पहली बार है, मेरे हाथों से परोसूंगी, अगली बार से तुम हाथ बटा देना।" पियू के मन

में जाने कहाँ से पुरानी बातें आ गई थीं जब शेखर के घर में पूरे परिवार के साथ खाने की मेज़ पर अजनबी सी बैठी रहती थी।

भोजन के बाद, नंदिनी अपने कमरे में चली गई और जाते समय आगे बढ़कर पियू का हाथ पकड़ा और कहा, "फिर आना!" अथर्व और सुनंदा जी, नंदिनी के इस व्यवहार से बहुत ख़ुश हुए। उन्हें प्रतीत हुआ कि कुछ समय में ही पियू का व्यवहार नंदिनी को छू गया। थोड़ी देर बैठने के बाद पियू जाने के लिए उठी। सुनंदा जी के पास जाकर बोली, "आंटी जी, अब चलती हूँ, घर पर सब इंतज़ार कर रहे होंगे। आप सबसे मिलकर बहुत अपनापन लगा।" सुनंदा जी मुस्कुराकर बोली, "जल्दी ही घर वालों से मिल लेते हैं। और यहाँ आती जाती रहना।" अथर्व पियू को घर तक छोड़ने के लिए साथ निकला।

दोनों रास्ते भर, घर में हुई बातों की ही चर्चा करते रहे और इन्ही बातों में पियू का घर आ गया। पियू ने आज दरवाज़े पर अथर्व से अलविदा नहीं लिया, साथ घर आने को कहा। पियू ने जैसे ही घर की देहरी पर आहट की, रूपा जी ने झट से द्वार खोल दिया।। बहुत नम्रता से अथर्व का स्वागत किया और बैठने का आग्रह किया। पियू के चेहरे पर प्रसन्नता स्पष्ट झलक रही है। रूपा जी ने दोनों से बैठने को कहा, और सागर जी को आवाज़ दी, "सुनिए! पियू और अथर्व आए हैं। ज़रा बाहर आइए।" अथर्व की ओर देखते हुए कहा, "बेटा, आप लोग बैठो, मैं अभी पानी लेकर आती हूँ।" सागर जी जैसे ही बाहर आए, अथर्व ने खड़े होकर उनको नमस्ते किया। वह साथ बैठ गए। इतने में रूपा जी सभी के लिए पानी के गिलास ले आई। रूपा जी ने बात शुरू करते हुए अथर्व से पूछा, "बेटा, घर में सब ठीक है? आज सबको पियू से मिलकर कैसा लगा?" सागर जी ने रूपा जी की ओर देखकर कहा, "अरे रुको-रुको! इन्हें साँस तो

लेने दो। आते ही सवाल पूछने लगी।" रूपा जी की छटपटाहट बिना किसी आवरण के दिखाई दे रही है। माँ हैं, बेटी की ज़िंदगी बहुत सरल नहीं रही। फिर एक नया जुड़ता रिश्ता, घबराहट होना लाज़मी है। पानी पीकर, अथर्व ने आगे बढ़कर रूपा जी से कहा, "माँ, आप सब से मिलना चाह रही हैं। आप लोगों को जब समय मिले और ठीक लगे, आप बता दीजिए। हम मिल लेंगे।" रूपा जी उठने को हुई तभी अथर्व ने कहा, "नहीं-नहीं, अब मैं चलता हूँ। मैं बाद में आऊँगा। अभी ज़रा जल्दी है।" सबसे अलविदा लेकर, अथर्व अपने घर चला गया।

अथर्व के जाने के बाद, पियू अपने कमरे में चली गई। रूपा जी की कौतुहलता शांत नहीं हुई। वह अपने ढेरों सवालों के साथ पियू के पीछे उसके कमरे में गई। पियू हाथ-मुँह धो ही रही है इधर माँ का सवाल आया, “क्या-क्या बात हुई, बता जरा?” पियू ने वहीं से कहा, “बताती हूँ! रुको।” कपड़े बदल कर आराम से बैठी और माँ के गोद पर सर रखकर लेट गई। “हाँ माँ! अब बोलो क्या बोल रही हो इतनी देर से?” रूपा जी ने पियू के बालों में हाथ फेरते हुए पूछा, “बस एक जवाब बता कि तेरा मन क्या कहता है? सबसे तो मिली है ना?” पियू कुछ देर माँ की ओर देखकर मुस्कुराई और कहा, “लौटते समय एक पल को आने का मन नहीं किया। खाना खाते वक़्त अपनों के बीच बैठने जैसा महसूस हुआ।” वैसे तो एक ही जवाब देने को कहा था लेकिन इस जवाब को सुनते ही माँ ने अगला सवाल पूछ लिया।

“वह.. उसकी बहन.. क्या नाम बताया था?”

“नंदिनी दीदी”

"हाँ! नंदिनी। उससे मिली? तुझे क्या लगा मिलकर?"

पियू ने थोड़े अनमाने ढंग से उत्तर दिया, "क्या लगेगा माँ? मिली उनसे, ज़्यादा बातें नहीं हुई लेकिन बहुत अच्छी लगी मुझे। और तुम ज़्यादा मत सोचो।" फिर उठकर बैठी और माँ का हाथ थामते हुए बोली, "माँ इस बार मन कहता है सब ठीक होगा। आप लोग भी मिल लीजिए फिर देखते हैं आगे क्या करना है। लेकिन तब तक सवालों को झोले में बंद करो और मुझे थोड़ी देर सोने दो। इतना खाना खिलाया है आंटी जी ने कि मेरे गले तक खाना भरा हुआ है और इतनी नींद आ रही है।" और अपनी चादर तान कर लेट गई। माँ कमरे का द्वार बंद करके चली गई। इसी बीच पियू ने जाने कितनी बार अपना फ़ोन देख लिया। इंतज़ार में थी कि अथर्व कब फ़ोन करेगा।

उधर, अथर्व का मन भी प्रफुल्लित है। घर पहुँचकर अपने कमरे में जाकर सबसे पहले पियू को फ़ोन लगाया। फ़ोन की पहली घंटी पर ही पियू ने फ़ोन उठा लिया।

"हैलो! बड़ी जल्दी पहुँच गए घर?"

"हाँ, बहुत जल्दी भी तो थी, तुमसे बात करने की।"

"अच्छा! इतनी जल्दी। कुछ ज़रूरी काम है क्या?"

अथर्व ने थोड़ी सी स्थिरता के साथ कहा, "बॉन्ड! क्या लगता है? अपनी लाइफ शेयर करेगी, हम शर्मा लोगों के साथ?" पियू ने दो पल की ख़ामोशी के बाद आहिस्ता से उत्तर दिया, "मुझे लगता है माँ-बाबा को अब तुम्हारे परिवार से मिलकर सब बातें कर लेनी चाहिए। वैसे आंटी और दीदी ने कुछ बताया मेरे बारे में?" "तुम सबको अपनी-सी लगी। तभी माँ ने तुम्हारे घरवालों

से मिलने की बात कही। चलो ठीक है, मिस संयाल, संयाल के साथ शर्मा जोड़ने की तैयारी करो। मैं सबसे बात करके मीटिंग फ़िक्स करता हूँ।"

कुछ ही दिनों में अथर्व ने सबकी राय लेकर एक इतवार की शाम को, पियू के घरवालों से मिलने का प्रबंध सुनिश्चित किया। अथर्व सुनंदा जी के साथ तय किए समय पर, पियू के घर पहुँच गया। संयाल जी और रूपा जी ने भी खुले मन से उनका स्वागत किया। मन में कुछ शंकाएँ हैं परन्तु उन्होंने जाहिर नहीं होने दी। कुछ देर साधारण बातें हुई फिर रूपा जी से रुका नहीं गया तो पूछ बैठी, "सुनंदा जी, आपको पियू के बारे में सब पता है ना?" अभी तक वैसी कोई बात किसी ने की नहीं थी। रूपा जी के अचानक किए हुए इस सवाल से कमरे में एक अजीब-सी चुप्पी का माहौल हो गया। संयाल जी भी उनको घूर कर देखने लगे। रूपा जी हिचकिचाते हुए बोली, "नहीं! मेरा मतलब सब बातें पहले ही साफ़-साफ़ होनी चाहिए। बाद में ..." उनकी बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि सुनंदा जी ने एक माँ के दिल में छिपी दुविधा भाँप ली। उन्हें रोककर बोली, "रूपा जी, पियू बहुत समझदार बच्ची है। जीवन में कुछ घटनाएँ हो जाती हैं जिस पर हमारा बस नहीं चलता। हमें पियू पर पूरा भरोसा है। और आज यह बात यहीं ख़त्म। इसके बाद नई यादें बनेगी, हम सबकी एक दूसरे के साथ।" सुनंदा जी की कही बातें पियू और उसके माता-पिता के हृदय को स्पर्श कर गई। इतनी सुलझी हुई महिला ने अथर्व की परवरिश की है। इस बात से पियू के माँ-बाबा को तसल्ली हुई। संयाल जी ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "कार्ड छपवाने की तैयारी करें? आप अपने रिश्तेदारों में खबर कर दीजिए। हम भी यहाँ पंडित जी से बात कर लेते हैं।" थोड़ा रुककर बोले, "सुनंदा जी, वैसे हमारा सब कुछ, पियू का ही है, आप चिंता मत कीजिए,

हमसे जितना बन पड़े हम उससे ज़्यादा करने की पूरी कोशिश करेंगे।" हाथ जोड़कर बोले, "फिर भी आपको कुछ... तो आप बेझिझक बोल सकती हैं। आखिरकार अथर्व भी हमारे बेटे जैसा ही है।" सुनंदा जी थोड़ी देर कुछ नहीं बोली फिर सोचकर बोली, "वैसे एक बात तो है जो अभी बोल देना बेहतर है ताकि बाद में कोई मतभेद न हो।" इस बात की उम्मीद अथर्व को नहीं थी। क्षणभर के लिए स्तब्ध रह गया और अपनी माँ की ओर ताकने लगा कि ऐसा क्या माँगने वाली है! सुनंदा जी ने गंभीरता से कहा, "अभी-अभी आपने कहा, अथर्व आपके बेटे जैसा है। मुझे अथर्व से और आप से 'कोशिश' चाहिए। कोशिश- की वह आपको अपने माता-पिता के रूप में स्वीकारे और आप उसे अपने बेटे जैसा नहीं बेटा माने, और इसके लिए आप तीनों को एक-दूसरे के प्रति ईमानदारी से कोशिश करनी होगी। बाकी पियू मेरी बेटी है ही।" सभी की निगाहें सुनंदा जी पर ठहर गई। अथर्व थोड़ा सामान्य हुआ और रूपा जी की पलकें छलक उठी। संयाल जी अपनी आँखों की नमी छुपाते हुए बोले, "जिसकी परवरिश आप जैसी माँ ने की हो, मुझे यकीन है ऐसी किसी कोशिश की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और बहुत सरलता से हम एक-दूसरे के जीवन में घुल मिल जाएँगे।" सुनंदा जी ने आगे कहा, "और जहाँ तक बात खर्चे की है, तो वो हम बाँट लेंगे। अब आपकी बेटी ले जा रहे हैं तो अपना भी तो बेटा दे रहे हैं आपको। बराबरी की इज़्ज़त और खर्च भी।" इन सब बातों के साथ पियू के माँ-बाबा को पूरी तसल्ली हुई कि इस बार उनकी बेटी ने जीवन साथी के रूप में बिलकुल सही इंसान चुना है। थोड़ी देर में अथर्व और सुनंदा जी ने सबसे विदा लिया। सुनंदा जी ने पियू और उसके परिवार को आमंत्रित किया, ताकि शादी से जुड़ी कुछ बातें तय कर सकें, साथ ही संयाल जी और रूपा जी नंदिनी से भी मिल लेंगे।

पंडित जी को घर बुलवाया गया। तारीखों पर चर्चा होने लगी। दिल्ली में गर्मियाँ पड़ चुकी हैं, इसलिए तय हुआ कि शादी ठंड के महीने में होगी। सभी ग्रह-नक्षत्रों की गणना के बाद यह तय किया गया कि विवाह की तिथि 7 दिसम्बर 2019 होगी। सभी धीरे-धीरे शादी की तैयारियों में लग गए। समय रहते यदि छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दिया जाए, तो बाद में काम सरल हो जाता है। इसी बीच पियू और अथर्व एक-दूसरे के परिवारों में काफ़ी घुल मिल गए। पियू और नंदिनी का भी एक रिश्ता जुड़ने लगा। जो नंदिनी किसी को अपने कमरे में देखकर असहज जो जाती थी, वही नंदिनी अब पियू को अपने साथ कमरे में चलने का आग्रह करती है। दोनों के बीच शब्दों का ज़्यादा आदान-प्रदान नहीं होता लेकिन एक बंधन जुड़ रहा है। जज़्बातों का आदान-प्रदान हो रहा है। शादी की बात सुनकर स्पर्श के माता-पिता भी पियू से मिलने आए। अब वफ़ा जी, नंदिनी और पियू तीनों आपस में जुड़ने लगे। सुनंदा जी यह देखकर बेहद ख़ुश हैं। उन्हें इस बात का संतोष है कि न सिर्फ़ पियू ने उनके परिवार को अपनाया है, उनके परिवार ने भी पियू को पूरी तरह से अपनाया है। वक़्त ने फिर एक बार पंख फैलाए और शादी का महीना करीब आ गया। अब तैयारियाँ भी ज़ोर पकड़ने लगी। पियू और अथर्व ने कुछ पैसे जोड़े थे, उन्ही से तैयारियों में दोनों सहयोग देने लगे। रिश्तेदारों को भी खबर कर दी गई। विवाह तिथि, रिश्तेदारों का आना-जाना, मुस्कुराहटें और दबी आवाज़ में कई बातें। सारी दबी हुई आवाज़ें, पियू, अथर्व और घरवालों के कानों में पड़ रही हैं, लेकिन इस बार सब साथ हैं। आवाज़ें केवल दबा हुआ शोर है जिससे कुछ फ़र्क नहीं पड़ रहा। इसी तरह का विश्वास और अपनापन, व्यक्ति को आत्मविश्वास देता है। विवाह संस्कार से जुड़ी हुई सभी रस्में एक-एक करके होने लगी। शादी में, अथर्व के दोनों दोस्त मणि और रमन भी आए हैं।

पारिवारिक सभी रस्मों में खन्ना जी का परिवार भी परिवार की तरह ही शामिल है। सुनंदा जी ने बड़े उत्साह से उनका सबसे परिचय करवाया। वफ़ा जी को संबोधित करते हुए सुनंदा जी ने सभी से कहा, "यह हैं हमारी नंदिनी की यशोदा माँ!" यह सुनकर वफ़ा जी की आँखें नम हो गई। सभी रस्मों में वफ़ा जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हल्दी, मेहंदी, बारात में जाना, लेकिन दिल के किसी कोने में एक टीस है। अथर्व की ख़ुशी में ख़ुश नहीं, ऐसा नहीं है, यह एक माँ के मन की टीस है। आज स्पर्श होता तो उसकी शादी की तैय्यारियाँ भी धूम-धाम से होती। वहीं कमरे में किसी कोने में सूनी आँखों से मुस्कुराती नंदिनी से आँखें टकरा कर कुछ पल ठहर जाती। आँखों के कोने से कुछ एहसास छलकने लगते हैं तो मन को कहीं और बांधने की कोशिश करने लगती। किसी को इन खारे बूँदो की कहानी समझाना मुमकिन नहीं। इन्ही सभी के बीच एक खुशियों भरा माहौल है। नया जीवन, नई उम्मीदें हैं। बारात धूम-धाम से निकली, दुल्हन को ब्याह कर घर लाने। पियू के घर वालों ने विनम्रता और प्रेम के साथ सबका स्वागत किया। बहुत बड़ा आयोजन नहीं है परन्तु उन्होंने कोई कमी नहीं रखी।

पियू के साथ यह सब पहले एक बार हो चुका है। न चाहते हुए भी वह लम्हे कहीं-न-कहीं ज़हन में उभर रहे हैं। उन्हीं भावनाओं को आज की उम्मीद का दामन थामे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश कर रही है। बिदाई के समय सब सोचते होंगे कि क्यूँ रोना? अब तो पहले का ज़माना नहीं कि मायका छूट जाएगा। आजकल शादी के बाद भी उतना ही आना-जाना या घनिष्ठता रहती है परिवार के साथ। लेकिन इस एहसास को शब्दों में ढ़ाल नहीं सकते। एक एहसास है जन्म से जुड़े हुए सूत्र के टूट जाने का। अपना कुछ छूट जाने का।

चाहे फिर 2 कदम पर ससुराल है। जाते समय लगता है अपनी चौखट पीछे कहीं छूट गयी। जहाँ जन्म हुआ, जिनकी गोद में पले-बढ़े आज उस दहलीज़ के पार एक नया परिवार। एक अनजान दुनिया जो अचानक एक दिन आपका घरौंदा बन गया। इस भाव को व्यक्त करना बहुत कठिन है। पियू और उसके माँ-बाबा इन्हीं लहरों में गोते खा रहे हैं। पिछली बार जो बेटी ले गया था, उसने बेटी के साथ उसका टूटे हुए दिल के टुकड़े भेजे थे। फिर हिम्मत करके बेटी भेजना, यह एहसास और एक डर, दिल में छुपाए नहीं छुपता और चुभता भी है।

जाते समय सुनंदा जी ने आगे बढ़कर पियू के माँ-बाबा से हाथ जोड़कर कहा, "बहू नहीं, अपनी बेटी को ले जा रहे हैं। चिंता मत कीजिए, वह अपने ही घर जा रही है। उसके सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अब से हमारी।" इतनी बात सुनते ही सबकी आँखों की नमी ने आँसुओं का झरना बहा दिया। इस तरह बिदा लेकर पियू पहुँची अपनी नई दुनिया में, एक नए रूप में और नई उम्मीदों को गठरी में बाँधे।

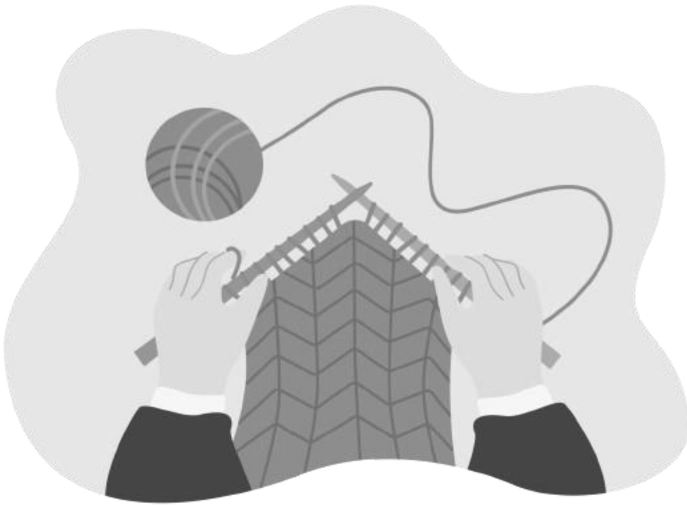

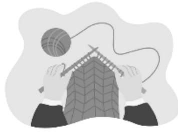

अध्याय १०
नये रंग, पुरानी बुनाई

बिदा होकर घर आने में सुबह हो गई। गृह-प्रवेश की सभी तैयारियाँ वफ़ा जी ने कर रखी हैं। जैसे ही बारात लौटी, बेहद प्यार और अपनेपन से सभी ने पियू का स्वागत किया। अड़ोस-पड़ोस की औरतें भी आई हुई हैं। सभी ने मिलकर कुछ खेल खेले और छोटी-मोटी रस्मों के बाद अपने घर चले गए। कुछ रिश्तेदार आज रहेंगे और कल तक सभी लौट जाएँगे। लगभग दोपहर हो गई है इन्ही सब रस्मों को निभाने, और मिलने-मिलाने में। सुनंदा जी ने अथर्व और पियू को अपने पास बुलाकर नए जीवन की शुभकामनाओं के साथ आशीर्वाद दिया। पियू को पुचकारते हुए बोली, "बेटा! थक गई होगी। कमरे में जाकर कपड़े बदल लो और थोड़ा आराम कर लो। शाम को मुँह दिखाई की रस्म के लिए लोग आएँगे।" फिर वही मुँह दिखाई की रस्म। पियू के होठों से मुस्कुराहट गई नहीं परंतु मन थोड़ा विचलित हुआ। पुरानी चोट के निशान थोड़े उभरे। उसने केवल हामी भरी। माँ ने अथर्व को पियू को कमरे में ले जाने को कहा। साथ में अथर्व की बहनें, मामी और मासी भी गई। वहाँ उनकी आपस में ठिठोली चल रही है। नंदिनी अपने कमरे में चली गई, उसे इतनी भीड़ से तक़लीफ़ हो रही है। सुनंदा जी भी थकी हुई हैं। जो सहायक है, उसे एक गिलास पानी लाने को कहा। वफ़ा जी भी साथ आकर बैठी। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। कुछ बात नहीं हुई लेकिन हुई भी। सुनंदा जी और वफ़ा जी के बीच भी बीतते वर्षों में घनिष्ठता हो गई है। काफ़ी क़रीबी से जानने लगे हैं एक-दूसरे को।

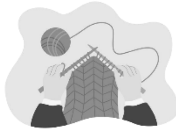

सभी ने थोड़ा आराम किया। उधर अथर्व की बहनों ने पियू को घेरे रखा। नई भाभी आई हैं घर पर, सब जानना चाहते हैं उसके बारे में। अथर्व ने पियू को ख़ुश देखा, जी खोल कर सबसे बातें करते, हँसते देखा, फिर कपड़े बदल कर नंदिनी के पास चला गया। इतने काम और भीड़-भाड़ के बीच में नंदिनी से बहुत देर बात नहीं कर पाया है। शाम होते ही अगल-बगल के कुछ लोग मुँह दिखाई की रस्म के लिए आने लगे। यहाँ पियू की धड़कन भी असामान्य है। नज़रअंदाज़ कर रही है किन्तु गहरी चोट है, असर तो होना है। सुनंदा जी कुछ देर में पियू को बुलाने आई और उसकी ओर देखकर चौंक गई। दो पल मौन खड़ी उसे निहारती रही। पियू सकपकायी हुई उन्हें देख रही है और सोच रही है शायद पिछली बार की तरह इस बार भी उसके सामान्य रूप की अवहेलना होगी। वह परिवार से पहले मिल चुकी है। वह सबकी समझदारी और अपनापन भली-भांति जानती है। फिर भी मन पर लगी चोट ऐसी ही होती है। आँखों से देखा हुआ भी काल्पनिक लगने लगता है और चोट का निशान दिमाग पर हावी होकर उस पीड़ा को जगाने लगता है। हिचकिचाते हुए बोली, "आंटी! कुछ कमी है क्या?" सुनंदा जी ने पियू की नज़र उतारते हुए उत्तर दिया, "हाँ! कमी तो है, लेकिन लो, यह लगा काला टीका और हो गई कमी पूरी। यह लगाना ज़रूरी है, वरना दुनिया भर की नज़र लग जाएगी मेरी बेटी को। अब चलो, सब आ गए हैं तुमसे मिलने।" पियू की पलकें भर आई सुनंदा जी की बातें सुनकर। पियू सबसे मिली और सुनंदा जी के बगल में बैठ गई। सभी शादी की, दुल्हन-दूल्हे की बातें करने में व्यस्त हैं और उधर सहायिका ने सबके लिए नाश्ते की तैयारी की है। सुनंदा जी सबको चाय परोसने के लिए उठने ही लगी कि पियू ने उनका हाथ थामकर कहा, "माँ! आप बैठिए, मैं करती हूँ।" अभी थोड़ी देर पहले पियू के मुँह से ‘आंटी’ निकला था और अब ‘माँ’।

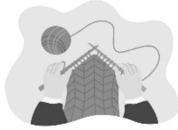

आंटी से माँ तक का रास्ता सुनंदा जी ने पियू के हृदय को छू कर तय किया है। इससे रिश्ते की नीव की परिपक्वता का आभास होता है। सुनंदा जी मुस्कुराई और हामी भरी। पूरी शाम बहुत अच्छी गुज़री। परिवार में सभी आपस में देर तक बातें करते रहे, फिर सभी ने मिलकर साथ खाना खाया। अब सभी अपने-अपने कमरों में जाने से पहले आख़िरी रस्म पूरी करने के लिए उत्साहित हैं, जहाँ पियू और अथर्व को अपने कमरे में भेजना है। पियू बड़ी भाभी है, तो आज द्वार नेग मिलेगा। सभी बच्चों ने कमरे के बाहर पियू और अथर्व को घेर लिया और करने लगे नेग की माँग। पियू ने लजाते हुए अपने पर्स की ओर इशारा किया तो अथर्व ने अपने ही जेब से कुछ पैसे निकाल कर पियू के हाथ में थमा दिए। पियू ने पैसे अपने हाथों से सभी बच्चों में बाँट दिया। सभी ख़ुशी से उछल पड़े। सुनंदा जी ने सभी को आवाज़ देते हुए कहा, "चलो अब ज़्यादा तंग मत करो, सब थके हुए हैं। अपने-अपने सोने की जगह पर चलो।" बच्चों ने ख़ुशी- ख़ुशी अपने पैसे गिनते हुए बिस्तर की ओर रुख किया । सुनंदा जी ने पियू और अथर्व का हाथ एक-दूसरे के हाथ में देते हुए कहा, "आज से कई साल पहले मैंने इस घर में अपनी ज़िंदगी शुरू की थी। आज तुम्हारी बारी है। जीवन सरल तो नहीं लेकिन एक-दूसरे का हाथ थामे रहोगे तो कठिनाइयाँ सहज हो जाएगी।" अथर्व-पियू ने उनके पैर छुए। आशीर्वाद का हाथ सिर पर फेर कर वह अपने कमरे की ओर चली गई।

पियू का हाथ थामते हुए अथर्व ने कहा, "सुबह से बहुत बार इस कमरे में आना जाना हुआ होगा लेकिन अब हमारी नई शुरुआत है। मेरा हाथ थामे इस देहलीज़ के अंदर कदम बढ़ाओ। आज से मैं, अपना परिवार, घर, कमरा, और सब कुछ, तुम्हारे साथ साझा करूँगा। आज से मेरा कुछ नहीं, सब हमारा

होगा।" पियू का मन प्रफुल्लित है क्योंकि उसके मन का सारा भय एक-एक कर दूर भागता जा रहा है। दोनों ने हाथ थामे कमरे में कदम रखा। आज कमरा फूलों से सजा हुआ है। पियू ने कमरे में चारों ओर नज़र घुमाई तो उसे बेहद सुकून का अनुभव हुआ। कमरा बहुत बड़ा नहीं है लेकिन सभी सामान ठीक रूप से व्यवस्थित है। दीवारें सफ़ेद रंग की, परदे हल्के हरे रंग के, और कुछ तस्वीरें दीवारों पर टँगी हुई। पियू इससे पहले जब भी कमरे में आई, साथ बहुत सारे लोग साथ थे और कुछ-न-कुछ चल ही रहा था, तो उसने तब गौर नहीं किया। तस्वीरों को ध्यानपूर्वक देखा तो बेहद आकर्षित हुई। एकटक निहार रही है सभी तस्वीरों को। कुछ कहती उससे पहले अथर्व ने कहा, " सारी तस्वीरें दीदी की बनाई हुई हैं। बहुत सुंदर तस्वीरें बनाती हैं। यह अलग बात है कि मुझे किसी का मतलब समझ में नहीं आता। तुम देखो, तुम्हें कुछ समझ में आए तो।" पियू ने आश्चर्य से अथर्व की ओर देखा जैसे उसे यकीन ही नहीं हुआ जो अथर्व ने कहा। अथर्व ने पूछा, "क्या हुआ! तुमको भी समझ में नहीं आया?" पियू ने ‘न’ में सर हिलाते हुए कहा, "बहुत गहराई अनुभव होती है इन तस्वीरों में। लगता है एकदम जीवंत है। अभी बोल पड़ेगी। कितने रंग, कितना प्रेम और कितना सम्मोहन।" अथर्व ने पियू का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा, "पियू जी, तस्वीरों से बाद में बातें कर लें? फ़िलहाल तो यह मानव इंतज़ार कर रहा है आपसे बातें करने का।" पियू ने शरमाते हुए कहा, "हाँ! बोलो।" इतना कहकर आईने के सामने जाकर अपने ज़ेवर उतारते हुए इधर-उधर की बात करने की कोशिश करने लगी। अथर्व से यूँ ही पूछ बैठी, "इतने भारी हैं कानों के झुमके, दर्द हो रहा है कानों में। इन्हें कहीं रखने की जगह है? जैसे अलमारी या कुछ?" अथर्व ने उत्तर दिया, "तुम्हारे दाहिने हाथ के सामने इतनी बड़ी जो अलमारी है उसमें मैं अब तक ईंटें और पत्थर रखता था। आज से

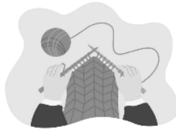

तुमको जो मन हो, रखो।" पियू ने अपना सर पकड़ लिया और हँसने लगी। उसकी हँसी में उसकी हिचक स्पष्ट झलक रही है। दोस्ती से शादी का सफ़र इतनी तीव्र गति से बढ़ा है कि उसके भीतर का अस्मंजस कहीं अभी भी हृदय की किसी परत के नीचे ढ़का हुआ है। वही उभर कर आने लगा है। अथर्व को यह समझ में आ रहा है। उसने बड़ी बुद्धिमानी से इस माहौल को भांपते हुए पियू के पास गया और कहा, "बॉन्ड! जितना समय चाहिए ले लो। पूरी ज़िंदगी है साथ काटने के लिए। समझता हूँ कि सब कुछ बहुत जल्दी हो गया लेकिन अब कोई जल्दी नहीं। मैं अब भी दोस्त हूँ और हमेशा रहूँगा, इस बात को कभी मत भूलना। समझी! चलो अब सो जाओ फटाफट क्योंकि मेरी तो थकान के मारे आँखें बंद होने लगी हैं।" अथर्व ने बहुत गहरी बात इशारों में कह दी। पियू की असहजता एक पल में गायब हो गई। दोस्ती है, प्रेम की भी शुरुआत हुई है कहीं-न-कहीं, परन्तु अथर्व के प्रति एक प्रगाढ़ सम्मान है। किस तरह वह सभी भावनाओं को बिना कुछ कहे समझ रहा है। कोई कैसे हृदय की हर बात ख़ामोशी से ही समझ जाता है। पियू का मन जहाँ ख़ुश है अथर्व को जीवन साथी के रूप में पाकर वहीं मन इतने सवालों से घिरा हुआ सोच रहा है कि कहीं यह सब कुछ स्वप्न तो नहीं!

शादी के घर में अगले 3-4 दिन बधाई गीतों, ठिठोलियों और किलकारियों की गूंज में बीते। पियू और अथर्व ने शादी के लिए 1 महीने की छुट्टी ली है। माँ ने कहा कहीं घूम आओ कुछ दिन। सभी को विचार अच्छा लगा। झटपट मनाली को सुनिश्चित किया गया और बस की टिकटें भी आ गई। दिसंबर का महीना, पियू का बर्फ़ देखने का उत्साह देखने लायक है। बहुत बचपन में माँ-बाबा के साथ, गर्मी की छुट्टियों में गई थी परन्तु उस समय बर्फ़

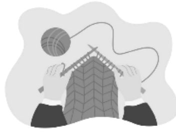

नहीं देख पाई थी। इस बार हर तरफ़ बर्फ की सफ़ेदी होगी। दो दिन में निकलना है तो अथर्व के साथ जाकर कुछ कपड़े और सामान ख़रीद लिए। जल्दी-जल्दी सामान बँध गया और निकल पड़े दोनों मनाली के लिए। पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई। होटल में बुकिंग पहले ही करवाई हुई थी, तो बस से सीधे होटल के दरवाज़े पर ही उतरे। दिसंबर की ठंड, बर्फ़ देखने का शौक, सब एक तरफ़, जैसे-जैसे रात बढ़ने लगी ठंड से रुबरु हुए और पियू ठिठुरने लगी। 4-5 परत गर्म कपड़े भी मदद नहीं कर रहे हैं। एक छोटा-सा रूम हीटर मिला है मगर पहाड़ों की ठंड में वह ‘न’ के बराबर ही है। काँपते हुए पियू ने अथर्व से कहा, “यहाँ कुल्फ़ी बन जाएँगे। कितनी ठंड है।” अथर्व ने व्यंग्य करते हुए कहा, “अभी कहाँ, चलो थोड़ी देर बर्फ़ में घूमकर आते हैं।” पियू ने दिखावे के लिए गुस्सा करते हुए मुँह फेर लिया और बोली, “हूँ! कठोर मानव। तुम मज़ाक बना लो पहले!” और दोनों ठहाका लगा कर हँस पड़े। यात्रा की थकान से दोनों ने जल्दी खाना खाया और ढेरों गर्म कपड़े पहने रजाई में दुबक कर सो गए। ठंड में जैसे-तैसे रात कटी। सोचा सुबह धूप निकलेगी थोड़ी-सी तब घूमने के लिए बाहर जाएँगे, लेकिन यह क्या! पिछली रात बर्फ़ का तूफ़ान आया था, और सुबह से सारा चक्का जाम है। कहीं भी आना-जाना बंद। अब क्या किया जाए! न बर्फ़, न धूप, केवल ठंड। पियू बोली, “इतनी दूर से बोर होने आए हैं! इस कमरे में बंद, अब क्या करेंगे?” अथर्व ने उत्तर दिया, “मेरे होते हुए बोर होगी, हो ही नहीं सकता। तुमको पता ही नहीं मैं कितना एंटरटेनिंग हूँ। रुको अभी थोड़ी देर में सब व्यवस्था करके आता हूँ।” पियू आगे कुछ पूछती उससे पहले, वह कमरे से निकल गया। कुछ 15-20 मिनटों बाद वापस आया। पियू ने पूछा, “कहाँ गए थे?” अथर्व ने ज़्यादा कुछ नहीं बोला, इतना ही कहा, “सब तैयार है, 5 मिनट में कमरे में सब आ जाएगा फिर तुम्हें बिलकुल बोरियत नहीं

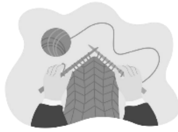

होगी।" वह कपड़े बदलने चला गया। पियू सामान समेटने में व्यस्त हो गई। लगभग 10 मिनट बाद दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। पियू दरवाज़े की ओर बढ़ने लगी तो अथर्व ने उसे रोका और ख़ुद गया दरवाज़ा खोलने। होटल का एक कर्मचारी कुछ सामान के साथ दरवाजे पर खड़ा है। कमरे में रखी मेज़ पर सारा सामान रखा और चला गया। पियू ने कौतुहलता से पूछा, "ये सब?" अथर्व एक-एक करके सभी सामान पियू को दिखाने लगा, "ये है यहाँ की वर्ल्ड फेमस देसी वाइन। जितनी ठंड में कुल्फ़ी जमी है, सब ठीक कर देगा। मेरी मानो तो दवाई है दवाई। ठंड अवरोधक दवाई। और साथ में खाने के लिए शाही पनीर, कबाब और सलाद।" पियू ने अवाक होते हुए उत्तर दिया, "वाइन! मगर मैंने कभी पी नहीं।" अथर्व ने कहा, "अपने पति के साथ आई हो, चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं, एकदम आराम से पीओ। इससे कुछ नहीं होता सिर्फ़ ठंड में बीमार नहीं पड़ोगी। चलो अब ज़्यादा बातें मत करो। हमारी हाउस पार्टी शुरू करते हैं।" पियू ने पहले मना किया, फिर हिम्मत कर ही ली। शायद वह ये हिम्मत करना चाहती थी। अथर्व ने दो गिलासों में वाइन डाली और दोनों खिड़की के पास जाकर ज़मीन पर ही बैठ गए। एक छोटी चटाई बिछी है। सारा खाने पीने का सामान ज़मीन पर रख दिया। दोनों ने साथ में पहला घूंट पिया। पियू ने इतनी अजीब शक्ल बनाई कि अभी उल्टी कर देगी। अथर्व ने हँसते हुए उसकी ओर पनीर का टुकड़ा बढ़ा दिया। उसे खाकर पियू को थोड़ा ठीक लगा। धीरे-धीरे एक-एक घूंट जाती रही और पुरानी कुछ बातों का सिलसिला शुरू हुआ। वो दिन जब अथर्व और पियू पहली बार मिले थे। कैसे दोस्ती हुई, कैसे रिश्ता आगे बढ़ा। ये सब बातें हजारों बार कर चुके हैं लेकिन हर बार करते हैं, फिर से। इन्ही बातों में अचानक पियू बोल पड़ी, "मुँह दिखाई की रस्म के समय तो मैं घबरा ही गई थी। सारा शादी का मेकअप उतार दिया

था, पता नहीं कैसी दिख रही थी। कहीं किसी को बुरा न लग जाए, बस यही डर था।" अथर्व ने यह बात सुनी तो धीरे से पियू के पास सरक कर गया। उसके चेहरे पर कुछ लटें बिखरी हुई हैं। उन्हें कान के पीछे हटाते हुए कहा, "आसमान का चाँद इतना सुंदर क्यों लगता है पता है?" पियू ने शरमाते हुए नजरें नीची कर ली। ना वह आगे बढ़ी, ना ही पीछे हटी। अथर्व ने आगे कहा, "क्योंकि वो सादा है, उस काले आसमान में। तुम भी इतनी सुंदर अपनी सादगी से हो। इन आँखों को किसी काजल की ज़रूरत नहीं, ये इतनी गहरी हैं। मैं दो पल और इन्हें देखूँगा तो इन्हीं में डूब जाऊँगा। ये होंठ, इनको किसी लाली की ज़रूरत नहीं, अगर थोड़ी देर और इन्हें देखता रहा तो मैं…" इतना कहकर उसे शायद एहसास हुआ कि वह पियू के बहुत करीब है। इतना कि साँसें टकरा रही हैं। तभी उसके ज़हन में पियू की उस हिचकिचाहट का एक पल गुज़रा जिससे वह थोड़ा पीछे हट गया और माहौल को हल्का करते हुए बोला, "वाइन का असर होने लगा है, थोड़ा सावधानी से मिसेस अथर्व शर्मा।" मिसेस अथर्व शर्मा सुनकर पियू का मन खुशी से झूम उठा। शर्म से गाल लाल हो गए। अथर्व का यूँ करीब आना उसके दिल की धड़कनों को तेज़ कर गया। उसने शायद सोचा नहीं अथर्व करीब आएगा और अब उसका दिल नहीं चाहता कि वह दूर जाए। उसने बात आगे बढ़ते हुए कहा, "वाइन भी अच्छी है, और उसका असर भी।" कुछ पलों की ख़ामोशी फिर अथर्व ने पियू के दोनो पैरों को अपनी गोद पर रखा और धीरे-धीरे दबाने लगा। पियू ने कहा, "अरे! पैर मत छूओ। दर्द नहीं है।" अथर्व ने थोड़ी गंभीरता से उसकी आँखों में झाँकते हुए उसके पैरों को छूम लिया और कहा, "अर्धांगिनी हो मेरी। जब से इन पैरों से चल कर मेरी ज़िन्दगी में आई हो, तब से ज़िन्दगी ने एक ख़ूबसूरत रुख़ किया है। मेरे लिए इन पैरों के निशान बहुत मायने रखते हैं।" पियू को अथर्व

के मन में अपने लिए उसी सम्मान का अभास हुआ जो उसके मन में है, अथर्व के लिए। इस तरह दोनों के बीच के फ़ासले कम होने लगे। पियू अब थोड़ा और पास आ गई है। उसके घुटने अब अथर्व की गोद में हैं। बातें अब दबी आवाज़ में होने लगी हैं। उंगलियाँ एक दूसरे को छू रही हैं। अथर्व ने धीरे से पर्दे लगा दिए। कुछ ही पलों में पियू को बाहों में लिए वह भीतर कमरे में चला गया। दोनों पर अब बाहर की ठंड का कोई असर नहीं हो रहा क्योंकि तन मन में प्रेम राग की ताप इतनी विशाल है। एक नारी का संबोधन है पुरुष और एक पुरुष का संबोधन नारी। इस मिलन को सृष्टि ने रचा है जैसे अद्भुत, अकल्पनीय, अविरल अग्नि। आज दोनों के बीच के सारे फ़ासले इस प्रेम अग्नि में जल कर राख हो गए। दोनों को संपूर्ण होने का अभास हुआ। यह प्राकृतिक है, लेकिन केवल शारीरिक नहीं। यह मानसिक और भावनात्मक मिलन भी है। दिन ढला, रात का गहरा काला आसमान और चाँद निकल आया। एक ही रजाई में सिमटे हुए दोनों ने खिड़की से चाँद की ओर देखा। उस खुले आसमान में चाँद जैसे साक्षी है उनके मिलन का, प्रगाढ़ प्रेम का, एक कहानी का जो पियू और अथर्व की है।

***

समय का पहिया आगे बढ़ गया है। शादी को एक साल होने वाला है। दो माह पहले की बात है, पियू के पेट में एक दर्द उठा था। कई चिकित्सकीय जांच और उपचार के बाद पता चला कि उसके अंडवाहिनी नलिका में एक गांठ था। शल्यक्रिया करवाने की आवश्यकता थी। दवाइयों से कुछ हफ़्तों तक कोशिशें की गयी जिससे स्तिथि में कुछ सुधार हो सके, किन्तु कोई सुधार नहीं दिखा। चिकित्सकों ने यह जानकारी दी कि इस शल्यक्रिया के पश्चात् पियू

शायद कभी गर्भ धारण नहीं कर पाएगी। यदि किसी कारणवश यह शल्यक्रिया नहीं करवाई गयी और गांठ फैलने लगा तो जानलेवा हो सकता था। समय की परीक्षा थी, लेकिन पियू का पूरा परिवार उसका हाथ थामे उसकी हिम्मत बना था। शल्यक्रिया के बाद कुछ महीनों तक चिकित्सक ने घर पर रह कर आराम करने की सलाह दी थी ताकि पूरी तरह से स्वास्थ्य ठीक हो सके। तब से पियू घर से ही दफ़्तर का काम करती है। इस समय पियू के माँ-बाबा ने उसे घर ले जाने का आग्रह भी किया लेकिन अथर्व नहीं माना। वह पियू को एक पल के लिए भी अपने से दूर नहीं करना चाहता। सुनंदा जी ने भी पूरे मन से पियू की देखभाल की। नंदिनी उस दौरान पियू के और करीब आ गई। कई घंटे उसके सिरहाने बैठे उससे बातें करती है। नंदिनी और पियू सहेलियाँ बन गई हैं। कभी रंगों की दुनिया की बातें, कभी तस्वीरों की। पियू को मौका मिल रहा है नंदिनी की दुनिया से रूबरू होने का। कितनी बार नंदिनी की बातें सुनकर दंग रह जाती है। कुछ वक़्त लगता है समझने में कि बातों की गहराई कितनी है। पियू अथर्व से पूछती है कई बार, “दीदी को कोई बीमार कैसे बोल सकता है? उनकी बातें, उनकी परिपक्वता, उनका रिश्तों को इतनी गहराई से समझना, यह सब कोई बीमार नहीं कर सकता। मुझे ही कभी-कभी वक़्त लग जाता है बातों को समझने में।” शर्मा परिवार में पियू के आने के बाद से कई सारे रिश्तों के धागे धीरे-धीरे मज़बूत हो रहे हैं।

शाम को अथर्व दफ्तर से लौट कर सबसे पहले नंदिनी से मिलता फिर घर में सभी को दिनभर का हाल सुनता। एक शाम परेशान घर लौटा। सबसे बातें की परन्तु रोज़ की तरह उत्साहित नहीं है। कपड़े बदल कर कमरे में जाकर लेट गया। पियू अपना काम निपटाकर अथर्व से मिलने गई तो अनमाने ढंग से

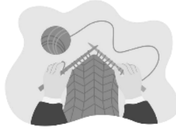

बात करके सोने चला गया। माँ ने खाने के लिए भी पूछा तब भी खराब तबियत की बात कहकर, बत्ती बुझाई और सोने लगा। सबको लगा शायद थक गया है अथवा सच में तबियत बिगड़ने लगी है। सबके खाने के बाद, पियू कमरे में दवाई लेकर पहुँची और अथर्व के सिर पर हाथ फेरते हुए दवाई खाने को कहा। पहले एक-दो बार अथर्व मुँह घुमा कर सोने की कोशिश करने लगा, लेकिन जब पियू ने आग्रह किया तो वह झल्ला कर बैठ गया। पियू को इस अजीब से व्यवहार से ठेस पहुँची और उसे कुछ समझ में नहीं आया। अथर्व और परेशान न हो इसलिए उस बात को वहीं ख़त्म करके सोने चली गई। सुबह उठकर अथर्व बिना ज़्यादा कुछ बात किए तैयार होकर कार्यालय निकल गया। यह सिलसिला कुछ दिनों तक यूँ ही चला। माँ ने पियू से बात करने की कोशिश की, परंतु उसने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, "नहीं माँ! कोई चिंता की बात नहीं, मेरी बात हुई है। आजकल मंदी ज़ोरो पर है, ऑफ़िस में काम बहुत बढ़ गया है। इसलिए थोड़ा परेशान है। बस और कुछ नहीं।" सुनकर माँ को थोड़ी चिंता हुई लेकिन तसल्ली भी हुई कि तबियत खराब या मन मुटाव जैसी कोई बात नहीं। शनिवार-रविवार को वैसे अथर्व का अवकाश होता है लेकिन इस शनिवार और रविवार को वह काम का हवाला देकर कार्यालय गया। यह बात पियू को अब खटकने लगी और उसने तय किया कि वह अथर्व से आज इस बारे में बात करेगी। शाम को अथर्व घर लौटकर नहाने चला गया। पियू को अपने फ़ोन का चार्जर नहीं मिल रहा था सुबह से। अथर्व आया तो उसने आवाज़ लगाकर उसके फ़ोन का चार्जर माँगा। अथर्व नहाते हुए बोला कि बैग में रखा है, निकल ले। पियू ने बैग खोला तो उसमें एक छोटी डिब्बी रखी दिखी। चमकीले पेपर में मुड़ी हुई। पियू ने डिब्बा नहीं खोला और चार्जर लेकर बैग बंद करके वापस स्थान पर रख दिया। थोड़ी देर बाद पियू ने अथर्व से

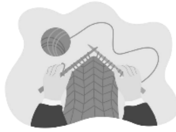

सामान्य ढंग से पूछा, "गिफ्ट में क्या मिला है, मुझे नहीं दिखाओगे?" अथर्व को जैसे इस सवाल की उम्मीद नहीं थी। सुनते ही वह असहज हो गया। बोला, "गिफ्ट!" पियू ने कहा, "हाँ वो चार्जर लेने के लिए बैग खोला था तो देखा एक गिफ्ट रखा था बैग में। मैंने खोला नहीं, तुम्हारा गिफ्ट है।" अथर्व ने बात को महत्व न देते हुए कहा, "हाँ! ऑफ़िस में एक दोस्त ने… घर गया था तो लेकर आया सबके लिए कुछ-न-कुछ।" पियू ने धीरे से कहा, "घर गया था! मगर उसपर लिखा है 'सप्रेम अस्मिता'। यह वही अस्मिता है क्या?"

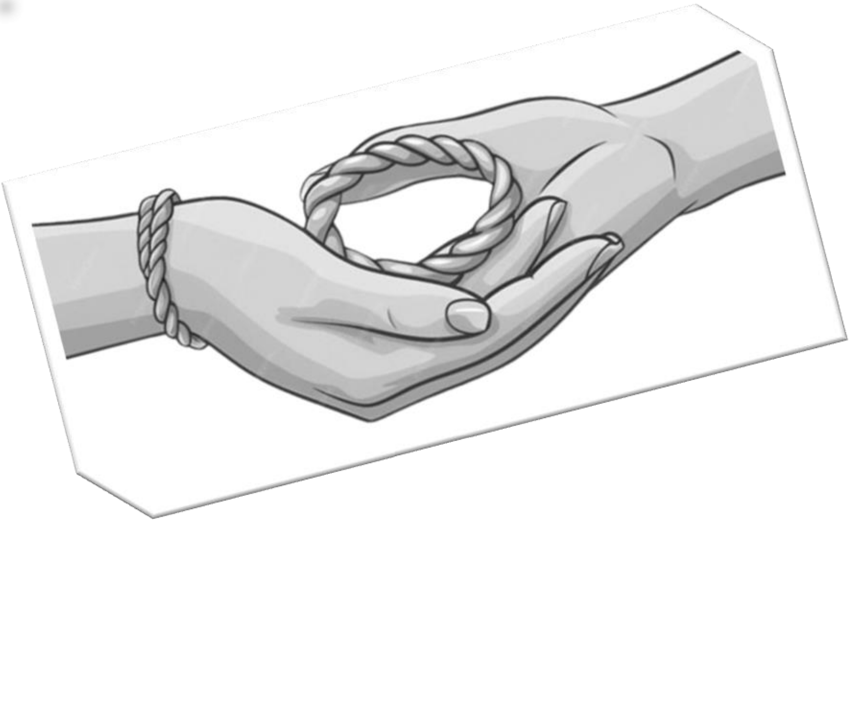

अध्याय ११
गठान

अथर्व रोज़ की तरह कार्यालय गया। उसका कार्यालय एक बड़े निजी परिसर में है। कई ऊँची-ऊँची इमारतों में अलग-अलग बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ हैं। खाना खाने के लिए दूसरी इमारत में जाना पड़ता है। वहीं अलग-अलग विक्रेताओं की दुकानें हैं। अथर्व अपने सहकर्मियों के साथ खाना खाने पहुँचा। खाने की थाली में खाना लेकर मुड़ा ही है कि स्तब्ध रह गया। सारी भीड़ गायब, केवल स्तब्ध। आँखों के सामने अस्मिता, भीगी पलकों के साथ खड़ी मुस्कुरा रही है। एक पल में हज़ारों यादों ने बाँध तोड़ कर चलचित्र रूप धारण कर लिया। अस्मिता मिश्रा, वो बंधन जो टूटते हुए अथर्व को तोड़ गया था। इतना प्रभावशाली एक रिश्ता जो टूट गया था। टूटा था?

अस्मिता ने डबडबयी नज़रों से और कांपती हुई आवाज़ में कहा, "अथर्व... आखिरकार इतने सालों बाद। कब से ढूँढ रही थी।" अथर्व को समझ में ही नहीं आ रहा है कि कैसी प्रतिक्रिया दे। इतने सवालों में घिरा हुआ महसूस कर रहा है। अस्मिता ने एक कदम उसकी ओर बढ़ते हुए कहा, "क्या हुआ यकीन नहीं हो रहा कि मैं तुम्हें ढूँढ लूंगी। कैसे हो?" इतना कहते ही उसके हाथों को स्पर्श किया। उस छूने से अथर्व की जैसे तंद्रा भंग हुई। उसने अपना हाथ पीछे करते हुए कहा, "अस्मिता, इतने सालों बाद! यहाँ?" अस्मिता ने हाथ छुड़ाने पर उसे प्रश्न भरी निगाहों से देखते हुए कहा, "हाँ! चलो कहीं बैठकर बातें करते हैं।" अथर्व ने इधर-उधर देखा, एक जगह एक

टेबल और चार कुर्सियाँ खाली दिखी। उस दिशा में जाने का इशारा करते हुए आगे बढ़ा। अस्मिता ने बात बढ़ते हुए कहा, “बहुत सालों से तुम्हारा पता लगाने की कोशिश कर रही हूँ। तुमने अपना पुणे वाला नंबर भी बदल दिया था।” अथर्व ने खाना खाते हुए उत्तर दिया, “इतने सालों बाद ढूँढ़ने की ज़रूरत क्यों पड़ी?” “ज़िन्दगी में सब बदल गया है अथर्व, ज़िन्दगी तो मानो रुक गई थी। जिस दिन होश आया, सबसे पहला ख़याल तुम्हारा ही आया। तब से ढूँढ ही रही हूँ। तुमसे मिलने की उम्मीद भी छूटने लगी थी, लेकिन दो दिन पहले तुमको घर लौटते समय देखा। कल छुट्टी पर थी और आज सुबह से यहीं कैफ़ेटेरिया में बैठी हूँ, कि जब भी आओगे मिलूँगी।” अथर्व की आवाज़ भी भरी हुई सुनाई दे रही है। “हाँ, ज़िंदगी में बहुत कुछ बदल गया है।” बस इतना ही बोला उसने। फिर अस्मिता ने उसका नंबर लिया और शाम को काम के बाद मिलने की बात कहकर चली गई। अथर्व मना करना चाहता था पर उसने मना किया नहीं। उसके अंदर अजीब सी हलचल मची हुई है। इतने वर्षों बाद अचानक इस तरह अस्मिता को सामने देखकर वह गंभीर अस्मंजस में डूबता जा रहा है। शाम तक काम में ज़्यादा मन भी नहीं लगा। शाम को सामान उठाकर निकला तो नीचे अस्मिता इंतज़ार करती हुई मिली। अस्मिता ने ही कहीं बाहर जाने का आग्रह किया। अथर्व ने घर जाने की जल्दी दिखाई तो दोनों पास ही एक कॉफ़ी की दुकान पर जाकर बैठे। अथर्व ने ज़्यादा कोई बात नहीं की सिर्फ़ हाल-चाल ही पूछा। उसी बीच आरवी की बात पूछी। अस्मिता भावुक हो गई। रुआँसी होकर बोली, “अथर्व कहा था ना मैंने, ज़िंदगी बदल गयी है। आरवी नहीं रही! मेरी बस जान बच गई लेकिन हम उसे नहीं बचा सके।” अथर्व को कटो तो खून नहीं। कॉफी कप से गरम कॉफी ने होंठ जला

दिए। अस्मिता ने आगे बताया उस आखरी दिन के बारे में जब अथर्व से स्टेशन पर विदा लेकर दोनों बहने कानपुर के लिए रवाना हुई थी।

***

कानपुर पहुँची और दोनों बहनें घर के लिए स्टेशन से निकली। अस्मिता का मन बुझा हुआ था। जीवन से जुड़े एक बहुत करीबी रिश्ते को पीछे छोड़ आयी थी। बहुत तेज़ बारिश हो रही थी, और रास्तों पर भीड़ बढ़ गयी थी। अफ़रा-तफ़री में एक गाड़ी मिली जिसमें सामान डालकर वह घर की ओर निकले। भीड़ से बचने के लिए गाड़ी वाले ने कच्चे रास्ता लिया ताकि ज़्यादा रुकना न पड़े। रास्ता इतना मिट्टी वाला भी नहीं था फिर भी बहुत कम ही लोग गुजरते थे वहाँ से। संध्या हो गई थी और बारिश की वजह से धुंध के कारण साफ़ दिख नहीं रहा था। घर से कुछ ही दूरी पर एक ट्रक से टक्कर हुई और सभी घायल हो गए। वह ट्रक चालक मदद करने के लिए नहीं रुका, उल्टा गाड़ी निकालकर भाग गया। बारिश के कारण कोई दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। सब वहीं घायल अवस्था में पड़े रहे। बहुत देर बाद किसी आते-जाते यात्री ने उनकी मदद की। जब तक चिकित्सा आपातकालीन वाहन आई और उन्हें अस्पताल ले गई, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वाहन-चालक ने वहीं दम तोड़ दिया था। आरवी को भी कई आतंरिक चोटें आई थी। अस्पताल पहुँचने के लगभग 1 घंटे बाद उसने भी मृत्यु के समक्ष हाथ खड़े कर दिए। जब तक घर वालों को पता चलता और वह पहुँचते, तब तक सब बिखर चुका था। अस्मिता को भी जैसे-तैसे बचाया गया। लगभग 6 महीनों तक वह अस्पताल में ही थी। फिर धीरे-धीरे संभली। घर में सभी शोक में डूबे हुए थे और वक़्त निकलता जा रहा था। उस हादसे में फ़ोन टूट गया था, सब सामान

नष्ट हो गया था। अथर्व के पुणे का नंबर उसे याद रह गया था। ठीक होने के बाद उसने अथर्व से उसी नंबर पर संपर्क करने की कोशिश की। तब तक अथर्व की ज़िंदगी भी रुख़ बदलने लगी थी। वह भी अँधेरों में खोया हुआ अपने आप से लड़ रहा था। अनजाने में दोनों की ज़िंदगियाँ भटक गई थीं। साथ होना चाहते थे लेकिन हालात बदल चुके थे। अस्मिता आज भी ख़ुद को ही दोषी मानती है आरवी के जाने का। उस दिन अगर अथर्व की बात सुनकर रुक गई होती, तो ये सब कुछ नहीं होता।

***

अथर्व को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उम्मीद टूटने लगी थी। तभी एक नौकरी के सिलसिले में दिल्ली आना हुआ। पिछले 2-3 महीनों से वहीं काम कर रही थी कि अचानक दो दिन पहले अथर्व जादू से सामने आ खड़ा हुआ। कुछ पल उसे यक़ीन नहीं हुआ, फिर उसकी ओर बढ़ी तो अथर्व तब तक निकल गया। आज सुबह से उससे मिलने का इंतज़ार कर रही थी। इन बातों को बताते-बताते, अस्मिता कई बार रो पड़ी। उसके मन में कितनी हताशा, कितना दुःख है। अथर्व कमज़ोर पड़ने लगा। उसने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा भी कुछ हुआ होगा। जब वह अस्मिता के दूर जाने का शोक मना रहा था शायद अस्मिता को उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। अथर्व की पलकें भर आईं। अस्मिता का हाथ पकड़कर पूछा, "तुम ठीक हो?" अस्मिता ने आँसू पोंछते हुए हामी भरी। "तुम मिल गए, अब सब ठीक हो जाएगा।" इतनी बात अस्मिता से सुनते ही वास्तविकता ने मानो अथर्व के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। पियू घर में उसका इंतज़ार कर रही है। वह ये बात अस्मिता को बता देना चाहता था लेकिन ज़ुबाँ साथ नहीं दे रही। ऐसा नहीं कि पियू अब उसके लिए

ज़रूरी नहीं लेकिन ये अवस्था ही कुछ अजीब है। कॉफ़ी ख़त्म करके दोनों घर निकल गए। इन ही सब बातों की उधेड़-बुन में अथर्व मानसिक दबाव में है। घर पहुँचा तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था, कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। सुबह से शाम तक में जीवन ने ये कैसी करवट ली! क्या सही, कौन गलत, इसका निश्चय कौन करेगा? अस्मिता ने वहीं कार्यालय के पास एक घर किराए पर लिया है। अस्मिता ने अथर्व को एक घड़ी उपहार में दी। अथर्व ने मना किया लेकिन अस्मिता ने हक़ से देना चाहा। ये एक बहुत ही करीबी रिश्ता रह चुका था। अस्मिता के लिए शायद अथर्व इतना नहीं बदला है पर अथर्व के जीवन का संदर्भ अब अलग राह पर है। अस्मिता पास आकर बैठी और अथर्व का हाथ थामे उसकी आँखों ने देखने लगी। पुराने उन पलों का एहसास होने लगा है दोनों को, जब ऐसी किसी परिस्थिति में पास आना एक नई उम्मीद हुआ करती थी। अथर्व ये सब चाहता नहीं है परन्तु इन सब में पूर्णतः समाहित होता जा रहा है। प्रेम का बंधन या कोई भी रिश्ता पुराना नहीं होता। वक़्त की परत जमती है। *धागे टूट कर चाहे अलग हो जाए एक गाँठ से फिर सब जुड़ने लगता* है। अथर्व भी उन भावनाओं में बहने ही लगा कि ख़ुद को रोकते हुए उसने थोड़ी दूरी बनाई और कहा, "अस्मिता, कुछ नए मोड़ पर मेरे भी रास्ते बढ़े हैं। पिछले साल मेरी शादी हो गई है।" फ़ोन आगे बढ़ते हुए पियू की कुछ तस्वीरें दिखाई। "ये है पियू। मेरी बहुत पुरानी दोस्त और पत्नी।" अस्मिता का दिल फिर एक बार दर्द से भर गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि अथर्व इतने वर्षों तक उसका इंतज़ार करेगा, शायद उसने सोचा था कि उससे हो सकता है नफ़रत भी करता होगा लेकिन ये नहीं सोचा था कि किसी और का हो चुका होगा। आगे ज़्यादा कुछ बातें नहीं हुई। अथर्व अपना सामान लेकर घर लौट गया। आते ही नहाने गया और चल रहे इस पड़ाव पर ही सोचते हुए उसने पियू

को बैग से चार्जर निकालने के लिए कहा, जहाँ उसे वही घड़ी दिखी और नाम ‘अस्मिता’।

***

पियू के अचानक आए सवाल पर न चाहते हुए भी झूठ बोल बैठा कि किसी दोस्त ने दिया है। शायद तैयार नहीं था उस सवाल के जवाब के साथ। अब अनगिनत सवालों के घिरा महसूस कर रहा है। परेशान मिजाज़ में ही उसने झल्ला कर जवाब दिया, "जब देख ही लिया था, तो पूछा ही क्यों? और मेरी निगरानी करने से अच्छा है अपने काम पर ध्यान दो। मेरे सर में बहुत दर्द है, बत्तियां बुझा दो।" पियू ने अथर्व का ऐसा रूप पहले कभी नहीं देखा। इस तरह का जवाब देना और ऐसी बात पर, पियू को ठेस लगी। उसने हालात की नाज़ुकता को समझते हुए शांत स्वर में कहा, "जब लगे तुम्हें, मुझसे बात कर सकते हो, ज़रूर करना और मैं वादा करती हूँ मैं समझने की पूरी कोशिश करुँगी। ज़िंदगी में परेशानियाँ आएगी ही, तभी इसे ज़िंदगी कहते हैं। हर मोड़ पर मुझे अपने साथ ही पाओगे।" इतना कहकर एक तरफ़ होकर लेट गई। आज दोनों ने ही कसकर आँखें बंद की हैं और पूरे मन से नींद लगने का इंतज़ार कर रहे हैं। आज ही नींद ने जैसे सारे रिश्ते तोड़ लिए हैं। करीब 1-2 घंटे यूँ ही दोनों खामोश, मुँह फिराए लेटे रहे। या कहें, सोने का भान करते रहे। फिर अथर्व की धीरे से आवाज़ पियू के कानों में पड़ी, "जागी हो?" पियू ने भी बंद आँखों में ही जवाब दिया, "हाँ! नींद नहीं आ रही।" अथर्व उठकर बैठा और बत्ती जला दी। पियू भी उठ बैठी। चुप है, इंतज़ार कर रही है। अथर्व ने दबी आवाज़ और आँखें नीचे करके बात करनी शुरू की, "अचानक एक दिन अस्मिता ऑफ़िस में मिली। मैं ख़ुद हैरान था कि जिन्न की तरह अचानक सामने। मैं बात भी नहीं

करना चाहता था पर उसने आगे से आकर बात की। तब पता चला कि जिस दिन मुझसे आख़िरी बार मिलकर वो घर जाने के लिए निकली थी, रास्ते में उसकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी। और उसी हादसे में उसकी बहन की जान चली गई। जब मैं उसे फ़ोन करने की कोशिश करता था, और उसका फ़ोन नहीं लगता था वो इसलिए क्योंकि उसका फ़ोन टूट चुका था और वो अस्पताल में कई महीनों तक जीवन-मृत्यु के बीच अटकी थी। जब ठीक हुई और मुझे ढूँढ़ने की कोशिश की, तब तक मैं यहाँ दिल्ली आ चुका था। इतने सालों में जो भी कुछ हुआ, उसमें हम दोनों ही गलत फ़हमी का शिकार थे।" कुछ पल की ख़ामोशी के बाद आगे कहा, "लेकिन अब ये सब क्यों पता नहीं। समय भी क्या खेल खेल रहा है। मैंने उसे आज बता दिया कि मेरी शादी हो चुकी है और मैं आगे बढ़ चुका हूँ।" इतना कहकर अथर्व नजरें झुकाए बैठा रहा। उसकी आँखें भर आई हैं। कुछ देर कोई आवाज़ नहीं, कोई बात नहीं। पियू ने उसका हाथ अपने हाथों में लिया और धीरे से उसका सिर उठाते हुए बोली, "देखो मेरी तरफ़।" अथर्व ने नजरें उठाई तो उसकी डबडबाई आँखों को देखकर पियू की भी पलकें भर आईं। "प्यार करते थे उससे, और जो हुआ उसके साथ बहुत बुरा हुआ। अगर आज उसके लिए बुरा लग रहा है, उसमें कुछ गलत नहीं है। तुम्हारी ज़िन्दगी आगे बढ़ी लेकिन वो तो इतने सालों तक तुम्हारा इंतज़ार ही कर रही थी। गलत वो भी नहीं। इसलिए गलत-सही का बोझ उतार दो। मुझे तुम्हारी नीयत पर कोई शक नहीं है।" अथर्व ने पियू को गले से लगा लिया। अगले दिन अथर्व का मन पहले के बीते कुछ दिनों से हल्का महसूस कर रहा है। जहाँ एक तरफ़ उसने अस्मिता को अपने वैवाहिक जीवन के बारे में बता दिया, वहीं घर पर भी पियू से उस बारे में चर्चा हो चुकी है। शायद उसने अपना पूरा पक्ष दोनों ओर नहीं रखा परंतु उस विषय में अब बातें कुछ हद तक स्पष्ट

हैं। कुछ अस्मंजस की डोर हैं पर डोर थोड़ी सुलझ भी गई हैं। पियू ने इस परिस्थिति को बड़ी परिपक्वता से संबोधित किया है। इसे ही तजुर्बा कहते हैं, जो समय के साथ आपको कई परिस्थितियों में डालना और संभालना सिखाता है। पिछले कुछ दिनों से कार्यालय में भी अनमना और बेरुखा रहता था। आज मन हल्का है तो काम में भी मन लगा। उसे लगा अब अस्मिता उससे कोई संपर्क नहीं रखेगी। उसकी भी नज़रों के सामने नहीं आएगी तो धीरे-धीरे ध्यान भी अपने-आप हट जाएगा। समय के साथ, आँखों से जो ओझल रहते हैं, हम उन्हें भूलने लगते हैं।

***

उसकी यह मनोकामना आज तो पूरी नहीं हुई। जैसे ही दिन के खाने के लिए भोजनालय गया, अस्मिता फिर मिलने आई। उसे अंदाज़ा है लगभग कितने बजे वह खाना खाने जाता है। अब अथर्व की अद्भुत परिस्थिति है। मन को समझा रहा था कि कल से धीरे-धीरे अस्मिता की ओर से ध्यान हटा देना है, और अब सामने है तो मन चंचल भी है उसके साथ समय बिताने के लिए। वह परेशान है इस हालत से। उसे यही समझ में नहीं आ रहा कि आख़िर उसका दिल और दिमाग एक साथ क्यों नहीं हो रहे। दिमाग कुछ और सोचता समझता है, दिल अपनी ही किसी धुन में है। प्रेम बंधन था, इतना आसान नहीं दिल को समझाना। इन्ही सब में दोनों ने साथ भोजन किया। अस्मिता ने दफ़्तर में लौटने से पहले अथर्व को एक तरफ़ रोकते हुए कहा, "मैंने सोचा तुम्हारे जीवन में आए बदलाव के बारे में। देखा जाए तो इसमें तुमने मुझे कोई धोखा नहीं दिया। तुम्हें पता नहीं था और हाथ छुड़ाकर भी मैं ही गई थी। उस दिन रुक जाती तो शायद हम सबकी ज़िंदगी कुछ और होती। जो हुआ अब उसे बदल तो नहीं

सकते। तुमसे वो रिश्ता अब उसी रूप में जुड़ नहीं सकता, लेकिन फिर से तुम्हें खो दिया तो मेरा बहुत नुक़सान हो जायेगा। अपनी गलती की सज़ा इतने समय से भुगत ही रही हूँ। मेरा अथर्व ना सही, मेरे दोस्त अथर्व तो रहोगे ना?" इतना कहते हुए उसका गला भर आया। आँसू झाँककर, दिल की टीस बयाँ करने लगे। अथर्व इतना कठोर मनुष्य है ही नहीं कि किसी को भी जाने-अनजाने चोट दे दिल पर। और यहाँ तो बात उस लड़की की है जिसके लिए उसने एक समय अपना सब छोड़ दिया था। अस्मिता के आँखों से उस एक बूँद को पोंछते हुए कहा, "हम हमेशा दोस्त रहेंगे और ख़ुद को कोसना बंद करो। जो किस्मत में लिखा होता है वही होता है। हम हालात का शिकार होते हैं। जो भी हुआ उसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी। चलो अब ऐसी रोनी सी शक्ल को हटाओ और मुस्कुराते हुए ऑफ़िस जाओ। हम शाम को घर जाते समय मिलेंगे।"

और एक अनकहा सिलसिला शुरू हुआ दोस्ती के नाम पर। दोनों अक्सर कार्यालय में मिलते। कभी-कभी पुरानी बातें, कुछ पलों की ख़ामोशी बाँटते और फिर दिल को अपनी दोस्ती का दायरा समझाते। घर पर पियू से या परिवार में किसी से भी अस्मिता के बारे में दोबारा कोई बात नहीं हुई। अस्मिता शहर में अकेली है, ज़्यादा किसी से परिचित भी नहीं। कभी किराए के घर पर कोई मुसीबत आए या सप्ताहांत में कहीं जाना हो, पहला ख़याल उसे अथर्व का ही आता है। बार-बार उसे बुलाना भी ठीक नहीं लगता लेकिन अथर्व पर जो भरोसा है या वो जुडाव है, वो एक-तरफ़ा नहीं है।

अथर्व को दोस्ती के इस उपनाम की मर्यादा पता है। वह समझता है कि इस जुडाव को किसी अलग स्तर पर ले जाना उचित नहीं है। अस्मिता उसके सामने कई बार ऐसी परिस्थितियाँ रख देती है कि वह चाहकर भी पीछे हट

नहीं सकता और इंसानियत के नाते कहें या दोस्ती के, उसे एक कदम उसकी ओर बढ़ाना पड़ रहा है। एक शनिवार अचानक उसका फ़ोन आया कि उसे तुरंत नए किराए के मकान की ज़रूरत है। कारण बताया कि मकान मालिक ने घर खाली करने का की सूचना दी है। उसे समझ में नहीं आ रहा कहाँ रहना चाहिए और कोई नहीं है मदद के लिए। अथर्व ने उसके साथ घूम घूमकर घर ढूँढा, उसे सामान लाने में मदद भी की। इसी तरह कभी फ़ोन किया कि रास्ते में स्कूटी से गिर गई है। अस्पताल जाना है। कभी कुछ तो कभी कुछ। अब ऐसे कारणों के लिए मना भी नहीं किया जाता है। ऊपर से दिल्ली में अकेली है, बार-बार कहती है कि उसे अकेले आने जाने में कई बार डर लगता है। आज कल वैसे भी दिल्ली या किसी भी बड़े शहर में हादसे रूह को सिरहा जाते हैं, तो उसे नजर-अंदाज़ करना भी ठीक नहीं लग रहा। हर बार जाने से पहले, अथर्व पियू को बता कर जाता है। शुरू में पियू ने भी चिंता ज़ाहिर की, लेकिन अब ये इतना नियमित होने लगा है कि उसे भी खटक रहा है। ज़्यादा कुछ बोलती नहीं फिर भी खटक रहा है। बस ऐसे ही कुछ दिन और कटे।

***

देखते-देखते अथर्व पियू की शादी की पहली सालगिरह आने को है। 1 साल में कितना कुछ हुआ है, दोनों ख़ुश हैं एक साथ। इधर-उधर की सभी बातों को दरकिनार करके दोनों ने खुशियों का दामन थामा। पियू के शल्य चिकित्सा के बाद अब दावत करना ठीक नहीं लगा तो सबने सोचा पूरा परिवार साथ में शाम को कहीं बाहर खाना खाने जाएगा। सुबह के लिए पियू और अथर्व ने सिनेमा देखने की योजना बनाई। पियू ने उत्साह से अपने माँ-बाबा को फ़ोन करके रात्रि के भोजन के लिए आमंत्रित किया। रूपा जी और

सागर जी दोनों ने ही खुशी से निमंत्रण स्वीकार किया। तय हुआ आने वाले इतवार को, पूरा परिवार एक साथ जश्न मनाएगा। पियू ने अथर्व से आग्रह किया कि दफ़्तर से एक दिन का अवकाश लेकर उसके साथ खरीददारी करने चलें। पहली सालगिरह है सबके लिए उपहार लेना चाहती है। दफ़्तर के काम के दबाव के अनुसार अथर्व ने गुरुवार को जाने की योजना बनाई। पूरे दिन की छुट्टी तो नहीं मिली, परन्तु आधे दिन की छुट्टी की व्यवस्था हो गयी। पियू ने भी छुट्टी ले ली। इसी बीच अथर्व अस्मिता से कार्यालय में मिला तो बातों बातों में उसने गुरुवार की छुट्टी और उसकी सालगिरह का ज़िक्र किया। अस्मिता पहले बिलकुल अच्छे से बात कर रही थी, लेकिन इस बात को सुनते ही अचानक उसके मुख पर परिवर्तन दिखा। उसने कुछ कहा नहीं, ऐसे ही क्या खरीदना है, क्या-क्या योजनाएँ हैं सालगिरह मनाने की, यही सब बातें की। दोनों अपने-अपने काम पर लौट गए। अगला दिन ही गुरुवार है तो अथर्व आज जल्दी ही कार्यालय आ गया कि थोड़ा-सा काम निपटा कर, लगभग 12:00-12:30 तक निकल जाएगा। वहीं पियू को भी तैयार रहने के लिए कहा है। यहाँ जैसे ही वह निकलने को हुआ, अस्मिता का फ़ोन आया। अथर्व को लगा शायद भोजन पर जाने के लिए पूछना होगा लेकिन अस्मिता की आवाज़ बहुत थकी हुई सुनाई दे रही है। अथर्व ने पूछा सब ठीक है कि नहीं तो वहाँ से जवाब आया, "मेरे सर में बहुत दर्द हो रहा है, लग रहा है अभी गिर जाऊँगी, तुम्हारी मदद चाहिए।" घड़ी देखा तो 11:30 हो गए हैं। अभी निकलेगा तब 12:15 के लगभग घर पहुँचेगा। अस्मिता की तबियत को इस तरह नजरअंदाज़ करना भी ठीक नहीं लग रहा। अथर्व ने सोचा परिसर में ही छोटा-सा एक चिकित्सा केंद्र है, वहीं अस्मिता को ले जाएगा और वहीं से घर के लिए निकल जाएगा। उसने अस्मिता से अपने कार्यालय की इमारत के बाहर आने को कहा।

इधर यह भी जल्दी से पहुँच गया। देखा कि अस्मिता असहज महसूस कर रही है। उसे लेकर चिकित्सक के पास गया। चिकित्सक ने नब्ज़ देखी और कहा, सब ठीक ही लग रहा है, शायद तनाव की वजह से या पेट में गैस बनने की वजह से हुआ होगा। थोड़ी देर वहीं आपातकालीन भाग में आराम करेगी तो ठीक हो जाएगी। एक दर्द निवारक दवा भी दी। अथर्व ने उसे वहीं आराम करने की बात कही और घर के लिए निकलने लगा। तभी अस्मिता ने कराहते हुए उसका हाथ थामा और कहा, "सुनो ना अथर्व! मैं जानती हूँ तुम्हे देरी हो रही है, लेकिन मुझे बिलकुल ठीक नहीं लग रहा। ऐसा लगता है मानो तबियत और बिगड़ने वाली है। उल्टी भी आ रही है। थोड़ी देर रुक जाते तो अच्छा होता। मैं यहाँ किसी को जानती भी नहीं, अगर तबियत सच में ज़्यादा खराब हो गयी तो बड़े अस्पताल तक जाने में समस्याएँ होगी। ज़्यादा देर नहीं बस थोड़ी देर रुक जाओ।" अथर्व ने टालने की कोशिश करते हुए कहा, "डॉक्टर ने बोला ना तुम ठीक हो, इस दवाई से आराम मिल जाएगा। थोड़ा सब्र रखो।" अस्मिता ने ज़ोर देते हुए कहा, "ये डॉक्टर मुझे ठीक नहीं लग रहा, इससे पहले भी एक बार यहाँ आई थी। बोला कुछ नहीं है और फूड पॉइज़न हो गया था। बड़ी मुश्किल में पड़ गयी थी। देखो डर नहीं लगता तो तुमको यूँ ना रोकती, बस थोड़ी देर।" अथर्व इस बात को टाल नहीं सका। उधर घड़ी में वक़्त दौड़ लगाए हुए है। उसने हामी भरी। बाहर जाकर पियू को फ़ोन पर पूरी घटना बताई और साथ आश्वासन दिया कि वह अगले 2 घंटे के भीतर घर पहुँच जाएगा। सच बात बताई जाए, तो पियू को बुरा लगा। उसे यह महसूस हुआ कि यह जो भी हो रहा है, वह मात्र संयोग नहीं है। यह अस्मिता शायद जान-बूझकर कर रही है। थोड़ी देर अथर्व वहीं रुका। कुछ देर में अस्मिता सहेज महसूस करने

लगी तो अथर्व घर के लिए निकल गया। अस्मिता भी अपने कार्यालय में चली गई।

पियू असहज लगी। देरी करने के लिए अथर्व ने उससे प्यार से माफ़ी माँगी तो मान भी गई। सारी बातों को दर-किनार करके दोनों ने ख़रीददारी की, समय बिताया और घर लौटे। पियू ने माँ, नंदिनी, अपने और अथर्व के लिए कपड़े ख़रीदे। नंदिनी के लिए एक जोड़ी सुंदर-सी नक्काशी वाली पायल खरीदी। नंदिनी ने बड़े प्यार से पायल ली और ले जाकर अपने अलमारी में बाकी पायलों के समूह के साथ रख दिया। पैरों में आज भी वही एक पायल है। उम्र और वक़्त के बदले हुए मौसमों की तरह अलग-अलग साँचे से जुड़ी हुई वही पायल।

***

इतवार सुबह से अथर्व और पियू जल्दी तैयार हुए। सभी घर में उत्साहित हैं। माँ ने आज खीर बनाई है। पियू-अथर्व ने तैयार होकर माँ का आशीर्वाद लिया, साथ में पूजा की और बाहर जाने की तैयारी करने लगे। अभी तैयार हो ही रहे हैं कि अस्मिता का फ़ोन आता है। अथर्व नहाने गया है, इसलिए पियू ने फ़ोन देखा। उसे पिछली कुछ घटनाओं ने चिढ़चिढ़ा कर दिया है, इसलिए उसने फ़ोन नहीं उठाया। घंटी बजकर बंद हो गई। कुछ देर बाद दोबारा घंटी बजी। अथर्व स्नानगृह से बाहर आया तब तक 4-5 फ़ोन आ चुके हैं। अथर्व ने फ़ोन देखा तो मिस्ड कॉल दिखी और साथ ही फिर से फ़ोन बज उठा। कॉल देखकर, अथर्व ने फ़ोन उठाया। उधर अस्मिता दर्द में कराह रही है और रो रही है। अथर्व थोड़ा हड़बड़ा गया। उसने पूछा, "अस्मिता, क्या हुआ? रो क्यूँ रही हो?" रोने की बात सुनकर पियू भी थोड़ा सकपकायी। उसी पल उसे बुरा भी

लगा कि फ़ोन को अनदेखा किया। सच में कोई बड़ी बात होगी। तभी फ़ोन पर अथर्व ने उत्तर दिया, "तुम रुको, मैं आ रहा हूँ गाड़ी लेकर। मैं अस्पताल ले चलूँगा। तब तक कोशिश करो किसी तरह हाथ पैर को दबाने की ताकि खून ज़्यादा न बहे।" इतना सुनकर पियू भी घबरा गई। फ़ोन रखते ही उसने अथर्व को इशारे से पूछा क्या हुआ तो अथर्व ने जल्दी में बताया कि घर में कुछ सफ़ाई कर रही थी और गिर पड़ी, नीचे काँच का गुलदस्ता रखा था, वो टूट कर सब जगह चुभ गया है। बहुत खून बह रहा है। कोई अस्पताल ले जाने वाला नहीं है। यह सुनकर पियू को बेहद बुरा लगा कि उसने अपनी चिढ़ के कारण फ़ोन नहीं उठाया, अगर ज़्यादा कुछ हो गया है तो वह ख़ुद को कैसे माफ़ करेगी। अथर्व जैसे ही निकलने लगा, पियू ने कहा कि यदि कोई भी ज़रूरत हो तो बताए, वो आ जाएगी। अथर्व ने 'हाँ' में सिर हिलाया और जल्दी में चला गया। माँ ने ये बातें सुनी तो पियू से पूछा क्या हुआ। पियू ने बताया, अथर्व की सहकर्मी है, वह दुर्घटनाग्रस्त हुई है। उसी को अस्पताल लेकर जाना है। माँ भी चिंतित हुई। पियू ने उनसे अस्मिता के बारे में कोई बात नहीं की। केवल सहकर्मी कहकर, बात वही छोड़ दी।

अथर्व जल्दी ही अस्मिता के घर पहुँचा, दरवाज़ा खुलते ही देखा कि अस्मिता लहुलुहान बैठी है। और वक़्त बर्बाद न करते हुए, वह उसे अस्पताल लेकर गया। वहाँ चिकित्सक ने उसे देखते ही प्रक्रिया कक्ष में दाखिल किया। बड़ी मुश्किल से काँच निकाले, पट्टी लगाई। छोटे-छोटे काँच के टुकड़े भीतर तक घुस गए थे क्योंकि वो थोड़ी ऊँचाई से गिरी थी। बहुत दर्द में है। थोड़ी देर बाद उसे बाहर सामान्य कक्ष में लाया गया। सभी जगह पट्टियाँ लगाई हुई हैं। कुछ देर बाद चिकित्सक आए तो उन्होंने अथर्व का परिचय माँगा। उसने एक

दोस्त के रूप में अपना परिचय दिया। तब चिकित्सक ने बताया कि सारे टुकड़े निकाल दिए हैं, लेकिन घाव भरने में समय लगेगा और कुछ निशान समय लेंगे जाने में। कुछ दिनों तक घर पर ही रहकर आराम करेगी तो जल्दी राहत मिलेगी। फिर दवाइयों के बारे में बता कर चले गए। अथर्व ने पियू को फ़ोन करके अस्मिता का हाल बताया तो पियू को भी बेहद बुरा लगा। वह मिलना चाहती है अस्मिता से। माफ़ी भी माँगना चाहती है कि उसके बचपने की वजह से आज एक बड़ा हादसा हो सकता था। अथर्व से ये बात नहीं कही, केवल कहा कि मिलना चाहती है, उसकी इतनी गंभीर अवस्था है। अथर्व को भी बात ठीक ही लगी, तो उसने हामी भर दी। अस्मिता के पास जाकर बैठा। दर्द निवारक दवाइयाँ चल रही हैं, पर सहज नहीं हुई है अभी भी। अथर्व ने उसे दिलासा दिया और थोड़ा बातों में ध्यान बटाने की कोशिश की। "तो ये करतब कैसे किया?" अस्मिता ने धीमी आवाज़ में बताया कि अलमारी साफ़ कर रही थी, देखा अलमारी के ऊपर भी काफ़ी धूल जमा हो गई थी। वही साफ़ करने के लिए चौकी पर चढ़ी, वहाँ रखा गुलदास्ता नीचे रखकर सफ़ाई करने लगी। तभी पैर लड़खड़ाया और गिर पड़ी। गिरी तो गिरी गुलदास्ते पर गिरी और ये हाल हो गया। अथर्व ने ठिठोली करते हुए कहा, "स्पाइडर मैन बनने की ज़रूरत नहीं है। अगली बार से ध्यान रखना।" थोड़ी देर उसके पास बैठा बातें करता रहा। कुछ देर में पियू आ पहुँची। पियू को देखकर अथर्व ने मुस्कुराकर उसे कक्ष की ओर आने का इशारा किया और अस्मिता से परिचय करवाया। अस्मिता चौंक गई। उसे आशा नहीं थी उसके आने की, और न ही अथर्व ने इतनी देर में ऐसा कुछ बताया। वो मुस्कुराकर मिली पियू से, परन्तु उसे अच्छा नहीं लगा। पियू ने नम्रता से उसके सर पर हाथ फेरा और चिंता न करने को कहते हुए उसकी जल्दी ठीक होने की कामना की। अस्मिता का व्यवहार

असामान्य लगा। उसने लगभग न के बराबर पियू से बात की। किसी भी बात का उत्तर अथर्व को देखकर दे रही है। पियू ने यह बात गौर की। उसने कुछ कहा नहीं। परिस्थितियाँ हैं भी नहीं इन सब बातों को ज़्यादा सोचने की, वैसे भी फ़ोन को अनदेखा करने वाली बात पर सुबह से बुरा महसूस कर रही है। पियू ने पूछा, "डॉक्टर ने क्या कहा, घर कब जा सकते हैं?" अथर्व ने सामने रखी फ़ाइल को टटोलते हुए कहा अभी कुछ ऐसा बताया नहीं है लेकिन शायद 2-3 घंटे में जाने देंगे। अस्मिता ने बात काटते हुए कहा, "नहीं! मैं नहीं जाना चाहती आज। घर पर कोई होगा ही देख भाल करने के लिए, सोच रही हूँ आज रात यहीं रुक जाती हूँ। कल तक थोड़ा दर्द भी कम हो जाएगा फिर आराम से घर जा सकूँगी।" वैसे एक तरह से बात ठीक ही कही है। यहाँ अस्पताल में रहेगी तो मदद हो जाएगी। अथर्व ने चिकित्सक से इस बारे में बात कर ली और दाखिल होने की औपचारिकताएँ पूरी कर दी। इसी बीच पियू बहुत देर अस्मिता के पास बैठी जब अथर्व दाखिला करवाने में व्यस्त है। अस्मिता ने लेकिन आगे से एक बात भी नहीं की। जितना पियू बोलती या पूछती उतना ही जवाब देती। पियू को यह बात अजीब लगी लेकिन फिर सोचा दर्द में है इसलिए मन नहीं होगा बात करने का तो उसने भी ज़्यादा दबाव नहीं दिया। अथर्व लौटा और उसे दूसरे कक्ष में ले गए। वहाँ जाकर सब कुछ ठीक तरह से तय करने के बाद पियू ने अस्मिता को आराम करने की सलाह दी और अथर्व से घर चलने के लिए कहा तो अथर्व ने भी अस्मिता से विदा लिया और दोनों निकलने लगे। तभी वहाँ की एक उपचारिका ने अथर्व को रोकते हुए पूछा, "आप जा रहे हैं तो यहाँ मरीज़ के साथ कौन रहेगा?" अथर्व ने आश्चर्य से पूछा, "यहाँ? मतलब…" उपचारिका ने उत्तर दिया, "हाँ! यहाँ मरीज़ को अकेले नहीं रख सकते। एक परिचारक का रहना ज़रूरी है।" फिर अस्मिता की

ओर इशारा करते हुए बोली, “मैं प्रतिक्रिया कक्ष में थी जब उनका इलाज़ चल रहा था। उन्होंने वहीं पूछा था कि यहाँ अगर रात को रुकना पड़ेगा तो किसी का साथ में रुकना ज़रूरी है कि नहीं। उनको वहीं सब बता दिया गया था। अब किसी एक को हमेशा रुकना है मरीज़ के साथ। आप लोग देख लीजिए।” बोलकर वह निकल गई। पियू ने सर घुमा कर अस्मिता की ओर देखा तो उसके चेहरे पर एक कुटिल स्कुराहट दिखी। वो जानती थी कि दाखिला होने पर किसी को रुकना ज़रूरी है। अथर्व और पियू उसके पास गए और अथर्व ने पूछा, “तुमको पता था किसी को साथ रुकना होगा, बताया क्यों नहीं?” अस्मिता ने तपाक से उत्तर दिया, “हाँ मुझे बताया था इन लोगों ने लेकिन मैं चुप थी कि उन्होंने अगर अनदेखा कर दिया तो तुम चुपचाप निकल जाओगे। मुझे पूछा गया तो मैं कह दूँगी कि कोई नहीं आ सकता अब मेरी निगरानी के लिए। मुझे नहीं पता था वो उपचारिका यहाँ भी होगी। तुम लोग परेशान मत हो, तुम लोग चुपचाप निकल जाओ, मैं यहाँ देख लूंगी। यह कहते-कहते वह शौचालय जाने के लिए उठी और बिस्तर पर गिर पड़ी। अथर्व ने उसे सहारा दिया। पियू ने हाथ बढ़ाते हुए उसे शौचालय तक ले जाने का प्रस्ताव दिया। तभी अस्मिता ने अथर्व के सहारे पर ही दोबारा उठने की कोशिश की। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसने पियू का हाथ देखा नहीं। पियू परिस्थितियों को भली-भांति भाँप रही है। उसे मन में इन गतिविधियों की हर एक चरण साफ़ महसूस हो रही है। इतनी जल्दी कोई निष्कर्ष नहीं निकालना चाहती इसलिए मौन है। अथर्व ने शौचालय के दरवाज़े तक अस्मिता को सहारा दिया, और फिर धीरे से बिस्तर पर लेटने में मदद की। तभी अस्मिता ने अथर्व से कहा, "अभी तो अस्पताल के कपड़े हैं लेकिन कल घर लौटने के लिए साफ़ कपड़े नहीं हैं मेरे पास। जिन कपड़ों में आयी थी उनपर तो ख़ून लगा हुआ है।” अथर्व ने

समझाया की कल सुबह जाकर ले आएगा उसके घर से। लेकिन अस्मिता ने दोबारा ज़ोर देते हुए कहा, "कल पता नहीं कब अस्पताल से छुट्टी मिलेगी। सुबह ही छुट्टी दे दी तो औपचारिकता में भी समय लग जायेगा और घर से कपड़े लाने में हड़बड़ी हो जाएगी। बेहतर होता यदि किसी तरह आज ही कपड़ों की व्यवस्था हो जाती और रक्त लगे कपड़ों को पानी में डाल दिया जाता।" अथर्व ने सोचा वो अस्मिता के घर से जाकर ले आएगा लेकिन अस्मिता ने पियू का हाथ थामकर धीरे से कहा, "प्लीज़ तुम चली जाओगी मेरे घर? मेरे निजी वस्त्र अथर्व लाएगा तो अजीब लगेगा। यहाँ से 10 मिनट पर ही है मेरा घर।" पियू सहमत हुई और उसके घर की चाबी अथर्व से माँगी। अथर्व ने जाने का आग्रह किया परंतु पियू ने कहा उसका जाना ही ठीक है। लड़कियों के वस्त्र हैं तो शायद उसे ठीक से समझ में नहीं आएँगे। अथर्व ने चाबियाँ पकड़ा दी। अस्मिता को अस्पताल लाते समय उसके घर को बंद करके चाबियाँ अपने पास ही रख ली थी। अथर्व पानी भरने गया तो पियू ने पूछा कौन से कपड़े लाने हैं और कहाँ रखे हैं। अस्मिता ने एक अप्रत्याशित उत्तर दिया, "वहीं कमरे में एक अलमारी होगी, उसमें ऊपर वाले दराज में ही एक नीली रंग की टीशर्ट रखी होगी। बस वही लेते आना। अथर्व ने कई साल पहले दी थी जब हम साथ थे। बहुत आरामदायक है। उसपर 'आई लव यू' लिखा होगा, तुम पहचान जाओगी। और बाकी वहीं पजामा और मेरे निजी वस्त्र होंगे, कोई भी लेते आना। और बहुत बहुत धन्यवाद जो तुम मेरे लिए ये कर रही हो।" पियू टीशर्ट वाली बात पर दंग रह गई। जो उसे इतने दिनों से अनुभव हो रहा है, या आज जो कुटिल मुस्कान उसने अस्मिता के चेहरे पर देखी या उसके मन में जो बातें खटक रही हैं, सब कहीं-न-कहीं सच है। कुछ बोलती या क्या ही बोला जा सकता है जब उसे सब साफ़-साफ़ समझ में आ

रहा है। एक अजीब परिस्थिति में उलझी हुई है। अथर्व आया तो उसने पियू को जल्दी जाने को कहा ताकि और रात न बीते।

उधर अथर्व ने घर पर फ़ोन करके अपनी परिस्थिति बताई। सभी घर पर उनका इंतज़ार कर रहे हैं कि दोनों लौटेंगे तब साथ में निकलेंगे। माँ को अथर्व ने बताया कि जिस लड़की को लेकर अस्पताल आए हैं वह बहुत दर्द में है और अस्पताल में उसे अकेला नहीं रहने दिया जा सकता। हो सकता है पियू को रुकना पड़ेगा। आज शाम को जो बाहर जाने के बारे में सोचा था वो होने की संभावना नहीं लग रही है। माँ से वादा किया कि कल दोनों छुट्टी लेंगे और सालगिरह साथ में ही मनाएंगे। उधर पियू के माँ-बाबा को भी सूचित किया गया। सुनंदा जी को परिस्थिति गंभीर लगी तो उन्होंने अथर्व की बात पर कोई सवाल नहीं उठाया लेकिन रूपा जी ने को ये ठीक नहीं लगा। उनकी बेटी के लिए आज एक महत्वपूर्ण दिन है, उनकी भी आशाएँ बँधी हैं उन खुशियों से, यूँ किसी दूसरी लड़की के लिए, वो भी जो अथर्व के साथ काम करती है। रूपा जी के अनुसार इतने बड़े शहर में उसकी सहेलियाँ होगी या परिवार में जब पता चला होगा कि कुछ गंभीर विषय है तो दिल्ली कितनी ही दूर है। माँ के मन के सवाल तर्क संगत नहीं स्वाभाविक प्रवृत्ति से ज़्यादा उभरते हैं। फिर भी पियू के पिता ने उन्हें ऐसा सोचने के लिए निरुत्साहित किया। ऐसा नहीं सागर जी के मन में ऐसी कोई शंका या दुविधा उभरी नहीं है परन्तु उन्होंने अथर्व के मान के ख़ातिर इस विषय पर उस समय किसी भी तरह की चर्चा को प्रोत्साहन देना उचित नहीं समझा।

***

अस्मिता के घर की चाबियाँ लेकर, पियू निकल गई। उसके जाते ही अस्मिता ने भरी आँखों से अथर्व की ओर देखते हुए उसे अपने पास बैठने का इशारा किया। अथर्व ने संत्वना देते हुए पूछा, “बहुत दर्द हो रहा है?” अस्मिता ने ‘हाँ’ में इशारा किया, उत्तर में अथर्व ने “सब ठीक हो जायेगा” कहकर उसे शांत करने की कोशिश की। अस्मिता ने भीगी पलकों और भारी आवाज़ में अथर्व के हाथों को अपने हाथ में लिया और बोली, “आज जो भी तुमने मेरे लिए किया, मैं तुम्हें इसके लिए जितना धन्यवाद करूँ, कम है। बहुत अफ़सोस होता है कि अपनी ग़लती की वजह से मैंने तुम्हें खो दिया है। काश हम साथ होते, तो ज़िंदगी कुछ और होती। पियू से पहले मेरे हुए, फिर भी वह बहुत भाग्यशाली है कि उसे तुम मिले। ऐसा मत सोचना तुम्हारे लिए मैं ख़ुश नहीं हूँ। मैं ख़ुश हूँ कि तुम ज़िंदगी में आगे बढ़ चुके हो पर अपने लिए अफ़सोस है। आरवी भी चली गई, तुम भी आगे बढ़ गए। जो मेरा अपना होता है किसी-न-किसी वजह से भगवान उसे मुझसे दूर ले जाता है। अजीब किस्मत है मेरी।” अथर्व इन बातों से आहत हुआ क्यूँकि एक समय था जब अथर्व भी इतने ही गहरे बंधन में बँधा था। आज केवल गाँठ है जिसे दोस्ती का नाम दिया है। अस्मिता के आँसू और उसे पट्टियों में लिपटी हुई देख, उसका दिल भी पसीज गया। उसे सांत्वना देते हुए कहा, “अस्मिता, रिश्ता चाहे बदल गया हो, लेकिन आज भी मैं हूँ। जब कभी ज़रूरत पड़ेगी, मैं पूरी कोशिश करूँगा साथ निभाने की। तुम ये सब बातें मत सोचो। आराम करो।” अस्मिता ने कहा, “अगर ऐसा है, तो आज रात तुम रुक सकते हो अस्पताल में? पियू का साथ भी ठीक है मगर तुम्हारे साथ जितना सहज रह पाऊँगी उतना पियू के साथ नहीं होगा। बस थोड़ी ही देर पहले मिली हूँ उससे और तुम मेरे जितने करीब आ चुके हो उतना नज़दीक आज तक कोई नहीं आया।” कहते-कहते अस्मिता ने अथर्व की

आँखों में झाँकने की कोशिश की। अथर्व के दिमाग में भी कुछ पुराने नज़दीकी पल उभर आए जब अस्मिता से हर तरह की करीबी बढ़ने लगी थी। उम्र की चंचलता, आकर्षण सभी जीवों को मोहित करता है। कुछ पलों के लिए दोनों उन पुरानी अनुभूतियों में खो गए। अथर्व ने बात को मोड़ते हुए कहा, "वह एक ज़िंदगी का किस्सा था, ख़ैर मैंने कहा न, तुम आराम करो। अगर मेरे रहने से तुम्हें ज़्यादा सुविधा है तो मैं रुक जाऊँगा। पियू की भी तबियत वैसे इतनी ठीक नहीं है। अभी कुछ महीनों पहले ही उसका ऑपरेशन हुआ है। घर चली जाएगी तो उसे भी आराम रहेगा।" अस्मिता को अथर्व की बात से तसल्ली हुई और उसने थोड़ी देर के लिए आँखें बंद की। अथर्व के कानों में लेकिन अनजाने और अनचाहे ही वो बातें घूमने लगी जिनका ज़िक्र अस्मिता ने किया। पुराने ख्यालों का रेला। ऐसा लग रहा है मानो सभी पल जीवंत होने लगे हैं। हम पूरे संतुलन के साथ अपनी पुरानी यादों को दिमाग के किसी कोने में डाल देते हैं ताकि बार-बार याद आकर आज ज़िंदगी को परेशान न करें। समय भी इसमें साथ देता है। लेकिन कभी-कभी परिस्थितियों की आँच में वो सारे ख़याल पिघल कर नज़रों के सामने आ खड़े होते हैं। मन फिर उन्हीं बातों में घिर कर उन ख़यालों में डूबने लगता है।

***

यह हुआ अस्पताल का हाल जहाँ अस्मिता आराम कर रही है। अथर्व के मन में एक तरफ़ आज के आए बंधन का आभास है और दूसरी तरफ़ पुरानी गाँठों में कैद किस्से। उधर पियू, अस्मिता के घर पहुँची। छोटा ही मकान है और कमरे के एक तरफ़ अलमारी है जिसके बारे में अस्मिता ने बताया था। अलमारी खोली तो जैसा-जैसा विवरण उसे मिला था, सभी कपड़े मिल गए।

अलमारी बंद करके वह कमरे से निकल ही रही है कि उसका ध्यान अचानक वापस अलमारी पर गया। अस्मिता ने बताया था वह अलमारी के ऊपर जमे धूल की सफ़ाई करने चढ़ी थी और चौकी से गिर पड़ी। अलमारी के ऊपर रखा गुलदस्ता जिससे इतनी चोट लगी वो ज़मीन पर रखा था। लेकिन ये क्या! अलमारी के ऊपर तो 2 बड़ी अटैचियाँ चादर से ढकी हुई रखी हैं। जिसपर धूल भी है और लगता नहीं काफ़ी समय से किसी ने उसे हटाया है। पियू ने उस कमरे में चारों ओर देखा तो कहीं कोई टूटा काँच या चौकी नहीं दिखी। बाहर वाले कमरे में नज़र घुमाई तो वहाँ सोफे के पास, टूटा हुआ काँच है। वहाँ भी कोई चौकी नहीं दिखी। उसे क्या मन हुआ उसने पूरे घर में चौकी ढूँढी लेकिन कहीं कोई चौकी नहीं है। बिखरे हुए काँच के टुकड़ों को देखकर लगा किसी ने जैसे पटक के तोड़ा है। छोटे-छोटे टुकड़े कोनों तक बिखरे हुए मिले। कुछ फूल सामने टेबल पर रखे हैं। पियू को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी ने पहले गुलदस्ते से फूल निकालकर टेबल पर रखा, फिर उसे ज़मीन पर पटक पर फोड़ा और फिर शायद उस पर गिर पड़ा या जान बूझकर गिरना चाहती थी! क्योंकि जो हालत अस्मिता ने बयान की या देखी पियू ने, ये संभव कम है कि वो गिरी, उसके बाद उठकर उसने फूल इकट्ठा करके टेबल पर रखा और किसी को बुलाकर चौकी दे दी। अब उसके दिमाग में प्रश्नों का चक्रव्यूह घूमने लगा है। इतनी सारी हो रही घटनाएँ और अब ये सब कुछ, योजना लग रही है। उसने घर की कुछ तस्वीरें ली और अस्मिता का सामान लेकर अस्पताल चली आई।

अस्मिता के कक्ष में पहुँची तो देखा, अथर्व और अस्मिता बातें कर रहे हैं। अथर्व ने उसके हाथ से सामान लेते हुए कहा, "ये लो, यहाँ दराज़ में रख दिए साफ़ कपड़े। और जो गंदे कपड़े हैं वो अस्पताल में ही लॉन्ड्री वाले को

ले जाने के लिए कहा है। वह थोड़ी देर में आकर ले जायेगा और सुबह साफ़ करके दे जायेगा।" पियू ने पूछा नहीं कि क्या बात कर रहे थे लेकिन अस्मिता ने आगे से बोला, "पियू एकदम गलत समय पर आई हो!" पियू ने प्रश्न भरी निगाहों से देखा। कुछ बोलती उससे पहले अस्मिता बोल पड़ी, "मेरा मतलब थोड़ी देर बाद आती तो अथर्व मेरे प्रश्न का जवाब देने से नहीं बच पाता। असल में हमारी कुछ पुरानी यादें साझा कर रहे थे। उन दिनों हमारे साथ एक किस्सा हुआ था जिसका जवाब आज तक अथर्व ने मुझे नहीं दिया। आज उसी का जवाब माँग रही थी और तुम आ गई।" पियू ने बस हल्की एक मुस्कुराहट दी। अथर्व ने उस बात को टालते हुए अस्मिता को आराम करने की सलाह दी। अस्मिता ने दोबारा उठने के लिए अथर्व के आगे ही हाथ बढ़ाया ताकि उसका सहारा मिले। अथर्व ने सहारा देकर उठा दिया। पियू अब सिर्फ़ गौर कर रही है। अस्मिता शौचालय गई तो पियू ने अथर्व को धीरे से कहा, "अथर्व ये सब नाटक है! घर पर वो कोई गलती से नहीं गिरी है। तुम्हें कॉल करके बुलाना, अस्पताल में रुकने का आग्रह करना, ये जानते हुए कि किसी को रुकना होगा साथ में, और मैंने उसके घर पर भी देखा, गुलदस्ता अलमारी के पास नहीं, सोफ़ा के पास था। ये सब वो जान बूझकर कर रही है।" उसकी बातों से अथर्व को थोड़ी चिढ़ हुई और आश्चर्य भी हुआ कि पियू ऐसी बातें क्यों कर रही है। उसने बात को टालने के उद्देश्य से कहा, "तुम ज़्यादा सोच रही हो। वो वैसे भी बहुत दर्द में है। अलमारी, सोफ़ा क्या फर्क पड़ता है, दर्द में है वो। सारे कपड़े खून से लतपत।" पियू उसे आगे कुछ बोलती, अस्मिता आ गई। अथर्व ने उसे सहारा देते हुए पियू से कहा, "पियू, रात ज़्यादा हो रही है, तुम घर जाओ और आराम कर लो। इतना तनाव तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। मैं यहीं रुकता हूँ।

चाहिए तो मैं घर छोड़ दूँ तुम को?" पियू ने आग्रह किया रुकने का लेकिन अथर्व को उसकी सेहत की भी चिंता है। उसने उसकी बात नहीं मानी और घर जाकर आराम करने को कहा। अस्मिता ने भी साथ देते हुए पियू से घर जाने को कहा। पियू इस बात से खीजी हुई लग रही है क्योंकि उसके सामने जो दृश्य और घटनाएँ हो रही हैं, अथर्व उनको देख नहीं पा रहा और न ही उसकी बात सुन रहा है। अथर्व उसे अस्पताल के बाहर तक छोड़ने गया तो पियू ने फिर एक बार कोशिश की उसे समझाने की, कि ये सब सोच-समझ के किया है अस्मिता ने। अथर्व भी सुबह से भाग-दौड़ रहा है, थक गया है ऊपर से अब पूरी रात अस्पताल में। अस्मिता की बातें भी दिमाग में काया बढ़ा कर घूमने लगी हैं। उस पर पियू का बार-बार इस बात को कहना। उसे लग रहा है पियू भावनात्मक रूप से असुरक्षित महसूस कर रही है, इसलिए उसके दिमाग में ऐसी बातें आ रही हैं। अथर्व ने उसे शांत करने की कोशिश की लेकिन पियू अपने अवलोकन पर अटल है। अथर्व को ये बात ख़त्म होते हुए नहीं दिख रही है इसलिए उसने खिज कर पियू से कहा, "अगर ऐसा लगता है तुमको तो ऐसा ही सही। लेकिन अभी न्याय करने का समय नहीं है। फ़िलहाल वो दर्द से कराह रही है, अब कहाँ से गिरी उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण है, गिरी है। तुम बहुत ज़्यादा सोच रही हो, घर जाओ।" बोलकर गाड़ी रोकते हुए, उसे गाड़ी में बिठा कर रवाना कर दिया। पियू को इस बात का बहुत दुःख हुआ कि अथर्व उसे समझने की कोशिश नहीं कर रहा और अस्मिता के बहकावे में आ रहा है। घर जाते हुए पूरे रास्ते, रुआँसी रही। सरपट दौड़ता रास्ता, कतार से निकलती बत्तियों की रौशनी, पेड़-पौधे, लोग, भीड़, सब एक तरफ़ और एक तरफ़ मन का शोर। गाड़ी से बाहर झाँकते हुए पीड़ित मन को बहलाने की कोशिश कर

रही है। तेज़ हवा मुँह पर लगने से आँखों के कोने से कुछ पानी की बूँदें निकल पड़ी। अब सच में ये तेज़ हवा ने किया है या दर्द ने, पता नहीं।

घर में माँ और नंदिनी उसकी प्रतीक्षा करते हुए मिले। माँ ने पूछा, "अथर्व रुका है क्या अस्पताल में? वो लड़की ठीक है?" पियू ने केवल 'हाँ' में सर हिलाया और एक फीकी मुस्कान देते हुए अपने कमरे की ओर चली गई। माँ को ये बात खटकी पर उन्होंने नज़रअंदाज़ किया, सोच कर कि थक गई होगी और ऊपर से आज उसकी साल गिरह की योजना धरी रह गई। उन्होंने खाना लगाते हुए पियू और नंदिनी को आवाज़ दी। तीनों ने साथ में खाना खाया और खाने की मेज़ पर हलकी-फुल्की कुछ बातें हुई। पियू की मनोदशा बहुत ख़ुशहाल नहीं दिख रही है, इसलिए खाने के बाद उठते हुए माँ ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "पियू बेटा! दिन महत्वपूर्ण होता है लेकिन रिश्ते उससे भी ज़्यादा महत्व रखते हैं। जो भी घटनाएँ हुई उसकी वजह से आज हम बाहर नहीं जा सकते, मगर कल हम इसी ख़ुशी और उत्साह के साथ उत्सव मनाएंगे क्योंकि तुम हमारे लिए बहुत-बहुत महत्व रखती हो। समझी! जाओ आराम कर लो और याद से दवाइयाँ ले लेना।" फिर सब एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहकर अपने कमरों की ओर गए। माँ ने नंदिनी की दवाइयाँ उसके हाथ में दी। उसने हर रोज़ की तरह मेज़ पर रख दी, बाद में खाएगी बोलकर।

उधर अस्पताल में, अथर्व, अस्मिता के बगल में जाकर बैठा। कुछ ऐसी ही उसके स्वास्थ्य और चोट की बातों के बीच अचानक अस्मिता की आँखें भर आई और गले से आवाज़ नहीं निकल रही। अथर्व को लगा कहीं ज़्यादा दर्द बढ़ गया है। उसने चिकित्सक को बुलाने की बात पूछी। अस्मिता ने आँखें

पोंछते हुए, धीमे से जवाब दिया, "दर्द है अथर्व, लेकिन इन चोटों का नहीं। ज़िन्दगी में जो सब खो रही हूँ, उसका। समझ में नहीं आ रहा कब ये सब रुकेगा। आरवी दी के बाद मम्मी-पापा ने भी मुझसे मुँह मोड़ रखा है। उनको भी लगता है मेरी ज़िद्द थी घर जाने की अगर नहीं जाती ऐसे अचानक तो आज... फिर वापस आई ये सोच कर कि तुम हो जो मेरे हो, मुझे समझोगे मगर तुम्हें भी खो दिया मैंने। ये ऐसे छोटे-छोटे मौके ढूँढ़ती हूँ तुम्हारे साथ वक़्त बिताने के लिए, फिर भी एक ख़ालिपन का एहसास होने लगता है। समझ में आता है कि ये सब क्षणभंगुर ही तो है। उस चाँद को पानी से भरे बर्तन में देख भी लिया तो क्या, उसे कभी अपना तो नहीं सकूँगी।" अथर्व को उसकी सभी बातें कहीं-न-कहीं समझ में आ रही है। उस दर्द को महसूस कर रहा है और उसकी भी आँखें भर आई। अस्मिता ने उसका हाथ थामते हुए कहा, "आज तुम्हारी पहली साल गिरह थी और मैंने तुम्हें ऐसे रोक लिया। मुझे माफ़ कर देना। मैं ये सब नहीं चाहती थी। सच कहूँ तो जानती हूँ, तुम अब मेरे नहीं, बस समझने में थोड़ा समय लग रहा है। तब तक साथ दे दो वरना फिर टूट जाऊँगी और इस बार बिखरी तो अपने हिस्सों को चुनना बहुत मुश्किल होगा।" हर उस टूटे हुए दिल के टुकड़े की लगी हुई चोट अथर्व को भी महसूस होने लगी है। एक वक़्त था ज़िंदगी में जब दोनों ऐसी डोर से बंधे थे जिस में दिल, आभूषण, स्पर्श सब पिरोया हुआ था। फिर वो धागा टूटा और आज उन ही टूटे हुए सिरों को एक भावुक पल ने गाँठ में बाँधना शुरू किया। अस्मिता के दर्द का कोई माप ही नहीं। बीते हुए कुछ सालों ने उसके जीवन में ऐसे संघर्ष उत्पन्न किए हैं जिसने एक जिंदादिल, चुलबुली लड़की को पिंजरे में कैद कर दिया है। जो उसके करीब थे, सब कहीं-न-कहीं, किसी-ने-किसी वजह से छूटने

लगे हैं और उसे सब अपनी ही ज़िम्मेदारी लग रही है। अब उस पिंजरे में कैद, बचे हुए कुछ सिरहों को पकड़ने की कोशिश कर रही है। पियू ने जो भी देखा समझा सब सही है, किन्तु उसके पीछे की मनोदशा कितनी गंभीर है, शायद उसका समझना भी बहुत ज़रूरी है।

अथर्व जीवन में आगे बढ़ गया, चाहे वजह कुछ भी हो। अस्मिता बीते हुए सालों में उम्मीदें खोजती हुई अटक गई है। आज जब पूरी दुनिया पलट गई है, उन ख्वाबों को और उम्मीदों को छोड़ने में दर्द हो रहा है और डर लग रहा है। कई दफ़ा अपने दर्द को कम करने के ख़ातिर या प्यार के लालच में शायद ऐसा कुछ कर रही है जो एक नज़रिये से गलत ही दिख रहा है। मगर उसे पिंजर की कड़ियों को और उसमें फँसी हुई ज़िंदगी को, एक नज़र से देखें और समझने की कोशिश की जाए, तो शायद वह भी गलत नहीं है। अपने जीने के लिए उम्मीद को थामने की कोशिश कर रही है।

ऐसे ही धीरे-धीरे रात बीत गई। एक पल ऐसा भी आया, जब अस्मिता बिखर कर रोने ही लगी। उस दर्द ने हर बाँध को तोड़ते हुए अथर्व के सामने इकरार किया कि उसे खो देना कितना कष्ट दे रहा है। उसकी सिसकियाँ काफ़ी तेज़ हो गई। अथर्व भी रात भर उन्हीं परिस्थितियों में घिरा हुआ, दर्द महसूस कर रहा है। अस्मिता को ऐसे रोता हुए देख उसके दिल में भी दर्द हो रहा है। उसने उसे गले से लगाया। सांत्वना देने की कोशिश कर रहा है कि ज़िन्दगी हमेशा ऐसी नहीं रहेगी। वक़्त बदलेगा और मरहम भी काम करेगा। एक पल की वो कमज़ोरी दोनों को बहा गई जब दोनों एक पल के लिए बहुत करीब आ गए। दोनों के होठों ने एक दूसरे के दर्द को स्पर्श किया। वो एक पल ही था

जो आया और गुज़र गया। अथर्व को भी एहसास हुआ कि इस पल में कमज़ोर पड़ना गलत है तो वह दूर हटा। पीछे मुड़ा तो स्तब्ध खड़ी पियू नज़र के सामने दिखी। दोनों ही सकपका गए। पियू को काटो तो खून नहीं। उसने वैसे ही उलटे पैर अस्पताल से बाहर का रुख़ किया और गाड़ी रोक कर घर को निकल गई। अथर्व पीछे गया उसे समझाने की कोशिश में कि वो बस एक पल की ग़लती थी लेकिन पियू रुकी नहीं। अस्मिता को बुरा लगा लेकिन अच्छा लगा... अजीब सी भावनाओं में घिरी है। अथर्व का दिल धड़क रहा है क्योंकि उससे ग़लती हुई और उस परिस्थिति को वह संभाल नहीं सका।

अध्याय १२
जटिल लड़ियाँ

पियू के मन में रोष है, कष्ट है, दुःख है और जाने कितनी सारी भावनाएँ साथ उमड़ रही हैं। फिर एक बार इस रिश्ते ने उसे ठगा है। फिर उसके दिल को उम्मीद दी गई और उम्मीद देने वाले ने उसे मानो पत्थर से मार कर चकनाचूर कर दिया है। उसकी आँखों से आँसू थम नहीं रहे। ऐसा लग रहा है जैसे साँस नहीं आ रही। उसे सब अपनी गलती लग रही है कि उसने दोबारा प्यार करके, भरोसा करके ग़लती की। जैसे-तैसे बदहवासी में घर पहुँची। अभी थोड़ी देर पहले अस्पताल के लिए निकली थी और अचानक ऐसे वापस आकर अपने कमरे में दौड़ते हुए गई, सुनंदा जी घबरा गई। वह पियू के पीछे उसके कमरे की ओर गई लेकिन पियू ने ज़ोर से दरवाज़ा पटक कर बंद किया। सुनंदा जी दरवाज़े के इस तरफ़ से पियू को आवाज़ें देने लगी ताकि पता चले क्या हुआ। पियू की रोने की आवाज़ें आ रही हैं, उसी के साथ दरवाज़े के इस तरफ़ उनका दिल बैठ रहा है। असमंजस में है कि कल से उसका मन बुझा हुआ है और आज इस तरह! वह पियू को आवाज़ देने लगी। पियू ने थोड़ी देर कुछ उत्तर नहीं दिया, बस रोने की आवाजें आ रही हैं, फिर जब सुनंदा जी ने और प्रेम से उससे बात की तब वहीं रोते-रोते उसने उत्तर दिया, "माँ! फिर मुझे धोखा मिला। फिर मुझे तोड़ दिया। हर बार मैं भरोसा करने की ग़लती करती हूँ और हर बार मुझे दगा मिलता है। सब बहुत बुरे हैं। सबको अच्छा लगता है मुझे तोड़ देना। टुकड़ों में बाँट कर फेंक देना। ऐसा क्यों है माँ? ऐसा क्यों?" उसके दर्द की ठीक-ठीक वजह सुनंदा जी को समझ में नहीं आई, लेकिन उसका दर्द ज़रूर

उन तक पहुँचा। उनकी आँखें भीगने लगी। नंदिनी अपने कमरे से निकलकर आई और वहीं दरवाजे पर हाथ लगाकर बैठ गई। जैसे दरवाजे के उसपार बैठी पियू को शांत करना चाहती है। सुनंदा जी ने पियू को थोड़ी सांत्वना देते हुए शांत करने का प्रयास किया लेकिन उसका रोना रुक नहीं रहा है। सुनंदा जी ने उसे तसल्ली दी, “चाहे कोई भी बात हो पियू, तुम अपने आप को अकेला नहीं समझना बेटा। मैं तुम्हारे साथ हूँ, चाहे फिर कैसी भी परिस्थिति क्यों ना हो। तुम चाहो तो हम उस बारे में बैठकर बात कर सकते हैं और नहीं मन है तो अभी कोई बात नहीं होगी। तुम्हें जब ठीक लगेगा तब तुम अपनी इस माँ के पास आ सकती हो। देखो, नंदिनी भी यहीं है। उसके पास बैठोगी थोड़ी देर? एक बार दरवाजा खोलो, थोड़ा पानी पी लो। कोई हडबड़ी नहीं है। तुम्हारी तबियत सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है अभी।” फिर धीरे-धीरे पियू थोड़ी शांत हुई और दरवाजा खोला। सामने उसकी भरी हुई लाल आँखें और सूजा हुआ मुँह। सुनंदा जी ने प्रेम से उसे गले लगाया और ले जाकर सोफ़े पर बिठाया। नंदिनी बगल में उसका हाथ थामकर बैठी।

माँ ने अपनी मामतामयी स्पर्श के साथ पियू के सिर पर हाथ फेरा और पानी का गिलास बढ़ाते हुए बोली, “थोड़ा पानी पी लो।” पियू ने सिसकियों के साथ 2-3 घूँट पीए। फिर माँ के गोद पर सर रखकर रोने लगी। इस बार पहले से थोड़ा संयमित है। माँ ने सर से हाथ नहीं हटाया। सिसकती हुई बोली, “माँ, अस्पताल में अथर्व जिसके पास है, ये वही अस्मिता है जो अथर्व के जीवन में पहले थी। वही वापस आई है। और उसने ये सब जान बूझ कर किया है, अथर्व को अपने पास रोकने के लिए।” माँ का हाथ एक पल के लिए ठहर गया। नंदिनी भी आश्चर्य से माँ को देखने लगी। माँ ने गंभीर स्वर में कहा, “बेटा!

मैं अथर्व से इस बारे में बात करूँगी। तुम चिंता क्यों करती हो, पति है वह तुम्हारा। कोई भी आए, अथर्व पर केवल तुम्हारा अधिकार है।” माँ को लगा शायद पियू उस अतीत की वजह से कष्ट में है। तभी पियू, सुबह जो अस्पताल में उसने देखा, उसके बारे में बताते हुए रोने लगी। “नहीं माँ! अथर्व पर सिर्फ़ मेरा अधिकार नहीं है। आज मैंने दोनों को बहुत करीब देखा। साँसों की डोर में बँधे देखा। मेरी हर डोर तोड़ कर, अथर्व ने पुरानी डोर को जोड़ लिया।” माँ उसकी कही हुई बातों को समझ गई। उन्होंने उसे धैर्य रखने के लिए कहा और बोली वो स्वयं इस बारे में अथर्व से बात करेगी। उन्होंने पियू को संत्वना दी कि वह उसकी गृहस्थी टूटने नहीं देगी।

***

उधर अस्पताल में अथर्व यह जानने के लिए छटपटा रहा है कि पियू कहाँ है और कैसी है। लगातार फ़ोन किए जा रहा है लेकिन कोई उत्तर नहीं। माँ का नंबर लगाया, तो माँ ने फ़ोन उठाया। गंभीर आवाज़ में केवल इतना बोली, “अथर्व, पियू घर पर है। तुम घर आओगे तब बात करेंगे।” अथर्व को समझ में आ गया है कि एक विशाल परेशानी उसकी ओर मुड़ने लगी है। वह घर भी नहीं जा सकता क्योंकि अभी तक अस्मिता को अस्पताल से छुट्टी नहीं मिली। अस्मिता को बताया कि घर में शायद सब ठीक नहीं है तो अस्मिता ने उसे समझाते हुए कहा, “अथर्व! तुम गलत नहीं हो। मैं कमज़ोर पड़ गई थी। और ऐसा नहीं है कि तुम ने पियू से कभी कुछ छुपाया। उसे भी समझना चाहिए कि तुम उसके प्रति ईमानदार हो लेकिन अतीत में हमारा भी एक रिश्ता था। जिसकी आज शायद कोई मान्यता नहीं है उसके लिए, लेकिन मुझे यूँ दर्द में देखकर तुम्हे दर्द होना लाज़मी है। वो एक पल था जो आया और चला गया।

उससे मैं तुम्हारी ज़िंदगी में उसकी जगह नहीं ले पाऊंगी। ये बात उसे ठीक से समझाओगे तो समझ जाएगी।” कुछ देर बाद चिकित्सक आए, उन्होंने अस्मिता का हाल-चाल पता किया और उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। सभी कागज़ाती काम करने में काफ़ी समय लग गया। अस्मिता को घर छोड़कर, उसके खाने-पीने की व्यवस्था कर, अथर्व को घर निकलने में लगभग शाम हो गई। अस्मिता को घर छोड़कर निकलने लगा कि अस्मिता ने आगे बढ़कर उसे गले लगाया और धन्यवाद कहा। अथर्व ने हल्की-सी मुस्कान के साथ अलविदा लिया और घर निकल गया।

अथर्व के मन में बहुत बेचैनी है। जिस तरह सुबह पियू चली गई और फिर माँ से फ़ोन पर हुई बात, उसका दिल बैठा जा रहा है। घर पहुँचने के बाद कुछ देर बाहर खड़ा रहा। कदम बढ़ नहीं रहे। फिर उसे अस्मिता की कही बात याद आई कि ऐसा नहीं उसने पियू से कभी कुछ छुपाया था और जो भी हुआ वो कुछ पुराने जुड़े हुए रिश्तों की वजह से हुआ था। वो एक कमजोर पल था। वह घर गया। हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदले फिर माँ से चाय माँगी। थका हुआ है ही, कल सुबह से भागा-दौड़ी हुई है। माँ ने बिना कोई बात किए चाय बनाई और सामने रख दी। पियू कमरे में नहीं थी और अथर्व की निगाहें उसे ढूंढ रही हैं। वह इस गंभीर माहौल को महसूस कर रहा है। चाहता है कि इस बारे में एक बार बात की जाए, लेकिन माँ से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई। फिर पियू की हल्की आवाज आई बात करने की तो उससे अंदाज़ लगा कि वह नंदिनी के कमरे में है। अथर्व को एक बार लगा कि आज इस बात को उठाया न जाए। सभी थोड़ा शांत होंगे, वक़्त मिलेगा तो बात ज़्यादा नहीं बढ़ेगी। माँ वहीं मेज़ पर बैठकर कोई किताब पढ़ रही है। चाय पीकर अथर्व ने अपने कमरे की ओर

बढ़ते हुए माँ से पियू की तबियत के बारे में पूछा। माँ ने किताब बंद करके एक तरफ़ रखी और उसे वापस बैठने के लिए कहा। उसने टालने की कोशिश की परन्तु माँ ने उसे गंभीर स्वर में रुकने के लिए कहा। वह वापस बैठ गया। "मुझे पियू ने अस्मिता के बारे में बताया। मुझे पता नहीं कितना सच और क्या सच है। हो सकता है उसे किसी बात की गलतफहमी हुई है। मैं वहाँ थी नहीं। लेकिन एक बात ज़रूर समझ में आई कि पियू की इसमें कोई ग़लती नहीं। आज वो रोते-रोते घर आई है। खाली महसूस कर रही है अंदर से और दर्द में है। मैं ये नहीं होने दे सकती। पति हो, ज़िम्मेदारी से उसके घर से उसे विवाह कर लाए थे, जो भी बात है उससे शांति से बात करो, अपना पक्ष रखो और उसे समय दो निर्णय लेने का।" इतना कहकर, सुनंदा जी ने किताब उठाई और अपने कमरे में चली गई। अथर्व नजरें झुकाए, नंदिनी के कमरे की ओर गया। देखा तो पियू, नंदिनी से कुछ बात कर रही है। उसने स्वर नीचे रखते हुए पियू से बात करने का आग्रह किया। पियू ने एक नज़र उसकी ओर घुमाई और नज़रअंदाज़ करती हुई नंदिनी से बात करने लगी। अथर्व का ध्यान उसकी आँखों और चेहरे पर गया तो देखकर समझने में देर नहीं लगी कि वह कितनी आहत है और रोई है। नंदिनी ने पियू की बात धीरे से काटते हुए इशारा किया कि वह जाकर अथर्व से बात करें और इस परिस्थिति का हल निकाले। नंदिनी के कहने पर, पियू राज़ी हुई और अपने कमरे में गई। अथर्व भी चुप-चाप पीछे-पीछे चल दिया। कमरे में दोनों एक-दूसरे के सामने बैठे हैं और सोच रहे हैं बात कैसे शुरू की जाए। पियू ने चुप्पी तोड़ते हुए पहल की, "बोलो! क्या बात करना चाहते हो?" अथर्व ने बात शुरू की। "आज तुमने जो भी देखा, मैं जानता हूँ, गलत लगा होगा तुम्हें, लेकिन वो सिर्फ़ एक पल था जो आया और चला गया। मेरे मन में ऐसा कुछ नहीं है। तुम समझ रही हो ना! अस्मिता से मैं जब जुड़ा था, या जो

भी रिश्ता था वह सब अतीत है लेकिन उस अतीत में कई गलतफहमियाँ थीं। कल जब बात करने का मौक़ा मिला, तब समझ में आया कि जो भी हुआ, हमारी किस्मत को यही मंज़ूर था और मैं तुम्हारे साथ आगे बढ़कर बहुत ख़ुश हूँ। लेकिन अस्मिता भी दर्द में है। उसे भी तकलीफ़ है जो मुझे दिख रहा है। इन्ही सब के बीच में जाने कब हम.. और तुमने…" पियू को फिर से रोना आ गया। अथर्व को पश्चाताप है। उसे अपनी ग़लती का एहसास अंदर से कचोट रहा है। जैसे एक तरफ़ उसे पियू की मनोदशा समझ में आ रही है ठीक उसी प्रकार वो अस्मिता की हालत से भी वाक़िफ है। पियू ने संभलते हुए कहा, "मुझे नहीं जानना कि क्या था, कितना गहरा था और अब क्या है। अगर मैं तुम्हारी ज़िन्दगी में एहमियत रखती हूँ तो अस्मिता का ज़िक्र भी हमारी ज़िन्दगी में आज के बाद मुझे नहीं चाहिए। कर पाओगे?" अथर्व की आँखों में जवाब ढूँढ़ रही है। उससे अधिकार माँग रही है, अर्धांगिनी होने का। वचन की उम्मीद कर रही है कि अतीत, अतीत में ही छूट जाए। अथर्व ने फिर समझाने के लिए तर्क देने की कोशिश की परंतु पियू निश्चित है अपने फ़ैसले पर। अस्मिता को अथर्व के जीवन से जाना होगा। किसी भी रूप में, कोई भी रिश्ता रखने की ज़रूरत नहीं। एक पत्नी के संदर्भ से वो कुछ ग़लत नहीं माँग रही। यदि किसी भी तरह से अस्मिता के होने से उसके रिश्ते पर आँच आ रही है, तो उसका जाना ग़लत नहीं है। अथर्व के मन में यह बात अटक रही है कि अस्मिता ने कोई अधिकार तो नहीं माँगा। एक पल में कुछ भावनाओं की होड़ की वजह से वो उससे मुँह मोड़ ले? कई वर्षों पहले जो ग़लती हुई थी, वह दोबारा करे? रिश्ते अलग थे, वह बात ठीक है लेकिन रिश्ता तो था और अब भी है। हमदर्दी, भरोसा तब भी था और अब भी है।

***

अगले दिन, सुनंदा जी ने पियू से उसका हाल पूछा। उसे स्थिर देखकर उन्हें तसल्ली हुई। अथर्व ने अस्मिता को फ़ोन नहीं किया, फिर भी एक संदेश भेजकर उसके स्वास्थ्य का हाल पूछ लिया। यह बात उसने पियू को नहीं बताई। उसे लगा कि अभी कल इतना कुछ हुआ है। क्या उसे यह संदेश भेजना चाहिए था? पता नहीं लेकिन उसे यूँ अस्मिता को बिना कोई उत्तर दिए या बताये हाथ छुड़ा लेना ठीक नहीं लगा। उसने निश्चय किया, कार्यालय में अगले दिन जब भी उससे मिलेगा, उसे साफ़-साफ़ बता देगा कि दोस्ती रखना भी अब ठीक नहीं है। उसका असर उसके पारिवारिक जीवन पर पड़ रहा है। तब तक के लिए हाल-चाल जान लेना कुछ गलत नहीं लगा।

आज शाम को पहली सालगिरह मनाई जानी है। पियू का बिलकुल मन नहीं है। घर में भी चारों ओर खामोशी है। सुनंदा जी ने माहौल को सामान्य करने के लिए सालगिरह मनाए जाने पर ज़ोर दिया। उन्हें लगा इस तरह दोनों को मौका मिलेगा एक-दूसरे से बात करने का, एक साथ समय बिताने का। काफ़ी समझाने के बाद माँ का मान रखने के लिए पियू राज़ी हो गई। अथर्व भी मायूस है और चाहता है सब सामान्य हो जाए। सुनंदा जी ने पियू के माँ-बाबा को फ़ोन कर समारोह की पुष्टि की और शाम को मिलने का समय निर्धारित हुआ। शाम को सपरिवार पहली सालगिरह मनाई गई। पियू के माँ-बाबा के सामने किसी ने इस घटना की कोई चर्चा नहीं की। सागर और रूपा जी ने पूछा ज़रूर कि “उस लड़की की सेहत कैसी है?” पियू और अथर्व ने बस थोड़ी-बहुत कुछ बातों से उस विषय को टाल दिया। सागर जी ने कोई बात नहीं छेड़ी लेकिन हाँ, रूपा जी के मन में थोड़ी खटक है। उस शाम कई बार अथर्व का

फ़ोन बजा लिया लेकिन उसने उठाया नहीं। पियू का ध्यान गया इस बात पर और अथर्व ने उसे फ़ोन दिखाया। अस्मिता लगातार फ़ोन कर रही है लेकिन अथर्व ने जवाब नहीं दिया। पियू को इस बात से थोड़ी तसल्ली हुई। समारोह ख़त्म हुआ और सब एक-दूसरे से विदा लेकर घर लौट गए। घर आते-आते लगभग 11 बज गए। इतनी देर में अस्मिता ने कुछ 8-10 बार कॉल किया है और संदेश भी भेजे हैं। अथर्व ने किसी का कोई उत्तर नहीं दिया। रात को जब पियू की आँख लगी तो अथर्व ने एक संदेश भेजा जिसमें लिखा कि 'वह घर में व्यस्त है, मिलकर बात करेगा। तब तक बात करना मुश्किल है, वो अपनी सेहत का ध्यान रखे।' उसके बाद अस्मिता का कोई संदेश अथवा कॉल नहीं आया। 1-2 दिन बाद वो कार्यालय आई और अथर्व से संपर्क किया। दोनों मिले। अथर्व ने सोच लिया है कि उससे मिलकर क्या बोलना है। वहीं कॉफी की दुकान पर मिले। अस्मिता मिलते ही उससे ढेरों सवाल पूछने लगी। इतने दिनों से वो उसे टाल क्यों रहा है, संदेश भी नहीं भेजता, कॉल नहीं उठा रहा वगेरह-वगेरह। अथर्व ने गंभीरता से उत्तर दिया, "अस्मिता, हमारी दोस्ती, मेरे पारिवारिक जीवन में बाधा उत्पन्न करने लगी है। मुझे लगता है कि अब हमें इस दोस्ती की सीमा को और बढ़ने नहीं देना चाहिए बल्कि दूरी बढ़ानी चाहिए। हाँ, हमारे बीच ग़लतफ़हमियाँ थीं जो अब सुलझ गई हैं, और तुम्हारी इसमें कोई ग़लती भी नहीं, लेकिन समय ने मेरी ज़िन्दगी का रुख मोड़ दिया है। अब यदि उस प्रवाह के विपरीत जाने की कोशिश की तो सब नष्ट हो जाएगा। उम्मीद करता हूँ, तुम समझोगी।" अस्मिता की पलकें भीग गईं। उसका हृदय दर्द से भर गया है। उसे समझ में आ रहा है कि उस पिंजरे में कैद उसने जो आख़िरी कोशिश की थी अपने बचे-खुचे रिश्ते को बचाने की, वो नाकामयाब रही और अब उसका अधूरापन उसके हाथों में बचा है।

अथर्व का साथ, मुट्ठी में बंद रेत की तरह कुछ पलों में ही फिसल गया। इन भावनाओं का शोर इतना है उसके भीतर उठते दर्द ने उसकी आवाज़ मानो रोक दी। बेजान दृष्टि से, टूटे हुए दिल के साथ अथर्व को देखती रही, उसकी बातें सुनती रही और अपना सामान उठा कर बिना कुछ बोले चली गई। क्या बोलती? हालात ने उसे इस मोड़ पर ला पहुँचाया है। एक दिन अथर्व के पिता चले गए तो उसने दुत्कारा था। मान-सम्मान के ख़ातिर दूर जाने लगी तो वक़्त ने आर्वी को वक़्त से पहले छीन लिया। उसके मम्मी-पापा भी कहीं-ना-कहीं उसी को दोषी ठहराते हैं और दूर होते चले गए। अब जब इतनी मुश्किल से अथर्व को ढूंढा तो उससे वो दोस्ती का भी रिश्ता नहीं रख पाई। मन इस बात से पीड़ित है कि कैसे अथर्व के लिए इतना सरल है कि उसे बस यूँ ही जाने को कह दिया। पियू से प्यार हुआ होगा, लेकिन प्यार तो उससे भी था। इतना आसान है वक़्त की चपेट में सभी अहसासों को खो देना? ऐसा नहीं कि उसके पास अथर्व के सिवा कोई विकल्प नहीं है इसलिए उसके साथ बंधना चाहती है, परन्तु उसके रिश्ते में इतनी सच्चाई रही है कि उसने अपना सब कुछ देकर अथर्व को पाने की कोशिश की। लेकिन आज क्या मिला? अकेलापन, खालिपन। भीगी-भीगी आँखों में बिखरे हुए ख़्वाब और अधूरे रिश्ते की एक अधूरी कहानी के साथ वह अपने घर की ओर बढ़ चली।

***

तीन ज़िंदगियाँ एक अजीब मोड़ पर अटक गई हैं। एक-दूसरे से एक धागे में बंधी हुई सी। अपने हिस्से की कौन सी वफादारी निभाई जाए सोचने वाली बात है।

एक हिस्से में खड़ी पियू, जिसने अपने डर से लड़कर, फिर प्यार करने की हिम्मत की। अपने सच के साथ, अपनी हर निष्ठा से अथर्व को अपनाया। आज उसे अपने रिश्ते पर आ रही आँच से डर लग रहा है जो की जायज़ है। उसने अतीत में इतनी बार चोट खाई है और हर बार उसी अतीत का एक किस्सा किसी-न-किसी रूप में सामने आकर उसे और ज़ख़्म दे जाता है। इस वाक़िए ने भी एक ज़ख़्म कुरेद दिया। यदि आज वह अपने पत्नी होने का अधिकार माँग रही है, तो क्या गलत है? वह अपने रिश्ते को किसी भी साये से बचाने की कोशिश कर रही है, तो क्या गलत है?एक हिस्से में खड़ी अस्मिता, जिसने कच्ची उम्र से परिपक्वता का सफ़र बहुत कुछ खोकर तय किया है। अथर्व से बिना किसी मतलब के, निश्चल प्रेम किया है। एक ग़लतफ़हमी ने और कच्ची उम्र के एक ग़लत फ़ैसले ने उसकी दुनिया बदल कर रख दी। वह फिर भी अथर्व का इंतज़ार करती रही। कितने रिश्ते छूट गए उससे। ज़िंदगी के जाने कितने बंधन टूट गए। अथर्व जब मिला भी तब तक हालात ने सब कुछ पलट कर रख दिया। कोशिश की कुछ धागों को जोड़ने की, लेकिन वो भी टूट गए। अस्मिता कहाँ ग़लत है? एक दृष्टिकोण कहता है कि जब उसे पता चला कि अथर्व की ज़िंदगी में कोई और आ चुका है तो उसे आगे बढ़ना ही नहीं चाहिए था। क्या इतना आसान है अपने सामने उस इंसान को देखना, जिसे इतना प्यार किया है और उससे जुड़ने से ख़ुद को रोक पाना? क्या इतना सरल है हर उस उम्मीद को एक पल में तोड़ कर, रुख बदल लेना? प्रेम शब्द छोटा-सा ढ़ाई अक्षर का ही होता है, लेकिन इस बंधन में न तो जुड़ना सहज है न इसे यूँ ही तोड़ देना।

एक हिस्से में अथर्व, जिसने एक समय में अस्मिता से प्रगाढ़ प्रेम संबंध से जुदा था। उस रिश्ते में उसने स्वयं को पूरी तरह से समर्पित किया था। वक़्त यूँ पलटेगा और उसे अचानक इस तरह एक कठिन परिस्थिति में धकेल देगा, ये कहाँ किसी को पता था। अस्मिता का यूँ जीवन से अचानक गायब हो जाना, उसके दिल का टूटना और साथ समय की मार से लड़ना। बहुत मुश्किल से ज़िंदगी को एक मोड़ देने की कोशिश की। घर संभाला, परिवार को संभाला। आज पियू उसकी ज़िंदगी का हिस्सा बनी, जिसे उसने पूरी सच्चाई से अपनाया। ज़िम्मेदारी से उस रिश्ते को सींच रहा है। और अचानक आज वो अतीत उसके आँखों के सामने खड़ा है और कह रहा है कि वो भी उसके इंतजार में राह तक रहा था। पियू का होना वास्तविकता है, वह समझता है परंतु फिर वही प्रश्न, प्रेम इतना सरल है क्या? यूँ बंधन तोड़कर, उस प्रेम को दर्द में तड़पता देखना आसान है क्या? सच्चाई दोनों रिश्तों में है, दोनों के मर्यादा की समझ भी है लेकिन यदि प्रेम इतना गणनात्मक होता तो फिर उस में दर्द नहीं होता। केवल बुद्धि प्रेम का संचार करती तो प्रेम कहानियाँ नहीं बनती। दिल इतनी बातें माप सकता को फिर बात ही क्या होती है।

इस कहानी का हर एक किरदार कहीं-न-कहीं गलत है, और दृष्टिकोण बदले तो हर किसी का सत्य माना जा सकता है। चाहे नंदिनी के इतने बीते हुए वर्ष हों, सुनंदा जी का नंदिनी या अथर्व को न रोकना, पियू के माँ-बाबा के दिल में उठते इतने प्रश्न, चाहे फिर स्पर्श का ना होना और वफ़ा-अर्जुन की मोहब्बत। सभी गलत हैं क्या?

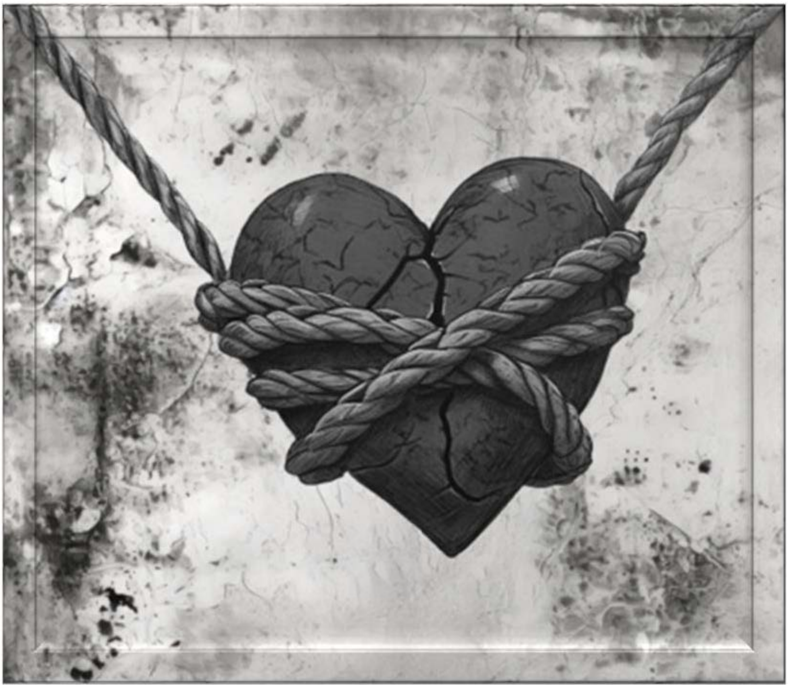

अध्याय १३
स्पंदन का जाल

कुछ हफ़्ते बीत गए हैं। अथर्व से संयोगवश कभी आमना-सामना होता है कार्यालय में, तो बिना कुछ बोले चुप-चाप दूसरे रास्ते पर मुड़ जाती है। मुरझाई हुई शक्ल और उदास आँखों से टूटे हुए दिल की परछाई साफ़ दिखती है। अथर्व भी असहाय महसूस करता है। पियू को दिए हुए वचन को, अपनी ज़िम्मेदारी को, निभाना चाहता है लेकिन अस्मिता का बुरा हो यह नहीं चाहा कभी। अस्मिता ने उस दिन अथर्व की कही हुई बात को दिल में बसा लिया है। उसे ऐसा लगा मानो अथर्व ने सिर्फ़ हाथ नहीं छुड़ाया बल्कि उसे दुत्कार दिया है। कई बार दफ़्तर में काम करते करते, उठ कर शौचालय में चली जाती और वहीं रोती रहती है। कभी तो उसे भी उस रोने का कारण समझ में नहीं आता। केवल रोती रहती है, ख़ालीपन महसूस करती है। किसी से कुछ साझा नहीं करती। अपने मन में अपनी आवाज़ को दबाए बैठी है। आज कल दफ़्तर से निकलकर घर तक पैदल ही जाती है। 15-20 मिनट का रास्ता है पैदल चलकर, उस रास्ते को लगभग 40 मिनट में पूरा करती है। उसे घर जाने का मन नहीं होता। भीड़ में खो जाना चाहती है। घर वालों से भी बहुत कम बात होती है। कभी उसे लगता है कि यह उसकी सज़ा है उस दिन अथर्व को स्टेशन पर अकेला छोड़ने की। अपने ही ख्यालों में ही रहती है। बोलती कम है, लोगों से मिलती जुलती नहीं, कार्यालय आती है, काम करती है और घर चली जाती है। अथर्व ने खाना खाते समय उसके सहकर्मियों की दबी हुई आवाजें 1-2 बार सुनी हैं जिनमें वह अस्मिता के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बातें कर रहे

थे। उनकी माने तो अस्मिता जीवन में निराशावाद की ओर बढ़ रही है। उसे किसी मनोचिकित्सक की सहायता की ज़रूरत है। अथर्व को सुनकर लगा कि लोग उसकी चुप्पी का गलत अंकलन लगा रहे हैं। एक पल को थोड़ा डर भी लगा कि कहीं सच तो नहीं। इस बात की पुष्टि करने का कोई उपाय भी नहीं। एक दो बार उसने बात करने की कोशिश की। मगर अस्मिता उसके सामने एक पल से ज़्यादा नहीं ठहरती। ऐसे निकल जाती है जैसे अथर्व सामने होते हुए भी दिखाई नहीं देता। अथर्व के मन में ग्लानि बढ़ रही है। मन की इस हलचल को वह भी किसी से कह नहीं पा रहा।

***

अथर्व के घर से कार्यालय तक का रास्ता बाज़ार से लग कर एक गली में मुड़ता है। उसी गली के छोर से कुछ कदम आगे बढ़ते ही अस्मिता का घर है। एक शुक्रवार अस्मिता कार्यालय से देरी से निकली। शाम ढ़लने लगी। और उसी शाम पियू भी कुछ सामान लेने उसी बाज़ार में जा रही है। ऑटो घर के सामने ही मिलता है, इसलिए वह ऑटो लेकर ही गई। उसी गली से निकलते समय उसकी नज़र एक लड़की पर पड़ी जो कुछ आदमियों से बात कर रही है। ऐसे शाम को दिल्ली शहर में जाने कितने वाकिए होते हैं, तो ध्यान चला ही जाता है। बगल से ऑटो गुज़रने लगा तो पता चला वह लड़की और कोई नहीं बल्कि अस्मिता है, कुछ दे रही है एक आदमी को। पियू को सब ठीक ही लगा। वह ऑटो से बाज़ार पहुँच गई और खरीददारी करने निकल पड़ी। कुछ समय बाज़ार में बिताकर, सामान के साथ घर लौट आई। अभी भी उसका ध्यान कहीं-न-कहीं अस्मिता पर ही है। आज अचानक उसे ऐसे अनजान आदमियों के साथ देखना। एक बार सोचा कि अथर्व से बात करेगी लेकिन

फिर कुछ सोच कर कुछ नहीं बोली। अपने काम में लग गई और कोई ज़िक्र नहीं किया। कुछ देर बाद सामान की थैली खोलकर सामान समेटने लगी। उसी सामान में से एक कुर्ती उठाई जो उसने दर्जी से सिलवाई थी। सोचा पहन कर देखी जाए। पहनने की कोशिश की और तभी आवाज़ आई चर्ररर्…। अथर्व वहीं कमरे में एक ओर बैठे कोई किताब पढ़ रहा है और आवाज़ सुनकर नज़र उठाकर देखा तो आधे कुर्ते में फंसी हुई पियू और एक ओर से कुर्ता फट गया। दोनों की हँसी छूट गई। पियू ने गुस्से में कुर्ता उतार फेंका और दर्ज़ी पर भड़क उठी। अथर्व ने हँसते-हँसते कहा, "कोई बात नहीं, कल मैं साथ चलूँगा, दर्ज़ी को डांट लेना और कुछ दूसरे कुर्ते खरीद लेना। मुझे भी ऑफ़िस के लिए कुछ कपड़े चाहिए।" पियू मान गई। लेकिन उस चर्ररर् ने एक मज़ाक का माहौल बना दिया। खाना खाते समय भी अथर्व ने एक दो बार पियू को छेड़ा तो वह शर्मा गई। हँसी ठिठोली में रात गुज़री।

शनिवार शाम, दोनों तैयार होकर बाज़ार के लिए निकल पड़े। पहले तो दर्ज़ी की दुकान पर चढ़ाई हुई। पियू ने मास्टरजी को बुला कर खूब डांटा कि एक तो दो महीने लगा दिए सिलाई में और ऐसा सिला कि बस... मास्टरजी ने माफ़ी मांगी, फिर अथर्व ने उसे शांत करते हुए खरीददारी पर चलने का आग्रह किया। दुकानों में घूम-घूम कर ढेर सारा सामान खरीद लिया। इतना कुछ करते करते शाम ढलकर रात हो गई है। भूख भी लग गई है। पियू को वैसे बाहर का खाना मना है लेकिन आज एक दिन के लिए दोनों ने सोचा कुछ हल्का-फुल्का खा लिया जाए। वहीं बाज़ार में एक छोटा-सा होटल देखकर दोनों ने जाकर चाय पी और कुछ खाकर निकले। अब ऑटो रोकने की कोशिश करने में समय निकलने लगा। कोई खाली ऑटो मिल ही नहीं रहा, इसलिए धीरे-धीरे

कदम बढ़ाते हुए दोनों बाज़ार पार कर गली तक आ पहुँचे। गली के कोने पर अक्सर ऑटो मिल जाता है। लेकिन आज तो वहाँ भी ऑटो नहीं था। अब वहीं खड़े रहेंगे तो देर होती रहेगी, इसलिए बातें करते करते थोड़ा रास्ता पैदल ही निकाल लिया। गली के बीच में पहुँचे ही हैं कि वहाँ चार आदमियों ने सामने से रास्ता रोक लिया। पूरे रास्ते में कुल मिलाकर चार ही बत्तियाँ लगी हैं, उसमें से एक फूटी हुई है। अंधेरी गली है, इसलिए साफ़ कुछ दिख नहीं रहा। उन आदमियों को देखकर, पियू पहचान गई। ये वही लोग हैं जिनको उसने कल अस्मिता से बात करते हुए और कुछ थमाते हुए देखा था। वो कुछ ज़ाहिर करती उससे पहले, एक आदमी ने एक छोटा चाकू दिखाया और पर्स, ज़ेवर निकाल कर उन्हें देने को कहा। पियू सकपका गयी। उसे यह समझ में नहीं आ रहा कि अगर यह गुंडे हैं या चोर हैं तो अस्मिता से कल यह क्या बात कर रहे थे। उसने तो मुड़ कर देखा भी था गली के मोड़ से, तब तो नहीं लगा कि ऐसा कुछ हुआ था। तो फिर यह सब… अथर्व ने पियू का हाथ पकड़ते हुए नम्रता से कहा, "हमारे पास कुछ नहीं है, आप हमें जाने दीजिए।" जिस आदमी ने चाकू पकड़ा है, उसने पियू का हाथ मोड़ते हुए कहा, "हमें तो बहुत कुछ दिख रहा है, उतारो ये सब गहने।" धमकी तक अथर्व ने बात सुनी, लेकिन पियू को नहीं पकड़ना चाहिए था। उसने झट से उस आदमी का हाथ दबोचा और पीछे की ओर ढकेलने लगा। हाथ को पीठ के पीछे मोड़ा ताकि उससे चाकू छूट जाए, इतने में बाकी तीनों आदमियों ने अथर्व को पकड़ने की कोशिश की। पियू डरी हुई है, लेकिन उसने हिम्मत करके सबके बीच से अथर्व को छुड़ाते हुए शोर मचाया मदद के लिए। सुनसान गली में आवाज़ गूंज रही है, लेकिन पियू को कोई आता दिख नहीं रहा। इसी बीच पियू को एक धक्का लगा और वह एक तरफ़ जाकर गिरी। दो आदमियों ने अथर्व को पकड़ा हुआ है और उस

पर थप्पड़ और मुक्के बरसा दिए। एक ने पियू को खींच कर उठाया और दोनों को गंदी गालियाँ देने के साथ धमकाने लगे। तभी जिसने पियू को पकड़ा हुआ था, नीचे कराहते हुए गिर पड़ा। सबने नज़र घुमाकर देखा तो सामने अस्मिता खड़ी है। उसने एक बड़े पत्थर से उस आदमी के सर पर मारा। अब दो आदमीयों ने अथर्व को पकड़ा हुआ है, एक सामने चाकू दिखा कर डराने की कोशिश में है और एक ज़मीन पर फटे हुए सर के साथ बेहोश। अस्मिता ने पियू को थोड़ा सहारा देते हुए अपने पीछे किया और जिस आदमी के पास चाकू है, उसे सबको जाने देने के लिए कहने लगी। उसने बताया कि उसने चिल्लाने की आवाज़ सुनी थी और वहाँ आने से पहले उसने पुलिस को फ़ोन कर दिया है। तीनो आदमियों ने एक दूसरे की ओर नज़र डालते हुए कुछ इशारे किये। जिन्होंने अथर्व को पकड़ा था, उन्होंने उसे धक्का मारा और जो गिरा हुआ उनका साथी था, उसे उठाने लगे। चाकू पकड़े आदमी ने फिर कुछ गालियाँ दी और जाते-जाते हवा में चाकू घुमाना शुरू किया। उसके निशाने पर अथर्व था कि वह उसे घायल करके भाग जाएगा अपने साथियों के साथ। अस्मिता और पियू ने उसे रोकने की कोशिश की और अफ़रातफ़री में चाकू आस्मिता की गरदन की एक ओर फिर गया। खून फव्वारे की तरह बहने लगा। वो देखकर तीनो गुंडे भाग गए।

अस्मिता लहलुहान ज़मीन पर गिरने लगी कि अथर्व ने उसे थाम लिया। वह उसे होश में रहने के लिए आवाज़ लगा रहा है। उसके दिल की धड़कनें इतनी तेज हैं और आँखों के सामने अस्मिता रक्त में भिगती हुई। पियू को यह सब एक चलचित्र की तरह लग रहा है जैसे किसी ने कहानी लिखी है। कल ही उसने इन ही गुंडों को अस्मिता से बात करते देखा था। आज अचानक

इतनी रात में कोई नहीं आया बचाने, अस्मिता आई। उसने बस कहा पुलिस को फ़ोन किया है और वो लोग चले गए! इससे पहले वाली घटना भी ऐसी ही कुछ थी, जब अस्मिता ने काँच से चोट लगने वाली कहानी बताई थी। पियू इस उधेड़-बुन में समझ नहीं पा रही है कि क्या सही है और क्या गलत। सिर्फ़ बर्फ़-सी जमी हुई इतने सवालों में घिरी खड़ी है। अस्मिता धीरे-धीरे अपना संतुलन खो रही है। साँसें धीरे होने लगी हैं। तभी अथर्व के चिल्लाने की आवाज़ पियू के कानों में पड़ी, 'एम्बुलेंस को बुलाओ पियू! फ़ोन करो।' पियू वास्तविकता में लौटते हुए जल्दी से फ़ोन पर चिकित्सा वाहन का नंबर लगाने लगी। इधर अथर्व अस्मिता को हर एक कदम में खोते हुए देख रहा है, और उसने ज़ोर से आवाज़ दी, “अस्मिता! आँखें खोल कर रखो, कुछ नहीं होगा, मैं हूँ! हॉस्पिटल तक तुम्हारा होश में होना ज़रूरी है। अस्मिता, कोशिश करो!” एक हाथ से वह ख़ून रोकने के लिए गर्दन की चोट को दबा रहा है। अस्मिता के होंठ हिल रहे हैं, शायद कुछ बोल रही है। अथर्व थोड़ा नजदीक झुका तो सुनाई दिया, “मेरा नहीं, तेरा होना ज़रूरी है…” इतना कहकर अस्मिता की आँखें बंद हो गई और शरीर ढीला छूट गया।

अध्याय १४
बंधे नहीं, जुड़े थे

कुछ पुराने किस्से जिन्होंने कई ज़िंदगियाँ बदल दी थीं, आज अथर्व के नज़रों के सामने से गुज़र रहे हैं। अस्मिता को चिकित्सा वाहन से अस्पताल ले गए। वही चिकित्सक वारत थी जिन्होंने पिछली बार अस्मिता का इलाज किया था जब उसे काँच से चोट लगी थी। वह अथर्व और अस्मिता को देखते ही झट पहचान गई। अथर्व से पूछा क्या हुआ, तो उसने बताया कैसे रास्ते में लूट-पाट होते समय जो वार उस पर होने वाला था, उसे बचाते हुए अस्मिता पर हुआ। चिकित्सक ने तुरंत पुलिस को इत्तेला की और अस्मिता के इलाज में कोई देरी नहीं की। उसे शल्यकक्ष में ले गए और बाहर पियू-अथर्व इंतजार कर रहे हैं। वर्षों पहले भी ऐसा ही कुछ हुआ था, वो उस समय वहाँ नहीं था पर उसने हर उस पल को अपने परिवार के साथ, खासकर नंदिनी के साथ जिया है। अथर्व के कपड़ों पर, हाथ पर रक्त लगा है। उसका मस्तिष्क घटना को सोच-सोच कर सुन्न पड़ गया है। उसकी आँखों के सामने जो चाकू आज उसे चोट देने वाला था, वो अस्मिता की साँसें रोक रहा है। अभी कुछ वक़्त पहले ही उसने अस्मिता को एक दोस्त तक रहने नहीं दिया, यह सोचकर कि उसके पारिवारिक संबंध न खराब हो जाए। और आज उसी अस्मिता ने उस पर होने वाले वार को अपने ऊपर ले लिया। वो कब से इतना स्वार्थी बन गया! माँ-पापा ने ऐसी परवरिश तो नहीं दी थी। इन्हीं सब बातों में घिरा हुआ, अस्मिता के स्वस्थ होने की कामना कर रहा है। बगल में पियू बैठी है लेकिन उसके मन की व्यथा भिन्न है। उसे यह सब सोची-समझी एक प्रक्रिया लग रही

है जो अस्मिता ने अथर्व को पाने के लिए रची है। उसके मन में इस चिंता ने एक गुस्से की चिंगारी लगा दी है। वक्त नाज़ुक है इसलिए कुछ बोल नहीं रही। इतनी रात हो गई, दोनों घर नहीं पहुँचे तो सुनंदा जी ने फ़ोन किया। अथर्व ने माँ को पूरी बात विस्तार से बताई। उसकी आवाज़ से सुनंदा जी को ग्लानि का भाव स्पष्ट सुनाई दे रहा है। वह माँ से बोला, "माँ! मैंने अभी कुछ समय पहले उसे दोस्ती तक रखने नहीं दी, उसकी नियत पर भरोसा नहीं किया और उसने आज एक बार नहीं सोचा, मुझे बचाया..." उसका गला भर आया। सुनंदा जी ने अथर्व को शांत होकर सूझबूझ से निर्णय लेने की सलाह दी और साथ ही अस्मिता के घरवालों को इत्तेला करने के लिए कहा। पुलिस भी अस्पताल पहुँची। अस्मिता अभी भी शल्यकक्ष में है इसलिए पहले अथर्व-पियू से पूछताछ होगी। वही दोनों घटना के मुख्य गवाह हैं। अथर्व से पूछा तो उसने अपना नज़रिया बताया कि कैसे अचानक अंधेरे में हमला हुआ और लूट-पाट की कोशिश की गई। उसने उन लोगों के पहचान का बयान भी दिया। सभी बातें दर्ज करने के बाद पुलिस अस्मिता की चिकित्सक से मिलने जाने के लिए बढ़ी तो पियू ने उन्हें आवाज़ देकर रोका और कहा, "सर! एक और बात है!" अथर्व ने पियू की ओर देखते हुए सोचा शायद किसी घटना को बताना चाहती है। पुलिस कर्मी हामी भरते हुए पलटे और पियू ने उनसे कहा, "उन सभी गुंडों को, अस्मिता पहले से जानती है।" सब इस बात को सुनकर चौंक गए। अथर्व को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि पियू ऐसा कुछ बोल रही है। पुलिस कर्मी ने उस बात को थोड़ा विस्तार से बताने का अग्रह किया तो पियू ने बताया कि एक दिन पहले शाम को जब वह बाज़ार जा रही थी, तब उसने उसी गली में अस्मिता को उन्ही चार आदमियों के साथ कुछ बात करते और देते देखा था। उसने गली के कोने में ऑटो से उतर कर झाँक कर भी देखा था कि

अस्मिता आराम से बात करके निकल गई थी और यही लोग फिर आपस में बातें कर रहे थे। आगे बोली, "अजीब बात ये भी लगी कि जब ये सब हो रहा था, किसी ने हमारी आवाज़ नहीं सुनी, सिर्फ़ अस्मिता आई। फिर जो भी हुआ, अथर्व ने बता दिया।" अथर्व पियू की बात काटने की मंशा से उसे रुकने को बोलने लगा कि पुलिस कर्मी ने उसे रोकते हुए पियू से प्रश्न किया कि उसे ऐसा क्यों लग रहा है कि अस्मिता ने यह सब जानबूझ कर करवाया है। पियू ने थोड़ी देर चुप्पी रखी फिर उत्तर दिया, "क्योंकि वह पहले भी एक ऐसी कोशिश कर चुकी है। कुछ समय पहले वह इसी अस्पताल में इलाज के लिए आई थी, जब उसने बताया था कि सफ़ाई करते समय वह काँच के गुलदस्ते पर गिर पड़ी और रात भर उसने अथर्व को यहाँ रहने के लिए मजबूर किया। मैं जब उसके घर उसके कपड़े लेने गई तो जैसा उसने बताया था वैसा कुछ नहीं था। उल्टा काँच तो सोफ़े के पास गिरा था। यह सब वह जान बूझ कर अथर्व को अपने पास खींचने के लिए कर रही है।" पुलिस कर्मी ने अथर्व से पूछा, "आपने तो कहा आपके ऑफ़िस की दोस्त है! उससे भी अलग कोई रिश्ता है क्या?" अथर्व को ऐसा कुछ सुनने की कोई उम्मीद नहीं थी और न ही सोचा था पियू ऐसा कुछ बोल देगी। उसने गुस्से में जवाब दिया, "जो था वो अतीत में था। जिसमें न उसकी कोई गलती थी न मेरी। हम तो अब दोस्त भी नहीं हैं। और न ही ऐसी कोई बातचीत होती है। मुझे नहीं पता पियू को ऐसा भ्रम क्यों है कि वह यह सब जानबूझ कर करेगी। मेरी समझ से अस्मिता ऐसी हरकतें करने वाली लड़की नहीं है और कोई इस तरह की चीज़ों में अपनी जान जोखिम में नहीं डालता है।" पुलिस कर्मी ने पिछली घटना के बारे में पूछा जिसके बारे में पियू ने बताया। अथर्व ने साफ़-साफ़ कहा, "मुझे नहीं पता पियू को यह सब ग़लतफ़हमी किस बात से हो रही है। ज़िंदगी है सिनेमा नहीं कि कोई अपना

सब काम छोड़कर यह सब लिखता करता रहे। और वैसे भी आप अस्मिता के सहकार्मियों से पूछ सकते हैं, वह ख़ुद निराशावाद की शिकार होने लगी है। बाकी कौन, किससे, क्या बात कर रहा था वो जब अस्मिता होश में आएगी, आप उससे ही पूछ लीजिए।" इतना बोलकर वह पियू की ओर पीठ करके बैठ गया। पुलिस कर्मी ने सब बयान दर्ज किए और चिकित्सक से मिलने चले गए। इधर पियू को अथर्व का गुस्सा समझ में आ रहा है लेकिन वह उसे समझाना चाहती है उसका दृष्टिकोण। उसने बात करने की कोशिश की तो अथर्व ने गुस्से से उसे कहा, "कोई तुम्हारे लिए जान भी दे दे तो भी तुम पहले अपनी मानसिक असुरक्षा के बारे में ही सोचना। तुम्हे नहीं पता था हमारे अतीत के बारे में? या तुम्हें मेरे चरित्र पर भरोसा नहीं? पुलिस कर्मी को क्या कहा उससे फ़र्क नहीं पड़ता, तुम्हारी सोच ऐसी है वो मैंने नहीं सोचा था।" कहकर वह उठ कर चला गया। पियू को बहुत बुरा लग रहा है कि अथर्व वो क्यों नहीं देख पा रहा जो उसे दिखाई दे रहा है। उल्टा उसने उसकी सोच पर इलज़ाम डाल दिया। आहत वहीं चुपचाप बैठी रही। अथर्व जाकर एक पानी की बोतल खरीदकर लाया और पियू को थमाते हुए थोड़ा आराम करने की सलाह दी। उसे भी पता है पियू की तबियत अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं है। उसे आराम की ज़रूरत है। जो हुआ उसके बाद यदि वह उसे घर जाने की सलाह देता तो वह नहीं मानती, उससे अच्छा है वहीं थोड़ा आराम कर ले।

कुछ समय पश्चात चिकित्सक के मार्गदर्शन पर, अस्मिता को सामान्य कक्ष में ले गए। उसको अभी पूरी तरह से होश नहीं आया है। अभी भी दवाओं के नशे में है। कभी बीच में थोड़ी-सी आँखें खोलती हैं, कुछ-कुछ बड़बड़ाती हुई फिर बेहोश हो जाती है। चिकित्सक ने अथर्व से उनके कक्ष में आने का

आग्रह किया। पियू भी साथ गई। चिकित्सक ने पियू को बाहर इंतज़ार करने के लिए कहा। वह एक समय पर एक ही जन से बात करना चाहती है। पियू कक्ष के बाहर जाकर बैठ गई। अथर्व ने, अस्मिता के स्वास्थ्य के बारे में चिंता जताते हुए पूछा। चिकित्सक ने बताया कि उसकी सेहत स्थिर है परन्तु उसकी मानसिक हालत स्थिर नहीं है। अथर्व को ठीक से समझ में नहीं आया। चिकित्सक ने उसकी अभिव्यक्ति से समझ लिया कि उसे अस्मिता की स्थिति के बारे में कुछ नहीं पता। चिकित्सक ने कहा, "अस्मिता ने ऑपरेशन कक्ष में दवाइयों के नशे में बहुत सारी बातें की है। जिससे समझ में आता है वो बहुत दुःखी है। शायद निराशावाद की ओर बढ़ती जा रही है। उसे मदद की आवश्यकता है। उसने बहुत बार दोहराया है कि अथर्व को कुछ नहीं होना चाहिए। घटना की एक छाप छूटी है उसके मस्तिष्क पर। यह कोई सहज बात नहीं है, और भी कई बातें आप लोगों के अतीत से जुड़ी हुई हैं। कुछ बातें उसके आपसे दूर होने की... आपका निजी मामला है लेकिन एक चिकित्सक होने के दृष्टिकोण से मुझे लगा कि यह बात आपको जाननी चाहिए।" अथर्व आश्चर्य में है, ग्लानि में है। दुःख है उसे। ख़ुद को कहीं-न-कहीं अस्मिता की इस हालत का ज़िम्मेदार ठहरा रहा है। चिकित्सक ने आगे पूछा, "आप तो शादीशुदा हैं न?" अथर्व ने हामी भरी। तो चिकित्सक ने उसे सलाह दी कि वह अस्मिता के माता-पिता से मिलकर उन्हें उसकी हालत की जानकारी दे और निश्चित करे कि उसका इलाज ठीक से हो। उसे अपनों के साथ की आवश्यकता है, वर्ना शरीर के घाव तो दिखते हैं और भर भी जाते हैं, हृदय के घाव दिखते नहीं, और सही समय पर उन पर मरहम न लगे तो वो नासूर बन जाते हैं। हमेशा तकलीफ देते हैं। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि अस्मिता से कोई रूखी बात न की जाए, उसकी हालत नाज़ुक है। कुछ समय लगेगा। इतनी बात के बाद

अथर्व कक्ष से बाहर आ गया। पियू ने आते ही उससे पूछा, "डॉक्टर से क्या बात हुई?" अथर्व ने अभी जो सुना चिकित्सक से और पियू ने जो बयान दिया, उन सबसे उसे और गुस्सा आ गया और वह पियू पर झल्लाया। "तुमको क्यों जानना है कि उसकी हालत क्या है, तुम जाकर पुलिस को बयान दो। एक बार मुझसे बात करना भी जरूरी नहीं समझा! कुछ भी सोचा और कुछ भी बोल दिया?" फिर अस्मिता के कक्ष की ओर बढ़ गया। पियू चुप ही रही, तब उसने कुछ नहीं कहा। उसके अंदर भी अब धीरे-धीरे गुस्सा बढ़ने लगा है। ऐसा भी क्या मोह कि अस्मिता की सच्चाई उसे दिख तक नहीं रही।

उधर पुलिस ने अस्मिता के माता-पिता को सूचना दे दी, वह अगले सुबह पहुँचने वाले हैं। पूरी रात, अथर्व और पियू वहीं कक्ष के बाहर बैठे रहे। वहीं इंतज़ार में दोनों की हल्की आँख लग गई। सुबह उपचारिका ने अथर्व और पियू को धीमी आवाज़ में जगाते हुए बताया कि अस्मिता अब बेहतर है, उसे होश आ गया है। अभी ज़्यादा बातचीत करने की अनुमति नहीं है, लेकिन मिल सकते हैं। अथर्व और पियू कमरे में दाखिल हुए। अस्मिता के गले और गर्दन में पट्टी लिपटी हुई, चिकित्सक उसकी नब्ज़ जांचते हुए, और आंतःशिरा से दवाइयाँ जाती हुई, फीकी सी शक्ल के साथ लेटी हुई है। अथर्व ने धीरे से पूछा कि वह कैसा महसूस कर रही है। अस्मिता ने बिना अथर्व की ओर नज़र घुमाए केवल सिर हिलाकर कर बताया कि ठीक है। फिर पियू की ओर देखकर कुछ धीमी आवाज़ में बोली। दोनों को ही सुनाई नहीं दिया। पियू उसके पास गई तो फिर से अस्मिता ने कहा, "तुम कैसी हो? तुम्हें कोई चोट आई?" अस्मिता से ठीक से बात नहीं की जा रही है। फिर भी उसने पियू के बारे में पूछा क्योंकि उसे पता था कि वो अभी पूर्णत: स्वस्थ नहीं है और उस घटना

के समय उसका हाथ मोड़ा गया, धक्का मारा गया था। पियू ने जवाब दिया कि वो ठीक है, लेकिन न उसकी आवाज़ में कोई नम्रता सुनाई दी और न आँखों में कोई सहानुभूति दिखी। अस्मिता को उसके मन का भाव समझ में आ रहा है। उसे पियू की मन की शंका का आभास है। समझ रही है उसके भय को। और लाज़मी है समझना। वो भी इसी डर में थी कुछ वक्त पहले तक कि कहीं उससे रिश्ता छूट न जाए। उसे बचाने के लिए जो समझ पड़ा वो किया फिर भी बचा न सकी। और अब समझती है उस डोर के छूट जाने का दर्द भी। इसलिए उसे पियू से कोई शिकायत नहीं। और अब किसी से कोई उम्मीद भी नहीं। है तो सिर्फ़ एक खालिपन। अथर्व ने कुछ बात करने की कोशिश की। खाने के बारे में पूछा। लेकिन हर बात के जवाब में अस्मिता ने सिर्फ़ "हाँ" या "ना" में सिर हिलाया और आँखें बंद ही रखी। अथर्व की ओर देखना ही नहीं चाह रही है। पुलिस कर्मी आ गए। उन्हें अस्मिता का बयान दर्ज करना है। पुलिस कर्मी ने पियू को वहीं रुकने की हिदायत देते हुए अथर्व को थोड़ा पीछे होकर खड़ा होने के लिए कहा। अथर्व आँखों से पियू को संदेश दे रहा है कि अस्मिता के सामने ऐसा कुछ मत बोलना दोबारा। लेकिन पियू ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। पुलिस कर्मी ने अस्मिता से घटना का ब्यौरा देने को कहा। लड़खड़ाती और धीमी आवाज़ में उसने अपना पक्ष बताया कि वह अपनी ही गली में नीचे दूध का पैकेट खरीदने आई थी और तभी उसे गली से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। उसका ध्यान गया तो उसने दूर से अथर्व को पहचाना। उसे समझते देर नहीं लगी कि वह लूट में फँसा है क्योंकि एक दिन पहले ही उसी गली में उन्हीं लोगों ने कार्यालय से लौटते समय उसका रास्ता रोका था। उसने बिना किसी रुकावट के अपने पास रखे सारे पैसे उन्हें थमा दिए और उन्होंने उसे जाने दिया। वह उन्हें अपने पैसे देकर जाने देने का निवेदन करने के

लिए आगे बढ़ी तो देखा कि पियू को एक आदमी ने पकड़ा हुआ है और अथर्व पर बाकी लोग हमला कर चुके हैं। वहीं किनारे एक पत्थर पड़ा दिखा तो उसने बिना कुछ ज़्यादा सोचते हुए उस पत्थर से उस आदमी को मारा जिसने पियू को पकड़ा था। वह चाहती नहीं थी कि पत्थर सर पर लगे लेकिन जल्दीबाज़ी में सर पर लग गया और वह गिर पड़ा। डर के कारण उसने पुलिस की बात कही जो उन्होंने सच मान ली। हो सकता है अपने साथी को घायल देखकर वह लोग भी डर गए होंगे, इसलिए वह भी भागने लगे। जाते-जाते किसी ने अथर्व पर वार करना चाहा और वह अथर्व को पीछे हटा रही थी ताकि उसे चोट ना लगे, लेकिन वह चाकू उसी के गर्दन पर चोट कर गया। इतना बोल कर अस्मिता ने आँखें बंद कर लीं। उसकी साँसें फूलने लगी। उपचारिका ने पुलिस कर्मियों को बाद में आने का अग्रह किया क्योंकि मरीज़ का ज़्यादा बात करना ठीक नहीं है। पुलिस ने बयान दर्ज किया, अस्मिता से एक दस्तखत करवाया और पियू को साथ बाहर आने का अग्रह किया। अथर्व और पियू पुलिस कर्मियों के साथ कक्ष से बाहर आए। पुलिस कर्मी ने पियू से कहा, "अस्मिता जी के हिसाब से जो अपने देखा वह सही था, बस अपने शायद उसका मतलब गलत निकाला।" पियू ने लेकिन इस बात पर सहमति नहीं दी। तो पुलिस कर्मी ने कहा, "ठीक है! हमने सब बयान दर्ज किए हैं, वह लोग जल्दी ही पकड़े जाएंगे, उसके बाद पता चल ही जाएगा सच क्या है।" इतना कहकर वह जाने के लिए मुड़ गए। फिर क्या सोचा, एक पुलिसकर्मी पलट कर आया और पियू से कहा, "कई बार हमारा असुरक्षा भाव हमें सच देखने से रोक देता है, लेकिन ज़रूरी है मन को शांत करके नज़रिए को बदल कर देखा जाए।"

अथर्व ने प्रश्न भरी निगाहों से पियू से सिर्फ़ इतना बोला, "तुम तो ऐसी नहीं थी।" कहकर निकल रहा है कि पियू ने पलट कर जवाब दिया, "तुम भी ऐसे नहीं थे, अथर्व। तुम भी बदल गए हो। आज तुम्हें न जाने किस रिश्ते ने रोक दिया है जो सच देख नहीं पा रहे। ये सब एक नाटक है और कुछ नहीं।" अथर्व को इतनी चिढ़ हुई इस बात पर कि उसने कोई जवाब नहीं दिया और चला गया। अस्मिता के माता-पिता अस्पताल पहुँच चुके हैं। अस्मिता से मिलने के बाद उसके पिता ने अथर्व से अकेले में बात करते हुए पूछा क्या मामला है। वह अथर्व के बारे में कुछ बातें जानते हैं लेकिन कभी उससे पहले न मिले हैं, न बात हुई है। अथर्व ने उस वक़्त ऐसी कोई बात करनी उचित नहीं समझी बस वही बताया जो चिकित्सक ने उसे बताया था। बेहद शांत होकर और गंभीरता से बोला, "अंकल! अस्मिता ठीक नहीं है। अकेली पड़ गई है इस बड़े शहर में। आर्वी के जाने के बाद वह आप सभी से दूर हो गई है। उसे आपकी ज़रूरत है। पहले ही एक हादसे में अपनी एक बेटी खो चुके हैं। ऐसा कुछ मत कीजिए कि दूसरा कोई हादसा हो जाए। फिर ज़िंदगी भर सिर्फ़ पछतावा होगा। आप लोगों को समझना होगा, आर्वी का जाना अस्मिता की ज़िम्मेदारी नहीं है। अगर आपने उसे नहीं थामा तो वह अँधेरे में खो जाएगी!" अस्मिता के पिता थोड़ी देर चुपचाप सब सुनते रहे फिर अचानक फूट-फूट कर रोने लगे। पिता का मन छलक ही उठा, अपनी संतान के दर्द से। उन्हें अनुभव हुआ कि वह रोष जो उन्हें आर्वी के जाने से हुआ, उसे उन्होंने बिना सोचे समझे अस्मिता पर डाल दिया। अस्मिता की माँ का भी रो-रो कर बुरा हाल है। अथर्व ने दोनों को शांत किया। अथर्व के पिता ने पियू को देखा और उसे धन्यवाद करना चाहा। पियू इतनी परिपक्व है फिर भी आज उसे न जाने क्या हुआ, अपने स्वभाव से बिलकुल विपरीत उसने अस्मिता के पिता को उल्टा

जवाब देते हुए कहा, “आपकी बेटी क्या कहानी लिखती है! और उस पर अमल करती है। सबको लगता है एकदम सच है।” अस्मिता के माता-पिता यह सुनकर हैरान हैं कि तभी अथर्व ने उसकी बात काटते हुए उसे खींचता हुआ दूसरी ओर ले गया।

अग्नि निकासी की सीढ़ियों में ले जाकर वह अपने आप को रोक ना सका और चिल्लाकर बोला, “पियू! दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा? इतनी क्या असुरक्षा कि तुम्हे किसी का दर्द भी नाटक लग रहा है। मैंने कौन से रिश्ते की वफ़ादारी नहीं निभाई, बताओ? अपने ज़िंदगी की कमियों को दूसरों पर थोपना बंद करो।” पियू भी गुस्से से फट पड़ी, “हाँ, निभा रहे हो ना रिश्ते की वफ़ादारी, लेकिन मुझसे नहीं। अस्मिता जो करती है वह सब तुम्हें कुछ नहीं दिख रहा क्योंकि तुम्हारे मन में चोर है। और कमी! कौन सी कमी? कमी उस लड़की में है जो अपना कोई रिश्ता संभाल नहीं पाई। और आज मेरे रिश्ते को छीनने के लिए ये सब नाटक कर रही है। मैंने देखी है उसकी वह कुटिल हँसी, हमें अलग करके।” “हमें अलग करके? हम अलग हुए ही कब थे? तुम अपने दिमाग में बस बातें भरी जा रही हो और ज़हर उगल रही हो।” अथर्व का पारा और चढ़ गया। पियू को आज कुछ बर्दाश्त नहीं हो रहा है। उसने उत्तर में फिर तीर की तरह बातें कहीं। “ना जाने अस्मिता की माँ कैसी हैं जो बेटी को ये परवरिश दी है, कि अगर ख़ुद से न संभले तो जाओ किसी और का भी घर तोड़ दो।” अब ये अथर्व को बहुत अति लगी। पियू को इस तरह बिना किसी को जाने, किसी की परवरिश पर उंगली उठानी नहीं चाहिए। और वह भी ख़ुद को न रोक सका। इस झगड़े में जैसे पियू के मुँह से कुछ अवांछित निकला उसी तरह अथर्व भी बोल पड़ा, “कम से कम दूसरे की जान बचाना और परवाह

करना तो सीखाया है, बेटी को। और इसलिए ही शायद तुम माँ नहीं बन सकती। अगर बन जाती तो सिर्फ़ ज़हर भरती अपने बच्चे के दिमाग में।" ये बात ख़त्म हुई और अथर्व को एहसास हुआ कि उसने कितनी बड़ी ग़लती की है। उसने गुस्से में ये क्या बोल दिया। उसी वक़्त चुप हुआ और थोड़ी आवाज़ नीचे करते हुए बात टालने लगा, "मेरा वह मतलब नहीं था.. मैं बस ये बोल रहा हूँ किसी को बिना जाने ऐसे उसकी परवरिश…" पियू चली गई। सीढ़ियों से नीचे उतर कर घर के लिए निकल गई।

अध्याय १५
भ्रम या तंतु?

पिछले एक हफ्ते से अथर्व रोज़ पियू से संपर्क करने की कोशिश कर रहा है। अस्पताल से निकल कर सीधे मायके चली गई। सुनंदा जी से बात होती है मगर अथर्व से कोई बात नहीं करना चाहती। घर में सभी परेशान हैं।

***

उस दिन पियू के निकलने के बाद, अथर्व ने उसके पीछे जाने की कोशिश की, लेकिन वह किसी तरह से नहीं रुकी। अथर्व ने अस्पताल में जाकर अस्मिता के माता-पिता से पियू के व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और बहाना दिया कि उसकी तबियत ठीक नहीं है, ऊपर से इस हादसे से उसका थोड़ा मन घबरा गया था। उसे भी नहीं समझ में आया वह क्या बोल गई थी। अस्मिता के माता-पिता को बात समझ में आने लगी थी, लेकिन उन्होंने जान-बूझकर इस विषय को और न खींचते हुए वहीं ख़त्म कर दिया। अस्पताल के बारे में सारी जानकारी, कागज़ी दस्तावेज़ अस्मिता के पिता के हवाले कर, अथर्व घर जाने के लिए निकल रहा है। जाने से पहले अस्मिता से मिलने गया। अस्मिता को धन्यवाद कहा मदद करने के लिए और उसकी जान बचाने के लिए। उसे कहने की कोशिश की कि वह हमेशा उससे दोस्ती निभाएगा। जो भी कहा सुना था उसके लिए माफ़ी भी माँगी। अस्मिता ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। अथर्व ने उसके सर पर हाथ फेरा, और अलविदा लिया। जब दरवाजे तक पहुँच गया तो अस्मिता ने अथर्व को आवाज़ दी, “अथर्व! सुनो…” अथर्व

जल्दी से पलट कर आया। अस्मिता ने कई दिनों बाद उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में देखते हुए बोली, "मेरी ग़लती है। मैंने दोस्ती के नाम पर अपनी भावनाओं को ज़मीन देने की कोशिश की। मुझे भी समझ में नहीं आ रहा था मैंने जो भी किया वो क्यों किया था। पियू ने सही समझा था वो काँच वाला हादसा, हादसा नहीं था।" अथर्व अचरजता से उसकी बातें सुन रहा था। अस्मिता ने आगे बोला, "उस दिन जब ऑफ़िस में तुमने मुझसे इस दोस्ती का हक़ छीना, तब समझ में आया कि तुम्हारी ज़िंदगी वाकई में किसी दूसरी दिशा की ओर चल पड़ी है जिस पर मेरा कोई रास्ता नहीं मुड़ता। रिश्तों को बांधने से रिश्ते नहीं बनते और रिश्ते में 'हमारा' होना ज़रूरी है, 'मैं' और 'तुम' से रिश्ता नहीं फलता। एक बात तो तय है कि मैं तुम्हारी दोस्त अभी नहीं बन सकती। भविष्य का पता नहीं। मुझे मेरी बिखरी हुए ज़िंदगी के सिरों को जोड़ने की ज़रूरत है। अपने आप को समझने का समय चाहिए। बेहतर होगा हम एक दूसरे की ज़िंदगी का किस्सा ही रहे, हिस्सा बनने की कोशिश न करें। फिर कभी मुलाकात होगी, तब तक तुम्हें तुम्हारी ज़िंदगी मुबारक।" इतना कहकर अस्मिता ने आँखें मूंद लीं। अथर्व हैरान है, बस। पियू की कही बातें याद आ रही हैं। अभी की उलझी हुई परिस्थितियाँ समझ में नहीं आ रही। उसे पश्चाताप है कि उसने दोनों लड़कियों को केवल चोट पहुँचाई है। वही दो, जिनसे वह किसी-न-किसी समय बहुत गहराई से जुड़ा था। आज पियू के साथ रिश्ता कमज़ोर पड़ने लगा है। इतना सोचते-सोचते, भरी आँखों से वह घर चला गया। उसके कदम दरवाज़े के बाहर पड़े और इधर अस्मिता की आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी। उसके माता-पिता ने उसे सीने से लगाया। सर पर हाथ फेरा और उन्हें समझ में आया कि एक बेटी के खोने के ग़म में वह अपनी दूसरी बेटी को खोने चले थे।

***

अथर्व अपने घर पहुँचा तो पता चला कि पियू अपने माँ-बाबा के घर चली गई थी। उसने सुनंदा जी को फ़ोन पर पूरी बात बताई थी। सुनंदा जी अथर्व की बात सुनना चाहती है। अथर्व ने जब अपना पक्ष रखा, तो सुनंदा जी असमंजस में फँस गईं कि किसे क्या सलाह दें। कोई ग़लत नहीं और सभी ने ग़लती की थी। उन्होंने दोनों बच्चों को समझाने की कोशिश की और समय दिया एक दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं को समझने का।

जब हफ़्ते भर फ़ोन पर संपर्क नहीं हो सका तब अथर्व पियू के घर पहुँच गया। इन्हीं सभी के बीच में उसके दफ़्तर का काम भी चल रहा है। निजी परेशानियों के कारण दफ़्तर में मुश्किलें आने लगीं। उसने कुछ दिनों की छुट्टी ले ली। शनिवार को सुबह ही पियू के दरवाज़े पर दस्तक दी। रूपा जी ने अथर्व को देखा तो ख़ुश हुई और वहीं से पियू और बाबा को आवाज़ देती हुई अथर्व को अंदर ले गई। पियू आकर बैठी।

सागर और रूपा जी ने अथर्व का और घर पर सभी का हाल-चाल पूछा। पियू ने कोई बात नहीं की। अथर्व ने पियू से बात करने की पहल की, "तुम्हारी तबियत कैसी है?" पियू ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया, बस बैठी रही। पता चलता है रूपा जी के दबाव से वहाँ आकर बैठी है। रूपा जी ने बात संभालते हुए अथर्व की बात का उत्तर दिया कि पियू ठीक है। परेशान है इसलिए कमज़ोरी हो गई है। अथर्व ने पियू की ओर देखकर कहा, "घर चलें?" पियू ने गुस्से और गुमान भरी नज़रों से अथर्व की ओर देखा, कुछ कहा नहीं। उसकी आँखों ने साफ़-साफ़ 'ना' ही कहा। रूपा जी ने लेकिन बात बढ़ाई और बोली, "हम भी तो यही समझा रहे हैं, कि थोड़ा बहुत मन मुटाव हो जाता है तो कोई

ऐसे पति का घर छोड़कर मायके आकर बस जाता है क्या! जाओ बात करो, बातें सुलझा लो।” ऐसा नहीं कि रूपा जी को पियू के गुस्से और दर्द का एहसास नहीं या वह उसकी मानसिक स्थिति को समझना नहीं चाहती। यह एक माँ के भीतर का डर बोल रहा है जिसकी बेटी की पहले भी एक शादी टूट चुकी है। वह नहीं चाहती कि किसी भी कारण उसके रिश्ते में कोई भी दरार आए। पियू ने गुस्से से माँ से कहा, “पति का घर! मायका मतलब माता-पिता का घर, मेरा घर कौन सा हुआ फिर? मैं किसकी हुई?” बोल कर, उठ कर चली गई। कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया। अथर्व ने उनसे पियू के कमरे में जाने की अनुमति मांगी। माँ-बाबा ने इज़्ज़त के साथ उसे आज्ञा दी। अथर्व पियू के पीछे उसके कमरे में गया और दरवाज़ा अंदर से बंद कर दिया। वह नहीं चाहता कि माँ-बाबा उनकी निजी बातें सुनकर और आहत हों। पियू गुस्से में खिड़की के पास बैठी है। अथर्व ने दोबारा पहल की, “अस्मिता ने बताया, तुम ने जिस गुलदस्ते की बात पर ध्यान दिया था, वह सही था। लेकिन उस रात जो घटना घटी थी तुम ने पिछली घटना से बस जोड़ लिया। खैर आज के बाद अस्मिता की कोई बात नहीं होगी। इस बात को हम आगे नहीं बढ़ाते। घर चलो।” पियू को इस बात से और तेज़ गुस्सा आया। “अस्मिता ने बोला तब उस बात को सच माना। मैं बोलती रह गई, मेरी किसी बात का कोई मूल्य नहीं। और क्या कहा था तुमने उस दिन अस्पताल में कि अच्छा हुआ मैं माँ नहीं बन सकती। अथर्व, तुम भी बाप बनने लायक नहीं हो। तुम आज तक एक रिश्ते को सच्चाई से निभा नहीं सके, तुम मुझ पर किस हक़ से उँगली उठाते हो? मेरी तो शारीरिक कमी है ना, मैं माँ नहीं बन सकती, तुम अपनी मानसिकता सुधारो।” अथर्व ने थोड़ा खिज कर कहा, “माना गलती हुई, नहीं बोलना चाहिए था जो बोला, लेकिन माफ़ी माँग रहा हूँ। अस्मिता ने जब बताया पिछली घटना कि सच्चाई,

मैं भी हैरान था। उसके मन में जो भी हो, मैंने तो कोई झूठ नहीं बोला। और ऐसा नहीं कि तुम्हें कुछ पता नहीं था और अचानक सब कुछ हुआ। जितनी परिस्थिति तुम्हारे सामने आई, उतनी ही मेरे सामने। फिर ये सब बोलने की क्या ज़रूरत है?"

पियू का गुस्सा कहीं कम होने को तैयार नहीं है। "फिर वही अस्मिता ने जब कहा, मेरे कहने का कोई मूल्य नहीं है? पत्नी मैं ही हूँ ना? या पिछला रिश्ता छूटे नहीं छूट रहा?" अब अथर्व का गुस्सा भी बढ़ने लगा। "मेरा पिछला रिश्ता, मेरा अतीत! मैंने तो कभी नहीं पूछा या सवाल उठाया तुम्हारे अतीत पर। जब अलग होने के इतने सालों बाद मुझसे मिली थी तब भी पिछली बातों से फ़र्क पड़ता था। याद है ना? तब जब मैंने हाथ थामा तो सब ठीक लगा। आज मेरा अतीत!" पियू कुछ और कहती इससे पहले अथर्व दरवाज़ा पटकाता हुआ बाहर निकल गया। रूपा जी और सागर जी ने रोकने का प्रयास किया मगर हाथ जोड़ कर माफ़ी मांगते हुए वह घर चला गया।

घर जाकर सीधे कमरे में गया। सुनंदा जी ने अथर्व को परेशान देख कर थोड़ा समय देना ठीक समझा फिर खाना खाते समय उससे बात करने की कोशिश की। अथर्व ने थोड़ा-सा बताया जो कहा सुनी हुई पियू के साथ। नंदिनी सब कुछ सुन रही है। सुनंदा जी ने यही सलाह दी कि कई बार हालात हमारे विपरीत होते हैं। लेकिन ज़रूरी है शांति से, एहम और क्रोध को एक तरफ़ रखकर रिश्तों को संभाला जाए। उनसे बात करके अथर्व का मन थोड़ा शांत लग रहा है। उसने इस विषय को समय देने का निर्णय लिया।

***

समय अपनी गति से चलता है और किसी के लिए नहीं रुकता। समय सब की परीक्षा लेता है। संयोग कहें या समय का खेल, न जाने कहाँ से इतने सालों बाद, इस समय जब पियू के जीवन में कोलाहल है, शेखर ने पियू से संपर्क किया। एक रात पियू ऐसे ही कमरे में बैठी शादी की तस्वीरें देख रही है और अचानक एक अज्ञात नंबर से फ़ोन आया। उसने फ़ोन उठाया तो वहाँ से पहले कुछ देर किसी ने कुछ नहीं बोला। पियू ने फ़ोन काट दिया। कुछ देर पश्चात दोबारा फ़ोन आया। उसने उठाया तो इस बार एक जानी-पहचानी सी आवाज़ कानों में पड़ी। “पियू! कैसी हो? पहचाना?” पियू दंग रह गई। उसने आवाज़ पहचान ली। शेखर, इतने सालों बाद अचानक, ऐसे। इतने सालों में कभी कोई बात नहीं हुई, कभी ग़लती से भी कहीं नहीं मिले।

***

उधर वफ़ा जी और अर्जुन जी अथर्व की पहली सालगिरह पर आ नहीं सके, उनके रिश्तेदारी में किसी की शादी थी तो वहाँ से लौटे और भेंट के साथ अथर्व और पियू से मिलने पहुँचे। घर पर सुनंदा जी और नंदिनी हैं। जहाँ वफ़ा जी का मन नंदिनी से मिलने के लिए बेचैन है वहीं अर्जुन जी भी उत्सुक हैं नंदिनी को देखने के लिए। अर्जुन जी बैठक में ही सोफ़े पर बैठे लेकिन वफ़ा जी सबसे पहले नंदिनी के कमरे में गईं। सुनंदा जी ने अर्जुन जी से हाल-चाल पूछा, शादी कैसी रही, क्या-क्या हुआ। वफ़ा जी ने पहले नंदिनी को जाकर गले लगाया। नंदिनी के चेहरे पर एक मुस्कान खिल गई। वफ़ा जी उसके लिए एक ज़रिया हैं अपने अतीत को थामे रखने का। उस अंश से जुड़े रहने का जिसे वो पीछे छोड़ने को तैयार नहीं। वफ़ा जी ने हर बार की तरह नंदिनी के पैरों पर नज़र डाली। वही एक पैर में पहनी हुई पायल। जाने कितने सालों का साथ।

बहुत छोटी-छोटी चीजें आपको अतीत की डोर से बांधे रखती हैं। जो समय बीत गया वो लौटता नहीं इसलिए हम में से कुछ होते हैं जो उस समय को बीतने नहीं देना चाहते। वहीं बंध जाते हैं। नंदिनी, वफ़ा जी और खन्ना साहब के साथ भी कुछ ऐसा ही है। तीनों एहसासों की डोर थामे अतीत में रुके हुए हैं। कुछ देर साथ बैठकर पुरानी यादों के एहसासों को समेटकर, वफ़ा जी ने नंदिनी से बैठक में चलने का आग्रह किया। वो अर्जुन जी की उत्सुकता से भली-भांति परिचित हैं। दोनों बैठक में पहुँचे तो देखा सुनंदा जी की पलकों में आँसू हैं और खन्ना साहब गंभीरता से किसी बात-चीत में व्यस्त हैं। वफ़ा जी की भी व्याकुलता बढ़ गई। खन्ना साहब ने उठकर नंदिनी के सिर पर हाथ फेरा और उसका हाल पूछा। वफ़ा जी सुनंदा जी को सांत्वना देते हुए उनके पास बैठी और भावुकता का कारण पूछा। सुनंदा जी कुछ बोलती तभी अथर्व ने चौखट पर दस्तक दी। खन्ना साहब ने दरवाज़ा खोला तो सामने अथर्व को पाया। अथर्व ने दोनों को नमस्ते किया और बिना कोई बात आगे बढ़ाये अपने कमरे में चला गया। वफ़ा जी ने सुनंदा जी से उनकी उदासी का कारण जानना चाहा और साथ ये भी कि अथर्व इस तरह बिना बात किए चला गया। सुनंदा जी ने वफ़ा जी को बीते हुए दिनों के बारे में बताया और खन्ना जी अथर्व के कमरे की ओर बढ़े। नंदिनी भी उदास है घर की उलझी हुई परिस्थितियों से। उसे पियू की कमी बहुत खल रही है। उसके दर्द को, रोश को समझ रही है। पिछले कुछ दिनों में उसने अथर्व के पास जाना शुरू किया है। उसके कमरे में जाकर उसके सिर पर हाथ फेर कर आती है। कभी-कभी पूछ लेती है, “तू ठीक है? चिंता मत कर, सब ठीक हो जाएगा!” जहाँ वफ़ा जी बातों को सुनकर अचंभित हैं वहीं खन्ना साहब ने अथर्व से बात करने की कोशिश की। उसे अपने साथ घर से बाहर चलने का आग्रह किया। अथर्व बिना किसी सवाल-

जवाब के चुपचाप उनके साथ घर से निकल आया। सुनंदा जी बहुत दृढ़ महिला हैं और घर पर हर निर्णय बहुत संयम के साथ लेती हैं, परंतु माँ हैं। शर्मा जी के जाने के बाद उन्होंने एक मजबूत दीवार की भूमिका निभाई है इस घर को बांधे रखने में परंतु मातृत्व प्रेम ऐसा ही है जो अपने संतान के दुःख में कमज़ोर पड़ने लगता है। वफ़ा जी ने उन्हें सहारा दिया। इतने सालों की घनिष्ठता है और एक तरह से इसी परिवार का हिस्सा। एक माँ दूसरी माँ के कष्ट को भली भांति समझ गई।

खन्ना जी ने बाहर जाकर अथर्व से उसकी मनोदशा जानना चाहा। उनके जीवन में जहाँ नंदिनी एक बेटी है वहीं इतने सालों में अथर्व ने भी एक छोटे बेटे का रूप लिया है। आज जब अथर्व को अपने पिता की कमी महसूस हो रही है, खन्ना जी ने अथर्व के कंधे पर हाथ रख उसे भरोसा दिलाया। अथर्व भी नहीं चाहता कि पियू से जो रिश्ता है उस पर कोई आंच आए लेकिन इस तरह के मन-मुटाव जीवन के बहुत कुछ बदल देते हैं। न केवल पियू का साथ डगमगाया है बल्कि उसे पछतावे में छोड़कर अस्मिता भी सारे बंधन तोड़कर निकल गई है। अथर्व को ग्लानि है कि वह जीवन में किसी रिश्ते को ठीक से निभा नहीं सका। एक दिन सर से पिता का साया उठ गया। इतनी कोशिशें कीं लेकिन उन्हें बचा न सका। नंदिनी के लिए कुछ न कर सका। अस्मिता, जिसे इतना प्रेम किया उसका साथ छूट गया, फिर पियू। उसे हर रिश्ते में केवल अपनी नाकामी ही दिख रही है। खन्ना जी उसके इस कष्ट को समझते हैं। उन्होंने अथर्व को सांत्वना दी और हिम्मत बाँधे रखने को कहा। उनकी बातें अथर्व के लिए मायने रखती हैं क्योंकि जिस तरह खन्ना साहब अथर्व को बेटा मानते हैं, ठीक उसी तरह अथर्व भी उन्हें एक पिता का सम्मान देता है। उनकी बातें

सुनकर अथर्व की आँखें भर आई और गला रुआंसा हो गया। “मैं ये सब करना नहीं चाहता, लेकिन वो भी समझने को तैयार नहीं है। मेरा अतीत, मैंने धोखा दिया और न जाने क्या-क्या बोल गई मुझसे। मैंने जो कहा मेरी गलती है, नहीं कहना चाहिए था और मैंने उसके लिए माफ़ी भी माँगी, लेकिन वो रूखे तरीके से तंज कसती है, मुझसे सहन नहीं होता।” इतना कहकर अथर्व की आँखों से आँसुओं की धार बह निकली। खन्ना जी ने उसे शांत करवाया। “अथर्व, हमारा और इन औरतों का प्यार और गुस्सा एक जैसा नहीं होता। इन्हें हमसे ज़्यादा गुस्सा इसीलिए आता है क्योंकि इन्हें हमसे ज़्यादा प्यार करना भी आता है। समझने की कोशिश करोगे तो एक तरफ़ा पियू की बातें भी तुम्हें ठीक लगने लगेगी। मैं नहीं कहता तुम गलत हो या तुम्हारी नीयत में खोट है, शायद पियू डरी हुई है। उसे लगता है तुम उसे छोड़ दोगे और फिर उसका दिल टूट जाएगा। हो सकता है इसीलिए वह ख़ुद को टूटने से बचाने के लिए ये सब कर रही है। उसके दिमाग ने उसे कहीं-न-कहीं समझाया हुआ है कि ऐसे रुष्ट रहेगी और तुम्हें दर्द देगी तो उसका दर्द कम होगा लेकिन जितना मैं पियू को जानता हूँ वो इस वक्त बेहद दर्द में है। और मुझसे ज्यादा ये बात तुम समझते हो।” अथर्व ने हामी भरी। खन्ना जी ने उसे शांति से निर्णय लेने की सलाह दी। “कुछ दिन अभी शांति रखो, दोबारा कोशिश करना। तुमसे बहुत प्यार करती है। समय लगेगा लेकिन मान जाएगी।” अथर्व के मन में भी उम्मीद जगी। वह सारे साथ बिताए लम्हे, वो दोस्ती, सब नज़रों के सामने है। वह जानता है पियू का प्रेम, उसका भरोसा और उसका दर्द भी। उसने कुछ दिनों बाद फिर बात करने की कोशिश करने का निर्णय लिया। खन्ना जी ने अथर्व को घर छोड़ा, नंदिनी से मिले और वफ़ा जी के साथ घर लौट गए। जाते-जाते नंदिनी से अगले दिन तैयार रहने के लिए कहा, वह सुबह नंदिनी को अपने साथ खन्ना बुक स्टोर ले

जाना चाहते हैं। बहुत दिन हो गए नंदिनी को वहाँ गए। सुनंदा जी ने भी हामी भरी। नंदिनी अपने कमरे में लौट गई। कुछ देर बाद उसकी दवाइयाँ लेकर अथर्व उसके कमरे में गया तो देखा अपनी काली डायरी के पन्नों को पलट रही है और खिड़की से बाहर आसमान को ताक रही है। अथर्व की आवाज़ से पलटकर उसकी ओर एक नज़र देखा और दवा वहीं मेज़ पर रख देने को कहा। दवा मेज़ पर रखकर, अथर्व वहीं बिस्तर पर बैठ गया। उसे नंदिनी के साथ बिना कुछ कहे समय बिताना हमेशा से सुकून देता है। जब से छोटा था तब से। अब बड़ा हो गया है तो दूरी कुछ बढ़ गई है लेकिन आज भी नंदिनी उसकी वही माँ स्वरूप दीदी है जिनके सीने से लगकर घंटों उस खुले आसमान को देखता था। थोड़ी देर बैठा और फिर अपने कमरे में जाने के लिए उठा ही था कि ठोकर लगकर मेज़ पर रखा पानी का गिलास लुड़क गया। नंदिनी ने देखा और चुपचाप वैसे ही बैठी रही अपनी डायरी और आसमान को निहारती हुई। धीरे से बोली, "तू जा, मैं बाद में साफ़ कर लूँगी।" अथर्व कमरे से बाहर गया और रसोई से सफ़ाई करने के लिए एक कपड़ा ले आया। नंदिनी उसे देख मुस्कुराई, कुछ बोली नहीं। अथर्व पानी पोंछ रहा है कि अचानक उसे लगा पानी मेज़ की दराज में चला गया है। कहीं उसमें रखा कोई सामान गीला होकर खराब न हो जाए, उसने दराज खोल दी और अवाक रह गया। नंदिनी भी दराज की आवाज सुनकर हड़बड़ाई और अथर्व की ओर देखा। अथर्व को गुस्सा आया और बिन कुछ बोले वह कमरे से निकल गया। नंदिनी सकपकाई लेकिन उसके पीछे नहीं गई। अपने कमरे का दरवाजा बंद किया और सो गई।

अगले दिन सुबह नाश्ते के समय सुनंदा जी ने दोनों को आवाज़ लगाई। अथर्व कार्यालय जाने के लिए तैयार हो चुका है। नंदिनी आई तो अथर्व से

बिना नजरें मिलाए चुपचाप नाश्ता करने बैठ गई। सुनंदा जी का ध्यान नहीं गया। अथर्व से बोली, “शाम को ऑफिस से लौटते समय, नंदिनी को खन्ना बुक स्टोर से साथ ले आना। आज खन्ना साहब उसे ले जाएँगे अपने साथ।” “मैं नहीं लाऊंगा, मुझे ऑफिस में बहुत काम है। और वैसे भी मुझे लगता नहीं मुझे किसी की कोई चिंता करने की ज़रूरत है। सब अपना ध्यान ख़ुद ही रख लेते हैं।” इस तरह का जवाब सुनकर सुनंदा जी भौचक्की रह गई। नंदिनी के बारे में अथर्व ने ऐसे बोला, उन्हें विश्वास नहीं हुआ। नंदिनी की ओर देखा तो वो सिर झुकाए अपना नाश्ता कर रही है। सुनंदा जी ने अथर्व पर ज़ोर देते हुए पूछा, “क्या बात है? तू ऐसे कैसे बात कर रहा है? कुछ हुआ क्या?” अथर्व ने पलटकर गुस्से से नंदिनी की ओर देखा और कहा, “इन्हीं से पूछ लो क्या हुआ है।” और उठकर अपने कमरे में चला गया। नंदिनी से पूछा, “क्या हुआ? वो तुझ से नाराज़ क्यों है?” इतने में अपना सामान कमरे से लाते हुए अथर्व ने उत्तर दिया, “कैसे बताएगी कुछ, सबको यहाँ जाने कब से पागल बना रखा है।” “ठीक से बताएगा हुआ क्या?” सुनंदा जी ने ज़ोर देते हुए पूछा। अथर्व ने दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए कहा, “दीदी जाने कितने महीनों से दवाई खाने का नाटक कर रही है। कल उनकी दराज में पिछले 2-3 महीनों की गोलियाँ मिली। वो ख़ुद नहीं चाहती उनकी हालत सुधरे। हमें रोज़ पागल बनाती है कि मेज़ पर रख दो दवाई, खा लूँगी।” बोलकर गुस्से में फुँफकारता हुआ घर से निकल गया। माँ ने अचंभित होकर नंदिनी की ओर देखा और उठकर सीधे उसके कमरे में गई। मेज़ की दराज खोली तो सच में उसमें 2-3 महीने की दवाइयाँ एक डिब्बे में भरकर रखी हुई हैं। नंदिनी भी पीछे-पीछे कमरे तक गई। माँ ने गुस्से में उसकी ओर देखा और कहा, “तैयार हो जाओ, खन्ना साहब आते ही होंगे।” नंदिनी ने नजरें झुकाए, सिर हिला कर हामी भरी। नंदिनी के दुकान जाने

के बाद, सुनंदा जी ने वफ़ा जी से फ़ोन पर बात की। उनसे निवेदन किया कि वह नंदिनी से बात करे। पता नहीं कब से दवाइयाँ नहीं खा रही। वफ़ा जी को भी समझ में नहीं आया कि आखिर नंदिनी ऐसा क्यों कर रही है। दवाइयों के बिना हालत सुधारना तो दूर उल्टा हालत और बिगड़ेगी ही।

***

अथर्व को बहुत अच्छे से पता है कि अस्मिता अब उस कार्यालय परिसर में तो क्या शहर में भी नहीं है लेकिन अभी भी परिसर में आते-जाते नजरें घुमाता है। उसका पछतावा, या ग्लानि जो कहें। शाम को कार्यालय से लौटते समय खन्ना बुक स्टोर से नंदिनी को साथ लेकर घर आया। पूरे रास्ते में दोनों ने कोई बात नहीं की। कुछ दिन ऐसे ही बीते। माँ ने नंदिनी से बात करने की कोशिश की, वफ़ा जी ने भी पूछा लेकिन नंदिनी ने कोई जवाब नहीं दिया। अब माँ सामने खड़ी होकर उसे दवाई खिलाती हैं। नंदिनी भी बिना किसी प्रतिरोध के दवाई खा लेती है। लेकिन उसकी उदासी बढ़ती ही जा रही है। माँ को समझ में नहीं आ रहा कि नंदिनी से कैसे बात की जाए। एक शाम अथर्व कार्यालय से लौटा तो नंदिनी के कमरे से उसे पियू की आवाज़ आई। माँ रसोई में हैं। वह फ़टाफ़ट नंदिनी के कमरे की ओर गया तो देखा सच में पियू है। तभी पीछे से माँ आई और बोली, “मैंने पियू को आने के लिए कहा। नंदिनी भी उसे बहुत याद करती है। मैं तो बहुत-बहुत याद करती हूँ पियू को।” अथर्व अंजाने ही मुस्कुराते हुए पियू के पास पहुँचा। “कैसी हो पियू? मैं सोच ही रहा था तुमसे बात करने के बारे में और देखो तुम...”

पियू ने बीच में उसकी बात काटते हुए सुनंदा जी से कहा, “माँ, अब मैं निकलती हूँ। बहुत देर हो गई है, जाने में समय लगेगा।” अथर्व ने कहा, “रुक

सकती हो, मैं घर छोड़ आऊँगा।'' पियू ने पलट कर कहा, ''वैसे भी छोड़ चुके हो, घर मैं अपने आप चली जाऊँगी, और छोड़ने की ज़रूरत नहीं है।'' इतना बोलकर नंदिनी और माँ से गले मिली और अपना पर्स उठाकर निकल गई।

अथर्व अपना सा मुँह लेकर अपने कमरे में चला गया। उसे बुरा लग रहा है। उधर पियू को लेने पियूष भाईया आए हुए हैं अपनी ऑटो लेकर और घर तक पियू की आँखों से दर्द छलकता ही रहा। पियूष भाईया को भी समझ में आ रहा है कि पियू दुःखी है, लेकिन उन्होंने कोई बात नहीं की। पियू घर के बाहर उतरी और पैसे बढ़ाए तो पियूष ने कहा, ''दीदी, हम भी आपके भाई हैं। कोई बात हो तो हमसे बोल सकती हो।'' पियू मुस्कुराई और घर के अंदर भाग गई।

अगली सुबह पियूष, अथर्व के गली के बाहर ही मिला। अथर्व कार्यालय के लिए निकला ही था कि पियूष ने उसे रोका। ''भाईया जी! सुबह से आपका ही इंतजार कर रहे हैं। कल रात को सोचा था फोन पर बोल दें, लेकिन फिर सोचा आज मिलकर ही बात करेंगे।'' अथर्व को आश्चर्य हुआ कि अचानक पियूष कहाँ से मिल गया सुबह-सुबह। पियूष ने आगे कहा, ''भाईया, कल आपके घर से निकलकर अपने घर तक, दीदी बस रो ही रही थी। हमने पूछा, जरा ठीक नहीं लगता फिर भी हम पूछे लेकिन दीदी कुछ बोली नहीं। हमें लगता है कि बहुत ही ज्यादा कष्ट में हैं। आप बात कीजिए।'' अथर्व को बात समझ में आई और उसने कहा कि वह बात करेगा। पियूष ने कहा, ''ठीक भाईया तो लपक कर बैठ जाइए ऑटो में, आपको ऑफिस छोड़ देते हैं।'' अथर्व उसके साथ कार्यालय के लिए निकल गया। दिन भर खन्ना साहब की कही बातें और अब पियूष की बातें उसके दिमाग में चल रही हैं। उसे पियू के

प्यार का रंग महसूस हो रहा है। उसने तय किया कि वह पियू से दोबारा मिलकर सब ठीक करने की कोशिश करेगा।

***

पियू के जीवन में एक नई उथल-पुथल ने दस्तक दी है। शेखर पियू से लगातार संपर्क करने की कोशिश कर रहा है। पियू ने कई बार गुस्से में फ़ोन रखा या उसका नंबर ब्लॉक भी किया लेकिन हर दो-तीन दिनों में वह किसी-न-किसी तरीके से उससे संपर्क स्थापित कर लेता है। हर बार फ़ोन करके एक ही बात की पियू को छोड़कर उसने दुनिया की सबसे बड़ी गलती की थी। उसे पियू की माफ़ी चाहिए और उसे वह फिर से अपने जीवन में चाहता है।

पियू से अलग होने के बाद शेखर ने दोबारा शादी की थी। चर्चा है कि दूसरी शादी जिससे कि उसने शेखर के ही किसी करीबी दोस्त से विवाह के बाहर संबंध स्थापित किया। शेखर के जानकारी में आने पर उसने पत्नी पर दबाव डाला, जिसके परिणामस्वरूप पत्नी ने दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दायर किया और शेखर से अलग हो गई।। फिर उसी दोस्त के साथ विदेश में कहीं रहने लगी। यहाँ शेखर और उसके परिवार ने पुलिस स्टेशन के चक्कर लगाए, सारा मामला निपटाने में बहुत पैसे भी खर्च हुए। मानसिक तनाव की वजह से शेखर अधिकतर समय नशे में ही रहने लगा और धीरे-धीरे व्यापार पर इसका असर होने लगा। इसी बेहाली में उसे समय ने पियू के दर्द का आभास करवाया और उसे अपनी गलतियों से रूबरू होने पर मजबूर किया। कहते हैं न, समय की जब लाठी पड़ती है तो उसमें आवाज नहीं होती मगर सारा भुगतना सूद समेत भरना पड़ता है। शेखर और उसके परिवार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। अब वो हर हाल में अपनी गलतियाँ सुधारना चाहता है। उसे पता है कि

पियू अपने जीवन में आगे बढ़ चुकी है लेकिन फिर भी कोशिश करना चाहता है। अपने कुछ पुराने दोस्तों की मदद से पियू का नंबर पता करवा लिया और उससे संपर्क करने की कोशिश करता है।

***

पिछली रात अथर्व के घर से लौटकर फिर से उसके ज़ख्म ताज़ा हो गए। अथर्व को सामने देखकर दोबारा सारी बातें दिमाग में चलने लगी जिससे टूटा हुआ महसूस करने लगी। घर लौटकर कमरे में बैठी सुबक रही थी कि अनजान नंबर से कॉल आती है। फ़ोन उठाया तो आवाज़ से पता चला शेखर किसी नए नंबर से संपर्क करने की कोशिश कर रहा था। वैसे हर बार उसकी आवाज़ सुनकर या तो झल्ला उठती है या फ़ोन रख देती है लेकिन उस रोज़ रो पड़ी। सोच रही थी क्या किस्मत है। जिससे इतना प्यार किया, बिना किसी मतलब, बिना किसी चालाकी के, अतीत और वर्तमान, दोनों बार उसे सामने वाले इंसान ने तोड़कर रख दिया। शेखर उसके सुबकने से व्याकुल हो उठा। प्यार और नरम आवाज़ में पियू को पुकारते हुए कहा, “पियू! क्या हुआ? मुझसे बात करो। मैं वही तुम्हारा शेखर जो रोज तुम्हें देखने के लिए घंटों तुम्हारे घर के बाहर इंतजार किया करता था। आज भी मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा हूँ।” पियू कुछ ना बोली बस रो रही थी। “मुझसे एक बार भी नहीं मिलोगी? चाहे दोबारा मुझसे प्यार मत करो मगर हमसे जुड़े उस रिश्ते के खातिर ही सही एक बार मिल लो।” पियू का मन व्याकुल था, दर्द में था। भाग जाना चाहती थी कहीं ताकि दर्द उससे दूर चला जाए। मन में हज़ारों बातें चल रही थी। अंदर का शोर, कोलाहल इतना था कि अनजाने ही उसने शेखर से मिलने के लिए हाँ कर दी। “ठीक है! कल शाम को 5 बजे मिलते हैं बाजार में। वहीं एक छोटी

चाय की दुकान है, वहीं मिलेंगे।” इतना कहकर उसने फोन रख दिया और रोने लगी। उसके रोने की आवाज से माँ-बाबा बहुत चिंतित थे। कमरे के बाहर खड़े होकर आवाज लगा रहे थे। कुछ देर बाद पियू ने दरवाजा खोला और उनसे अपने कमरे में जाने को कहा। उसे समय चाहिए अपने साथ। फिलहाल किसी और का साथ उसे केवल और परेशान करेगा। रूपा जी ने दबाव दिया उसे बात करने का, माँ है न! लेकिन सागर जी समझते हैं, पियू को समय चाहिए हालात से लड़ने के लिए। सागर जी ने पियू के सिर पर हाथ फेरा। “बेटा, तुम्हें जो ठीक लगता है वही करना। हम तुम्हारे साथ हमेशा खड़े हैं। हमें तुमपर पूरा यकीन है।” पियू उनके गले लगी और धीरे से कहा, “बाबा, मुझे थोड़ा वक्त चाहिए अपने साथ वरना मैं और उलझती चली जाऊँगी।” बाबा ने उसे प्रेम से पुचकारा और रूपा जी को चलने का आग्रह किया। रूपा जी की आँखें भी डबडबाई हुई, वह अपनी बेटी को यूँ अकेला नहीं छोड़ना चाहती लेकिन सागर जी ने उन्हें गंभीर स्वर में आग्रह करते हुए, पियू को अकेले रहने देने को कहा। रूपा जी अपने कमरे की ओर चली गई।

पियू ने अलमारी से कुछ पुरानी तस्वीरें निकाली जिनमें उसकी और अथर्व की तस्वीरें थी। अपने मन के उधेड़-बुन में लगी हुई एल्बम उलट-पुलट रही थी कि तभी एक पुरानी तस्वीर सामने आई जिसमें शेखर था। रोते-रोते उसे समझ ही नहीं आया कि उसने अगले दिन शेखर को मिलने के लिए ‘हाँ’ कर दी है। उसे अजीब सी घबराहट महसूस होने लगी। भावुक होकर यह उसने क्या कर दिया। एक बार सोचा कि उसे फ़ोन करके मना कर दे कि नहीं मिलना। फ़ोन उठाया भी लेकिन कॉल नहीं कर सकी। असमंजस से भरी हुई, कमरे में चक्कर काटने लगी। उसने सोच लिया कि वो शेखर से न ही मिलेगी और न

ही उसे सूचित करेगी कि नहीं मिल सकती। फ़ोन उठाया और जिस नंबर से फ़ोन आया था उसे प्रतिबंधित कर दिया। उसने मन पक्का कर लिया था कि उसे शेखर से किसी भी तरह का कोई संपर्क नहीं रखना। तस्वीरें उठाईं और अलमारी में वापस रख दिया। जिस दराज में एल्बम रखा वहीं पीछे की तरफ एक छोटा-सा डब्बा रखा हुआ है, जिसपर पियू की नज़र पड़ी। उसे खोला तो शेखर की दी हुई एक अंगूठी मिली जो पियू के पास थी। सारे ज़ेवर, सामान सब लगभग लौटा दिया था, बस यह अंगूठी उसने दर्द की निशानी समझ कर अपने पास रखी थी। सोचा था जीवन में कोई भी दर्द हो इस अंगूठी को देखकर कम ही लगेगा। आज पियू को जो चोट लगी है वो इस अंगूठी को देखकर भी कम नहीं हो रहा। उसने निर्णय लिया कि उसे अगले दिन शेखर से आखिरी बार मिलना चाहिए और अंगूठी लौटा देनी चाहिए। शेखर की कोई याद और पहचान जोड़े नहीं रखनी उसे। उसने फ़ोन उठाकर नंबर अप्रतिबंधित किया और फिर अपनी यादों में और दर्द के हिसाब में खो गई। कब आँख लगी पता ही नहीं चला।

***

उधर दफ़्तर पहुँचकर भी अथर्व का मन व्याकुल है। वो अपने रिश्ते को संवारना चाहता है। नंदिनी की मायूसी देखकर पिछली शाम सुनंदा जी ने पियू से मिलने का आग्रह किया था। पियू और नंदिनी में एक मधुर संबंध है। सुनंदा जी को लगा कि पियू कोशिश करेगी तो नंदिनी कुछ बात करेगी। अथर्व को यह जानकर खुशी हुई कि आज भी पियू के मन में माँ के लिए सम्मान और नंदिनी के प्रति प्यार है। इसका सीधा अर्थ है कि खन्ना साहब ने जो कहा था वही सच है। फिर पियूष ने भी तो बताया कि कल घर तक रोते रोते गई थी।

अथर्व को पियू के कष्ट का आभास है। वो भी उससे प्रगाढ़ प्रेम करता है। उसने निर्णय लिया कि आज वो पियू के घर जाकर उसे हर हाल में मनाएगा। फिर चाहे उसे कितनी भी मिन्नतें करनी पड़े, चाहे पियू कुछ भी सुनाए लेकिन वो आज अपनी पियू को लौटा लाएगा अपने साथ। दिनभर दफ़्तर में जैसे-तैसे समय निकाला और जल्दी निकलकर बाज़ार गया। ये सारी घटनाएँ उस दिन से शुरू हुई थी जिस दिन पियू और अथर्व बाज़ार गए थे, दर्जी से फ़टा हुआ सूट सिलवाने। इस माहौल में वो बात किसी के ध्यान में रही ही नहीं। अथर्व ने सोचा बाज़ार जाकर दर्जी से वही कुर्ता लेकर जाएगा पियू के घर। कार्यालय से ऑटो लेकर सीधा बाज़ार निकला। सड़क पार करते ही उस दिन की यादें मानो आँखों के सामने चलचित्र की भाँति तैरने लगीं। वही रास्ता। सोच रहा है यदि उस दिन भी ऑटो का इंतजार किया होता या न ही आता बाज़ार तो ये सब कुछ होता ही नहीं। सोचते-सोचते दर्जी की दुकान पर पहुँचा। पर्ची थी नहीं तो सूट ढूँढ़ने में वक्त निकल गया। बहुत देर ढूँढ़ने के बाद मिला, गुलाबी रंग का सूट। थैले में बाँधकर अथर्व के हाथ में पकड़ाया दर्जी ने। साथ कहा, “वो तो दीदी जी हमसे ही सूट सिलवाती हैं हमेशा इसलिए मिल गया वरना बिना पर्ची के तो हम रूमाल भी नहीं देते किसी को।” अथर्व मुस्कुराया, पैसे दिए और ख़ुशी-ख़ुशी निकल गया पियू के घर के लिए। मोड़ तक पैदल जाना होगा जहाँ से ऑटो मिलेगा। ख़ुशी और मन में नई उम्मीद है। उसके कदम जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहे हैं। कितनी दुकानें, कितने लोग और अथर्व के चेहरे पर मुस्कुराहट। तभी एक चाय की दुकान के सामने से गुज़रते हुए उसकी नजरें पियू पर पड़ीं। अथर्व को लगा जैसे उसे धोखा हुआ, फिर रुक कर दोबारा देखा तो वो पियू ही है लेकिन किसी के साथ बैठी हुई है। अथर्व दुकान के अंदर मुड़ गया। कुछ भी सोचता उससे पहले पियू की मेज़ तक पहुँचा और देखा तो पियू

के हाथ पर हाथ रखे शेखर बैठा है और एक अंगूठी रखी है। अथर्व दंग वहीं बुत बन गया जैसे काटो तो खून नहीं।

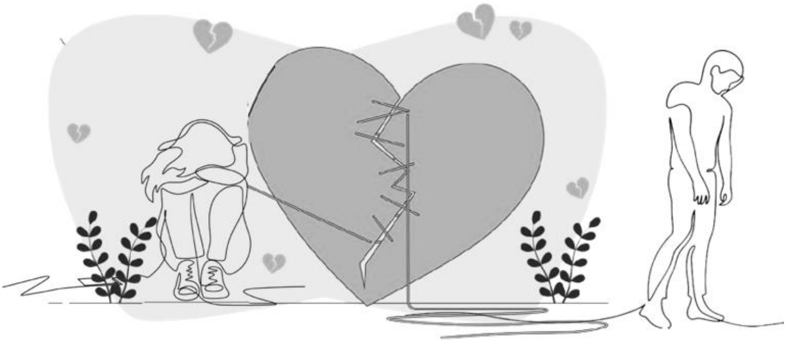

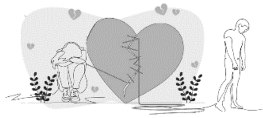

अध्याय १६
पारदर्शी रेशे

पियू ने नज़रे उठाकर देखी तो सकपका गई। उसे भी अथर्व के वहाँ होने की कोई आशा नहीं थी। यूँ उसे सामने अचानक देखकर हड़बड़ा गई। अथर्व को लगा मानो कोई उसे एक साथ हजारों सुइयाँ चुभा रहा है। आँखें भर आईं, गला भर आया कि उसके सामने ये क्या है! अथर्व को देखकर शेखर ने कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दी बल्कि पूछा, "जी? आपको कुछ चाहिए?" अथर्व ने शेखर की ओर देखा और यहाँ पियू खड़ी हो गई, "अथर्व, तुम? यहाँ?" अथर्व के मन में रोष है। मेज़ पर पड़ी अंगूठी, शेखर का यूँ पियू का हाथ थामे बैठना, अथर्व एक भँवर में फँसा हुआ महसूस कर रहा है। पियू के मुँह से अथर्व का नाम सुनकर शेखर खड़ा हुआ और हाथ आगे बढ़ाया, "अच्छा आप हैं अथर्व! पियू आपके बारे में ही बता रही थी और आप स्वयं प्रकट हो गए। ऐसे ही लोगों के जीवन में भी कहीं से भी प्रकट हो जाते हैं?" अथर्व से ये तंज सहन नहीं हो रहा है। पियू ने भी शेखर के इस व्यवहार पर आपत्ति जताई और कहा, "शेखर! तुम्हें ये सब बोलने की ज़रूरत नहीं है। मेरे और अथर्व के बीच जो है वो हम आपस में सुलझा लेंगे।" शेखर ने उसकी बात ख़त्म होने से पहले ही कहा, "जो है या जो नहीं है! पियू इसके साथ तुम खुश नहीं हो, तो एक तरह से कुछ नहीं है।" अथर्व को ऐसा लग रहा है जैसे उसे कोई गहरी खाई में ढकेल कर चला गया। उसे ठीक से साँस नहीं आ रही, दिल की धड़कनें अचानक तेज़ हो गईं। पियू ने अथर्व से कहा, "अथर्व! तुम जैसा सोच रहे हो वैसा नहीं है, मैं बस ये... मैं मिलना नहीं चाहती थी मगर..." वो अपनी बातों को पूरा

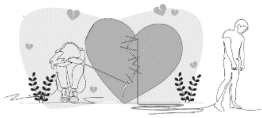

नहीं कर पा रही। उसकी धड़कनें भी तेज़ हैं। उसे समझ में आ रहा है कि अथर्व किस ग़लतफ़हमी में गिर गया है। अथर्व से बहुत देर तक कुछ बोला नहीं गया, बस एक बार पियू को देखा, फिर शेखर को फिर मेज़ पर रखी अंगूठी को। कुछ देर बाद वहाँ से पलटा और निकलने लगा। कुछ कदम बढ़ाए और लौटा। “मेरा अतीत! हाँ पियू? मेरा अतीत? और ये? हमारा रिश्ता सच में कमज़ोर था। तुम्हें एक पल नहीं लगा अपने अतीत की गोद पर जाकर बैठने में। और इस आदमी से भागती हुई मेरे पास आई थी न? आज ये तय कर रहा है कि तुम मेरे साथ ख़ुश नहीं हो और हमारे बीच क्या नहीं है। मेरा अतीत? मुझसे गलती हुई। तुम मेरे अतीत के भी लायक नहीं।” और भीगी आँखों से वहाँ से निकल गया। पियू ने आवाज़ लगाकर उसे रोकना चाहा लेकिन अथर्व नहीं पलटा। शेखर ने पियू का हाथ थामा और कहा, “उसे अभी जाने दो। अभी वो नहीं समझेगा।” पियू ने झटका देकर शेखर का हाथ छुड़ाते हुए कहा, “मुझे यहाँ आना ही नहीं चाहिए था।” शेखर को ये बात चुभ गई। “आना नहीं चाहिए था? पियू, वो आदमी तुमसे बिना कुछ पूछे, बिना कुछ सच जाने तुम्हारे चरित्र पर उंगली उठाकर चला गया। और क्या गलत किया मुझसे मिलकर? हम भी तो आखिरी बार ही मिल रहे हैं न? वो तो इस अंगूठी का भला हो, वरना तुम आज भी नहीं मिलतीं। इतना ही प्यार है अथर्व को तुमसे तो एक बार पूछ लेता कि यहाँ क्या कर रही हो। लेकिन उसने बिना कुछ सोचे समझे…” पियू को रोना आ गया। ये उसके जीवन में मुसीबतें ख़त्म ही नहीं हो रही। न जाने कहाँ से परिस्थितियाँ उसके विपरीत हो जाती हैं। उसे रोता देखकर शेखर को बुरा महसूस हुआ, उसने पियू को गले से लगाने की कोशिश की लेकिन पियू पीछे हट गई और वहाँ से जाने के लिए निकलने लगी। शेखर ने पीछे से उसका हाथ थामते हुए उसके हाथ में वो अंगूठी रखी और कहा, “इसे अपने पास ही रखो। चाहे फिर

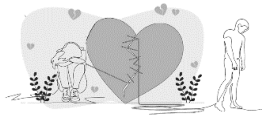

कभी मुझसे न मिलना, लेकिन मेरी ये आखिरी बात रख लो।" पियू की आँखों से आँसू थम नहीं रहे थे, धड़कनें तेज़ थीं। उसे कुछ नहीं कहना सुनना था। उसने वो अंगूठी मुट्ठी में भींची और वहाँ से निकल गई।

***

रोते रोते अपने घर पहुँची। कमरे में जाकर सबसे पहले उसने अथर्व को फोन लगाया। 5, 6, 7, 8 बार लेकिन हर बार निरुत्तर। फिर उसने अथर्व को कुछ संदेश भेजे जिसमें उसने अपना पक्ष रखने की कोशिश की कि अथर्व को ग़लतफ़हमी है। बहुत देर तक कोई संपर्क नहीं हुआ। यहाँ पियू का मन व्याकुल है। कुछ देर बाद अथर्व का संदेश आया, "हमारे बीच जो भी था बस धोखा था सच नहीं। वरना तुम यूँ बिना मेरा इंतज़ार किए किसी और के पास नहीं कूद जाती। प्यार तुम्हारे बस का नहीं। सच में अस्मिता और तुम्हारी कोई तुलना नहीं। वो अपनी जान देने को तैयार थी और तुम्हें एक पल नहीं लगा पीठ पर छुरा भोंकने में।" ये पढ़कर पियू का मन तार-तार हो गया। अथर्व का गुस्सा, उसकी ग़लतफ़हमी - वो सब कुछ झेलने को तैयार थी इसलिए उससे संपर्क करने की कोशिश कर रही थी लेकिन जैसे ही उसने ये संदेश पढ़ा उसे लगा कि उसके आत्मसम्मान पर चोट की गयी है। अस्मिता से तुलना करना और पियू को चुनना अथर्व की गलती थी। पियू अपना नियंत्रण खो बैठी। अब उसका दर्द गुस्से में बदलकर जैसे उसके मन में आग लगा रहा है। उसे अपमानित महसूस हो रहा है। उसे अथर्व ने अपना पक्ष रखने तक का मौका नहीं दिया, उल्टा उसके अस्तित्व पर सवाल खड़े कर दिए, उसके चरित्र पर उंगली उठाई। ये सब वह सहन नहीं कर पा रही है।

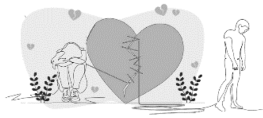

उधर अथर्व अपने घर नहीं जा पाया। वहीं देर रात तक सड़कों पर बेसुध घूमता रहा। जाने कितनी बातें मन में लहरों की तरह टकरा रही थीं। कितने सवाल, कितनी उलझनें। माँ ने कई बार फ़ोन किया लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया। माँ ने घबराहट में खन्ना साहब को फ़ोन पर बताया कि अथर्व घर नहीं आया और उससे संपर्क भी नहीं हो रहा। खन्ना जी तभी घर से निकल पड़े अथर्व की खोज में। वफ़ा जी और सुनंदा जी घर में रुकी। कार्यालय के रास्ते से होते हुए घर की तरफ़ आने वाले हर रास्ते पर खन्ना साहब ने चक्कर लगाए लेकिन अथर्व का कोई पता नहीं चला। सब डर रहे हैं । नंदिनी का मन ख़ौफ़ से भर गया है। कमरे में कैद बैठी है। उसे बाहर निकलने में डर लग रहा है। गंभीर माहौल है। कुछ देर बाद खन्ना साहब घर लौटने लगे। गली में घुसते ही कोने में अथर्व को देखा, बेसुध, कार्यालय का बैग लटकाए, ज़मीन पर बैठा हुआ है, गहरी सोच में। उसे देखकर खन्ना साहब की जान में जान आई। उसके पास जाकर बैठे, और कंधे पर हाथ रखा। अथर्व ने आँसुओं से भरी आँखें उठाकर उन्हें देखा और बिखर गया। उन्हें गले लगाकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा लेकिन कुछ बता नहीं सका। खन्ना साहब ने भी कुछ नहीं पूछा। उसे गले लगाकर वहीं सड़क पर बैठे रहे। थोड़ी देर तक दोनों वहीं वैसे ही बैठे रहे फिर अथर्व कुछ शांत हुआ। खन्ना साहब ने न कुछ पूछा और अथर्व ने न कुछ बताया। उसकी स्थिति थोड़ी संतुलित हुई तो खन्ना साहब ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए घर चलने को कहा। अथर्व धीरे-धीरे उठा और उनके साथ घर की ओर चल पड़ा। दरवाज़ा खोलते ही सुनंदा जी और वफ़ा जी अथर्व की ओर बढ़े। लेकिन खन्ना साहब ने इशारे से उन्हें पीछे हटने को कहा। दोनों समझ नहीं पाईं कि क्या हुआ। अथर्व चुपचाप अपने कमरे में चला गया। सुनंदा जी अथर्व की ऐसी हालत देखकर व्याकुल हैं। खन्ना साहब से पूछा कि क्या

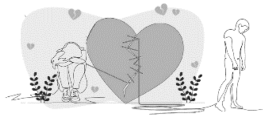

हुआ तो खन्ना साहब ने उन्हें शांति से बैठने को कहा। वफ़ा जी को पानी लाने के लिए कहा। सुनंदा जी भयभीत हैं। खन्ना साहब ने सुनंदा जी को धैर्य रखने के लिए कहा। फिर गंभीरता से उन्होंने पूरी बात बताई। सभी ने अनुमान लगाया कि पियू से ही कोई कहासुनी हुई होगी परन्तु इतनी कि उसकी मनोदशा इतनी खराब हो गई! बहुत रात हो चुकी है इसलिए पियू को फ़ोन करना उचित नहीं समझा अन्यथा अथर्व का हाल सुनकर वह भी परेशान हो जाएगी। खन्ना साहब और वफ़ा जी कुछ देर बाद घर चले गए। बाकी की रात खामोशी में निकली किन्तु सभी के मन में शोर है।

अगले दिन सुबह से अथर्व कमरे से बाहर नहीं निकला। सुनंदा जी ने बुलाने की कोशिश की लेकिन अथर्व ने मना कर दिया और कमरे का दरवाज़ा नहीं खोला। सुनंदा जी ने पियू को फ़ोन लगाया तो स्वभाव से विपरीत पियू ने उनके फ़ोन का जवाब नहीं दिया। सुनंदा जी को अब यकीन हो गया है कि हो न हो दोनों में कोई मतभेद हुआ है।

***

घड़ी की सुइयाँ वक्त बदलते रहे लेकिन अथर्व कमरे से नहीं निकला। कमरे में ही खाना खाता फिर दरवाज़ा बंद कर लेता। नंदिनी से भी नहीं मिला। नंदिनी दरवाज़े पर हाथ फेरती और पूछती, "तू ठीक है?" कभी जवाब आता तो कभी नहीं। नंदिनी की हालत करीब से महसूस की है सुनंदा जी ने, उन्हें अथर्व के लिए अब डर लग रहा है। पाँचवे दिन अथर्व सुबह तैयार होकर कमरे से निकला। सुनंदा जी बैठक में सुबह की चाय पी रही हैं। अथर्व को तैयार देखकर उन्हें थोड़ी हिम्मत मिली कि अथर्व सामान्य होने की कोशिश कर रहा है। अथर्व ने बिना कुछ बात किए, पानी पिया और निकल गया। सुनंदा जी को

लगा दफ़्तर जाएगा तो मन बदलेगा, समय मिलेगा। पिछले पाँच दिनों में पियू से कोई संपर्क नहीं हो पाया है। सुनंदा जी ने सोचा कि आज पियू के घर जाएगी उससे मिलने। करीब 3-4 घंटे बीते और अथर्व घर लौट आया। खामोशी से अपने कमरे में गया और दरवाजा बंद कर लिया।

अगले दिन से सामान्य रूप से कार्यालय जाने लगा और काम करके देर से लौटता। आजकल सबके साथ बैठकर खाना नहीं खाता। खाने की थाली लेकर अपने कमरे में अकेले ही समय बिताता है। सबसे एक अनदेखी दूरी बना ली है। माँ ने बात करने की कोशिश की लेकिन ठीक से जवाब नहीं दिया। माँ से और रुका नहीं गया तो वह पियू के घर गई उससे मिलने। उन्हें देखकर रूपा जी और सागर जी ने उन्हें सम्मान के साथ भीतर बुलाया लेकिन वहाँ भी एक अजीब खामोशी महसूस हुई। रूपा जी सामान्य व्यवहार के विपरीत बहुत खामोश हैं। पियू के बारे में पूछा तो हिचकिचाते हुए उन्होंने पियू को बुलाना चाहा। रूपा जी कुछ देर के लिए भीतर चली गईं। सुनंदा जी को यह व्यवहार अजीब लगा। कुछ देर बाद पियू आई तो उसका भी चेहरा मुरझाया हुआ दिखा। सुनंदा जी के पैर छुए और वहीं एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गई। सुनंदा जी ने बात छेड़ते हुए कहा, “बेटा कैसी हो? बहुत दिन हो गए तुमसे बात नहीं हो पाई। अथर्व भी कुछ नहीं बोलता। सब ठीक तो है ना?” सागर जी और रूपा जी अचंभित होकर सुनंदा जी की ओर देखने लगे और तभी रूपा जी बोल पड़ीं, “आपने तो मेरी बेटी को ले जाते समय वचन दिया था कि बहू नहीं बेटी ले जा रही हैं, इतनी जल्दी भूल गई अपना वचन? आज मेरी बेटी को फिर उसी बीच राह पर खड़ा कर दिया?” सुनंदा जी को कुछ समझ में नहीं आ रहा कि ऐसा क्या हुआ और ये सब बातें रूपा जी क्यों बोल रही हैं। सागर जी

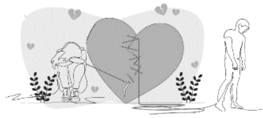

भी खामोशी से उन्हें देख रहे हैं। कुछ देर बाद पियू उठी और कमरे में चली गई। बैठक में एकदम सन्नाटा। पियू कुछ कागज़ों के साथ लौटी और सुनंदा जी को थमा दिया। "अथर्व ने डिवोर्स का नोटिस भेजा है। मैंने निर्णय लिया है कि मैं भी अलग होना चाहती हूँ।" रूपा जी रो पड़ीं। सुनंदा जी को तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा कि ये सब क्या हो गया। सागर जी ने हाथ जोड़कर सुनंदा जी से कहा, "हमने बहुत उम्मीद और भरोसे के साथ अपनी बेटी भेजी थी। हो सकता है पियू से जाने-अनजाने कोई गलती हुई होगी लेकिन इस तरह का सलूक, हमने आपसे ऐसी उम्मीद नहीं की थी।" इतना बोलकर सागर जी अपने कमरे में चले गए। रूपा जी भी आँसू पोंछते हुए उनके पीछे चली गईं। पियू खामोशी से सामने बैठी है नज़रे झुकाए। सुनंदा जी के पास कोई बात नहीं बची। वह उठीं और बिना कुछ कहे चली गईं।

सुनंदा जी के सामने उनके बच्चों का जीवन फिर एक ऐसी कगार पर है जहाँ से सब तहस-नहस होता हुआ दिख रहा है। वह इसे रोकना चाहती हैं लेकिन बेबस हैं।

अध्याय १७
अनकही गिरहें

पिछला एक महीना अथर्व, पियू और दोनों परिवारों के लिए बहुत कठिन रहा है। सुनंदा जी ने कोशिश की अथर्व को समझाने की लेकिन अथर्व का मन जैसे पत्थर का हो गया है। भावनाओं को किसी दिल के कोने में क़ैद करके बैठा है। दफ़्तर से घर, घर से दफ़्तर, इतने में सिमट गया है। दोस्तों से मिलना-जुलना बिल्कुल बंद। यहाँ तक कि नंदिनी और माँ के साथ भी समय नहीं गुज़ारता। नंदिनी समझती है अथर्व के मन को। आकर बैठती है उसके कमरे में, लेकिन अथर्व दफ़्तर के काम में अपने आप को व्यस्त कर लेता है। खन्ना साहब ने इस बार भी कोशिश की अथर्व से जानने की कि क्या हुआ और ऐसा कदम क्यों उठाया उसने, परंतु वो किसी से कुछ न बोला। थोड़ा दबाव पड़ता तो उत्तर में कहता, "मुझे लगता है यही ठीक है और यही होना चाहिए।" और वहाँ से निकल जाता। यहाँ पियू भी आहत है। न केवल अथर्व ने उसे ग़लत समझा, बल्कि उसके चरित्र पर भरोसा नहीं किया। उसे मौका नहीं दिया अपना पक्ष रखने का वो भी तब जब उसके अतीत ने इस रिश्ते पर पहले चोट की थी। देखते-देखते वो तारीख आ गई जब दोनों को पारिवारिक कोर्ट में जाकर इस रिश्ते को खत्म कर देंगे।

***

मार्च, 2021 | परिवार न्यायालय, नई दिल्ली | …

पियू के साथ माँ-बाबा आए हैं। अथर्व किसी को साथ नहीं लाना चाहता था परन्तु माँ ने कहा वह साथ जाएगी। आज पहली बार इतने वर्षों में नंदिनी ने आगे बढ़कर साथ जाने की बात कही। अथर्व मना न कर सका। पियू पहले ही पहुँच गई है। माँ-बाबा न्यायलय परिसर के बाहर ही रुक गए। इस युद्ध क्षेत्र तक वे पियू के साथ हैं और इस युद्ध में भी साथ हैं लेकिन रण में पियू को अकेले ये रास्ता तय करना है। उसने आग्रह किया कि वह अकेले ये करना चाहती है, अपने लिए। सागर जी ने उसकी मनोदशा समझी और उसके निर्णय का सम्मान करते हुए रूपा जी के साथ परिसर के बाहर इंतजार करना उचित समझा। कुछ देर में अथर्व भी आ पहुँचा। पियू के परिवार को देखकर माँ और नंदिनी उन्हीं के साथ रुक गए, अथर्व अकेले भीतर गया। मन में संवेदनाओं का बाढ़ समेटे हुए कोर्ट की ओर बढ़ रहा है और, उसकी सबसे पसंदीदा गुलाबी सूट में खड़ी, पियू।

अपने-अपने वकीलों से बात करके वहीं बैठ कर इंतजार कर रहे हैं। दोनों कहीं-न-कहीं चाहते हैं कि यह वक्त यहीं ठहर जाए लेकिन अभिमान और रोष का संघर्ष उनकी भावनाओं को बाँधे हुए है। तभी अचानक नंदिनी आकर पियू के पास बैठी। उसे देखकर अथर्व भी यादों की तंद्रा से बाहर निकला। पियू की पलकें छलक उठीं और उसने नंदिनी का हाथ थामा। नंदिनी ने अथर्व को इशारे से अपने पास आकर बैठने को कहा। अथर्व ने 'ना' में सिर हिलाया, मगर नंदिनी ने ज़ोर दिया। जाकर चुपचाप नंदिनी के पास बैठ गया। नंदिनी बोली, "पता है आरू, मैं दवाइयाँ क्यों नहीं खाना चाहती?" फिर एक नज़र पियू की ओर देखा। दोनों ने 'ना' में सिर हिलाया और पियू ने पूछा, "नहीं दीदी... क्यों

नहीं खाना चाहती?" नंदिनी कुछ पल मौन रही और बोली, "दवाइयाँ खाती हूँ तो मुझे स्पर्श दिखाई देना बंद हो जाता है। जब दवाइयाँ नहीं खाती तो वह मेरे आस-पास रहता है। मुझे पता है वह कभी लौटकर नहीं आएगा। जिस दिन गया था, उस दिन उसे रोक पाना मेरे बस में नहीं था, लेकिन उसे ख़ुद से अलग न करना, मेरे बस में है। बहुत मुश्किल से वह साथ मिलता है जिसे आप देख सको, महसूस कर सको, वरना एक पल नहीं लगता किसी को खो देने में। तुम जिसे ठीक होना कहते हो, वैसे ठीक होकर मुझे मेरे स्पर्श से दूर होना पड़ेगा, और वह मुझे मंज़ूर नहीं। फिर चाहे मैं दुनिया के लिए पागल ही सही। ऐसा नहीं कि यह सिर्फ़ मेरे साथ हुआ है। पापा भी एक दिन हम सबको यहीं पीछे छोड़कर चले गए, रह गई बस उनकी यादें। मान, अभिमान, द्वेष, रोष... सब रह जाता है पीछे। तो कोशिश करनी चाहिए कि जब एक न रहे, तो उसके होने का एहसास रहे।" बोलकर वह उठी और माँ के पास चली गई परिसर के बाहर।

अथर्व और पियू स्तब्ध हैं। मूक बैठे सोच रहे हैं कि प्यार के मायने हमेशा से उनकी आँखों के सामने जीवित रूप लिए थे और उन्होंने वो समझना तो दूर, देखा तक नहीं। नंदिनी इतनी आसानी से कैसे इतनी बड़ी बात समझा गई जो दोनों चाहकर भी समझ नहीं पा रहे थे। पियू और अथर्व दोनों की आँखों से आँसू बह रहे हैं। साथ बह रहा है सारा मतभेद, आक्रोश... मन हल्का हो रहा है। उस प्रेम का अनुभव हृदय में भरने लगा है और एक पल ने उन्हें दोबारा बाँधना शुरू किया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर सिर्फ़ रो रहे हैं, कि किस परिस्थिति में हैं आज, ये कैसा निर्णय था! अनजाने ही दोनों के कदम एक-दूसरे की ओर बढ़े, एक-दूसरे के प्रति उस प्रेम के रंग में रंग रहे हैं... दोबारा...

वही प्रेम जिसपर नासमझी और ग़लतफ़हमियों की धूल चढ़ने लगी थी। अथर्व और पियू यही तो सत्य है और यही होना था... यही अंत है...

तभी शेखर की आवाज़ आई, "पियू... आने में थोड़ी देर हो गई, लेकिन अब कोई देर नहीं होगी।" अथर्व ने मुड़कर देखा तो सामने शेखर खड़ा है। शेखर ने अथर्व की ओर मुड़कर कहा, "अच्छा हुआ तुमने ये फैसला लिया। तुम दोनों का साथ कभी सही था ही नहीं। मेरी गलतियों की वजह थी ये गलती, तुम दोनों का रिश्ता। लेकिन अब मैं सब ठीक कर दूँगा। पियू, शेखर तुम्हारा था और हमेशा तुम्हारा रहेगा, मैं आज ये वचन देता हूँ।"

अथर्व और पियू निःशब्द शेखर की ओर देख रहे हैं। ये कैसा भँवर है, अब ये कैसा चक्रवात है। अथर्व के बढ़ते हुए कदम वहीं जम गए। पियू भी डर के मारे वहीं जम गई है। चारों ओर सन्नाटा है। तभी अथर्व के फ़ोन की घंटी बजी और तीनों जैसे होश में आए। अथर्व पीछे हट गया। पियू नहीं समझ पाई कि बीते पलों में जीवन ने ये फिर कैसा रुख किया। अथर्व असहजता से पीछे पलटा और फ़ोन निकाला। *अस्मिता कॉलिंग...*

अंतर्निहित प्रश्न

प्रिय पाठकों,

जैसे ही आप इस यात्रा के अंत तक पहुँचे हैं, कई सवाल आपके मन में उठ रहे होंगे। हर कहानी अपने पीछे कुछ अनसुलझी गुत्थियाँ छोड़ जाती है, और यह कहानी भी अपवाद नहीं है।

सोचिए, शेखर अचानक से न्यायलय कैसे पहुँचा? उसे इस समय का पता कैसे चला? नंदिनी का क्या हुआ? उसके जीवन का सफ़र किस दिशा में बढ़ा? और अस्मिता ने अचानक से अथर्व को क्यों कॉल किया? क्या वह कॉल एक संयोग था या कुछ और? पियू और अथर्व के बीच क्या ऐसा कुछ था जो अनकहा रह गया, जिसे वे शब्दों में बयाँ नहीं कर पाए?

ये प्रश्न आपके लिए हैं, जिन्हें आप अपने विचारों में खोज सकते हैं। हो सकता है, इनमें से कुछ सवालों के जवाब आप अपने आप से पूछते हुए पाएँ, या शायद इनका कोई जवाब नहीं। लेकिन यही तो कहानियों का सार है - वो हमें सोचने पर मजबूर करती हैं, और हमें कुछ ऐसा दे जाती हैं जो समय के साथ और भी गहराई से जुड़ जाता है।

आपके विचारों की यह यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है, वरन् यह तो केवल एक नए सफ़र की शुरुआत है।

धन्यवाद और शुभकामनाएँ!

परिशिष्ट

|| धागे: रचना की प्रेरणा ||

'धागे' अनकहे एहसासों की गूँज है, जिन्हें हम रोज़ जीते हैं, परन्तु शब्दों में पिरो नहीं पाते। यह कहानी रिश्तों की जटिलता, उनकी कोमलता और उनके उतार-चढ़ाव को दर्शाता है। कभी वे उलझ जाते हैं, तो कभी किसी-न-किसी मोड़ पर सुलझ भी जाते हैं।

इस कहानी की प्रेरणा किसी एक घटना से नहीं, वरन् उन अनगिनत कहानियों से मिली, जो हमने, अपने आसपास देखी, सुनी और कभी-कभी महसूस भी की हैं। ज़िंदगी में कुछ रिश्ते बेहद स्पष्ट होते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जिनके मायने समय के साथ बदलते रहते हैं। ये वही रिश्ते हैं, जो कभी हमें बाँधते हैं, तो कभी हमें ख़ुद से जोड़ते हैं।

|| व्यक्तिगत अनुभव और साहित्यिक छाप ||

'धागे' का बीज शायद उन अनकहे एहसासों में पड़ा, जो समय के साथ मेरे मन में बुने जाते रहे। शरतचंद्र की कहानियाँ, गुलज़ार की नज़्में, और मंटो की बेबाकी, इन सबसे कुछ-न-कुछ लेकर यह कहानी आकार लेता गया। लेकिन इससे भी ज़्यादा, यह मेरी अपनी सोच, अपने अनुभव और अपने आसपास के जीवन की एक छवि है।

|| लेखन के पीछे की सोच ||

मैंने हमेशा माना है कि रिश्ते कोई निश्चित परिभाषा में नहीं बँधते। वे हमारे अनुभवों के साथ ढ़लते हैं, बदलते हैं, और कभी-कभी बिना कोई स्पष्ट कारण, बिखर भी जाते हैं। इस उपन्यास में मैंने कोशिश की है कि इन्हीं धागों को बुनकर एक ऐसी तस्वीर बनाई जाए, जिसमें हर पाठक अपने जीवन का कोई न कोई टुकड़ा पहचान सके।

'धागे' उन अनदेखी गिरहों को खोलने की एक कोशिश है, जो अक्सर हमारे भीतर चुपचाप बँधी रह जाती हैं। यह एक कहानी नहीं, रिश्तों के ताने-बाने की एक भावनात्मक यात्रा है।

|| शीर्षक 'धागे' का अर्थ और प्रतीकात्मकता ||

'धागे' भावनाएँ हैं, जो रिश्तों को आपस में जोड़ती हैं। कभी ये धागे इतने मजबूत होते हैं कि वक़्त की आँधी भी इन्हें तोड़ नहीं पाती, और कभी इतने नाज़ुक कि एक हल्की-सी खींचतान से बिखर जाते हैं। रिश्ते, प्रेम, दोस्ती, विश्वास, ये सब धागों की तरह होते हैं, जो उलझते भी हैं, सुलझते भी हैं, टूटते भी हैं, और कई बार, फिर से जुड़ भी जाते हैं।

यह कहानी इन्हीं धागों की कहानी है जो भावनाओं से बुने गए हैं, रिश्तों से रंगे गए हैं, और ज़िंदगी के अनुभवों से सिले गए हैं।

|| पात्रों की विशेषताएँ ||

इस उपन्यास के पात्र ज़िंदगी की अलग-अलग परतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे हमारे आस-पास के ही लोग हैं, शायद आपके किसी दोस्त जैसे, आपके परिवार के किसी सदस्य जैसे, अथवा कभी-कभी आपके जैसे।

|| **कहानी के भावनात्मक और सामाजिक संदर्भ** ||

यह उपन्यास उन सवालों को उठाता है, जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं:

- क्या हर रिश्ता हमेशा वैसा ही रहता है, जैसा हम सोचते हैं?
- क्या हर दूरी भौतिक होती है, या कुछ रिश्ते भावनात्मक रूप से भी दूर चले जाते हैं?
- क्या हर टूटा रिश्ता वाकई टूट जाता है, अथवा कुछ धागे वक़्त के साथ ख़ुद को फिर से बुन लेते हैं?

इस कहानी में रिश्तों की उलझनें केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी हैं। परंपराओं, विश्वासों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच रिश्ते कैसे प्रभावित होते हैं, यही इस पुस्तक की आत्मा है।

पाठकों के नाम एक संदेश

प्रिय पाठकों,

आपके हाथों में मेरी पुस्तक *'धागे'* है, और यह क्षण मेरे लिए उतना ही विशेष है जितना किसी कारीगर के लिए अपनी महीनों की मेहनत से बुने गए ताने-बाने को पूरा होते देखना। यह कहानी केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि उन भावनाओं का साक्ष्य है जो हमारे रिश्तों को संजोती, उलझाती और सुलझाती हैं।

इससे पहले, मेरे शब्द *'अर्थ'* के रूप में कविता के धागों में पिरोए गए थे, और जो अपनापन और स्नेह आपने *'अर्थ'* को दिया, उसने मुझे यह विश्वास दिलाया कि भावनाओं की भाषा कभी मौन नहीं रहती, वह कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी हृदय में प्रतिध्वनित होती ही है। उसी विश्वास ने *'धागे'* को जन्म दिया, जो इस बार एक कहानी के रूप में आपके समक्ष है। एक ऐसी कहानी जो शायद आपके किसी अनुभव से गुज़री हो, किसी रिश्ते की स्मृति में बसी हो, या फिर किसी अनकहे अहसास का अक्स हो।

लेखन मेरे लिए केवल विचारों को पृष्ठों पर उतारना नहीं है अपितु यह आत्मा की उस पुकार का उत्तर है जो हर लेखक अपने पाठकों में ढूँढ़ता है। यह पुस्तक मेरे अनुभवों, देखे-सुने रिश्तों और जीवन के उन मोड़ों का प्रतिफल है, जहाँ धागे उलझते भी हैं, टूटते भी हैं, और कभी-कभी ख़ुद-ब-ख़ुद सुलझ जाते हैं। मैं आशा करती हूँ कि इन पन्नों में आपको कहीं अपना प्रतिबिंब दिखेगा।

आपकी प्रतिक्रियाएँ, आपके विचार और आपके अनुभव मेरे लिए उतने ही मूल्यवान हैं जितना इस पुस्तक का हर शब्द। मैं आपके संवाद की प्रतीक्षा करूँगी। आप मुझसे इंस्टाग्राम पर @thewittyworldwriter या ईमेल theauthorsayantani@gmail.com पर जुड़ सकते हैं।

शब्दों की इस यात्रा में मेरे साथ बने रहने के लिए हृदय से आभार।

सप्रेम,
सायंतनी साहा

आवरण: एक दृश्य में समेटी भावनाएँ

'धागे' का आवरण अपनी ही कहानी कहता है।

इस चित्रात्मक अभिव्यक्ति में बुना लाल धागा उन रिश्तों का प्रतीक है जो जीवन की विक्षिप्तताओं के बीच भी अटूट बने रहते हैं। यह धागा हमें जोड़कर रखने वाले उन बंधनों को दर्शाता है, जो परिस्थितियों के बिखरने पर भी हमें एक साथ बनाए रखते हैं। जहाँ एक ओर रिश्तों का गहराई से बुना होना महत्वपूर्ण है, वहीं रिश्तों में एक उन्मुक्तता का भाव भी उतना ही आवश्यक है। उड़ते हुए पक्षी उसी उन्मुक्तता और स्वतंत्रता का भाव जगाते हैं। साथ ही यह संकेत भी देते हैं कि हम सभी अपने जीवन की राहों में कहीं-न-कहीं एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

टूटे हुए शाखों को जोड़ता यह धागा हमें यह एहसास कराता है कि रिश्ते नाज़ुक होते हुए भी कितने मज़बूत हो सकते हैं।

हर रिश्ते की अपनी पहचान होती है, अपना अस्तित्व होता है जो अद्वितीय होता है और उसकी किसी दूसरे रिश्ते से कोई तुलना नहीं की जा सकती। ठीक उसी प्रकार केंद्र में उभरा ऊँगली का निशान इस बात का प्रतीक है कि हम सभी अपने संबंधों पर अपनी अनूठी छाप छोड़ते हैं।

मटमैले सफ़ेद रंग की पृष्ठभूमि एक सौम्य, स्मृतिपूर्ण वातावरण रचती है, जो पाठकों को इन संबंधों की गहराई और उनके स्थायी प्रभाव को महसूस करने के लिए आमंत्रित करती है।

इस आवरण का प्रत्येक तत्व सहज रूप से एक-दूसरे में गुंथा हुआ है, जो भाग्य, संकल्प और उन अमिट प्रतिध्वनियों के बीच के नाज़ुक संतुलन को चित्रात्मक रूप में दर्शाता है।

आवरण श्रेय:

श्री एल गुरु राघवेंद्रन
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

समीक्षाएँ

"सायंतनी की साहित्यिक प्रतिभा –

मानवीय रिश्तों की गहराई का चित्रण

आधुनिक साहित्य में विभिन्न शैलियों और कथानकों ने पाठकों के लिए असंख्य विकल्प प्रस्तुत किए हैं।"

हर लेखक की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है, लेकिन बहुत कम लेखक ऐसे होते हैं जो जनसामान्य को जोड़ते हुए सुस्वादु पाठकों को भी आकर्षित कर पाते हैं। सायंतनी उन्हीं लेखकों में से एक हैं, जिनकी लेखनी भावनात्मक गहराई और साहित्यिक परिष्कार का सुंदर समावेश प्रस्तुत करती है। सायंतनी की लिखी हुई कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता सादगी और गहनता का संतुलन है। वे आम बोलचाल की भाषा में गहरी बातें कहने की कला में निपुण हैं। उनके पात्र, भावनाएँ और रिश्ते इतने वास्तविक लगते हैं कि पाठक खुद को उन घटनाओं का हिस्सा महसूस करने लगता है। उनकी लेखनी में मानवीय संबंधों की जटिलताओं का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है - वह केवल कहानियाँ नहीं सुनातीं, बल्कि पाठकों को अपने किरदारों के दुख, प्रेम, संघर्ष और आत्मीय रिश्तों का अनुभव कराती हैं।

"मातृत्व की पुनर्परिभाषा – भावनाओं से जन्मा रिश्ता। मातृत्व किसी को जन्म देने से प्राप्त नहीं होता, यह भावना किसी में भी विकसित हो सकती है, बशर्ते रिश्ता गहराए।"

यह विचार मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बेहद भावुक कर देने वाला है, क्योंकि मेरे अपने जीवन में एक पालक पिता के रूप में मेरे बेटे ने वही खालीपन भरा है, जो पिताधर्म और मातृत्व की अधूरी लालसा ने उत्पन्न किया था। इस रिश्ते को शब्दों में बाँधना कठिन है, लेकिन सायंतनी की लेखनी ने इस अनुभव को बड़े ही मार्मिक ढंग से उकेरा है। सायंतनी का लेखन मानवीय संवेदनाओं को न केवल व्यक्त करता है बल्कि उन्हें एक नए दृष्टिकोण से परिभाषित भी करता है। विशेष रूप से मातृत्व का विषय, जो अक्सर जैविक संबंधों तक सीमित माना जाता है, उनकी लेखनी में पारंपरिक परिभाषाओं से परे जाकर प्रेम और आत्मीयता पर केंद्रित होता है।

संपूर्ण समाज के लिए एक संदेश -

यह साहित्य केवल व्यक्तिगत भावनाओं को छूता ही नहीं, बल्कि समाज को रिश्तों की नई परिभाषा अपनाने के लिए प्रेरित भी करता है। समाज अक्सर उन मानकों को लेकर प्रश्न खड़ा करता है जो पारंपरिक ढाँचों से हटकर होते हैं, लेकिन सायंतनी के शब्द इन मानकों को तोड़ते हैं और यह साबित करते हैं कि माता-पिता बनने का अधिकार केवल जन्म देने वालों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन सभी के लिए है जो निःस्वार्थ प्रेम से किसी को अपना बना लेते हैं।

एक अविस्मरणीय अनुभव-

यह लेखनी केवल एक कहानी नहीं कहती, बल्कि पाठकों को एक भावनात्मक यात्रा पर ले जाती है। शब्द संवेदनाओं को झकझोरते हैं, आँखों

को नम कर देते हैं और रिश्तों को नए दृष्टिकोण से देखने पर मजबूर कर देते हैं।

यह पुस्तक सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि महसूस करने के लिए है। यदि आप किसी ऐसी रचना की तलाश में हैं जो आपके दिल को छू जाए, आपके विचारों को बदल दे और आपको आपके अपने रिश्तों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करे, तो यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। यह प्रेम और अपनत्व की शक्ति का उत्सव है - एक ऐसी कृति जो पाठक के मन में लंबे समय तक गूंजती रहती है।

श्री शलभ मित्तल
मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
स्कूल फॉर सोशल आंत्रप्रेन्योर्स इंडिया

***

"सायंतनी के शब्दों का ताना बाना पढ़ने वालों को भावनाओं की दुनिया में मानो लुप्त कर देता हैं।"

कहीं-ना-कहीं उनके किरदारों की वास्तविकताएँ, उनके संघर्ष और सफलताएँ आपको अपने लगने लगते हैं। पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ आत्म-खोज की यात्रा है, जो आपको रुककर अपने अनुभवों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। सायंतनी की अपने पाठकों के साथ इतने गहरे स्तर पर जुड़ने की क्षमता वास्तव में उल्लेखनीय है। यह पुस्तक अपने और अपने आस-पास की दुनिया के बारे में गहरी समझ चाहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अवश्य पढ़ी जानी चाहिए।

मनन भंडारी

मुख्य वितरण अधिकारी

***

‘अर्थ’ पर पाठकों की प्रतिक्रिया

Amazon Reviews –

Poems can express our various emotions and facets of life in the best possible way.This is what Arth is about.The poems are quite short, yet can deeply touch the readers and they will be bound to read some of the poems again.

The language used is quite rich. However it is not very difficult to understand. Each poem carries an in depth meaning which increases the beauty of the style and content. Few of my favourite “shriman shrimati Ji”, “Charitra “ and “Samay”. Must read book.

***

I found this Hindi poetry book to be a must-read for anyone who appreciates engaging poems and thought-provoking questions on social stigma. The poems within are not only well-crafted but also convey matured thoughts on a variety of subjects. I highly recommend this book as a linguistic treat for those who enjoy Hindi literature. Overall, this book is an excellent addition to any poetry lover's collection.

***

I recommend to everyone, please read this. Book is so amazing and it has different section which is based on the life journey. I really appreciate the writer who wrote this all wonderful poems.

***

Especially for Hindi readers. If you are a reader and your language preference is Hindi you should definitely go for this book and the collection of poetry in this book is just so good.

***

Great collection of poems and every one of them is written perfectly. Appreciate the author to come up with such content. Loved to read and recommend.

***

Loved the way this book was written. Would recommend all to buy this book and flow with the immense beauty of words put together.

***

Sayantani has an exceptional ability to express emotions through words. The language used in this book is simple and easy to understand, making them accessible to a wide range of readers. Reading the poems is a delightful experience, as they leave a lasting impression on the mind and touch the heart. Arth is a testament to her talent and creativity. Overall, Sayantani is a true gem, and I look forward to reading more of her inspiring work in the future.

***

Sayantani Saha writes & speaks on issues of cultural bias, stigma and expressions of raw emotion. And this book is to put those thoughts & musings into a permanent expression to share with the readers who finds cognisance & relevance in this unique new voice of poetic reality. The poems are a summation of her worldly experience. And this book is a must read for Literary fanatics with an eye for pure & expressive use of language, especially Hindi 👍.

***

Having read this Hindi poetry book, I must say that it is a very good read indeed. The content is thought-provoking and the free thoughts conveyed within its pages are sure to leave

an impact on the reader. The poetry in this book is a must-read for anyone who is seeking realistic and relatable content. Overall, I highly recommend this book to anyone who is looking for an engaging and insightful read.

***

माँ दुर्गा की प्रतिमा मे वेश्यालय की मिट्टी का उपयोग करने वाला ये समाज फिर उन्हे तिरस्कार की नजरो से क्यों देखता है? उस विरोधाभास से भरे समाज को जो न सिर्फ वेश्याएं बल्कि चांडाल,किन्नर और न जाने कितने ही कर्म प्रधान जीवात्मा को एक सम्मानित अर्थ नही देता, उस समाज को इस किताब को पढ़ने की जरूरत है..उस समाज को लक्ष्मण रेखा की परिभाषा बदलने की जरूरत है.. धन्यवाद सायंतानी

***

Arth is an engaging poetry collection. Ye ek sangrah hai sabhi raso ka. I could read creativity in the poems which we do not get to see now-a-days.

To name a few: Kala Rang,Ankahi, Kiska Krishna and Kinnar are some of my favourites.

I liked the sensitivity, emotions, selection of words and

expression in each of the poem.It's a wonderful read. Go ahead and give a try, you won't be disappointed.

***

I love most about this book because is that It's so real. It is moving, and very well written!!!
Thank you Author.

***

A must have Hindi poetry masterpiece. Very well thought and beautifully written. Engaging and thought provoking content.

***

This book captures various essence of life which we tend we ignore or do not think about. Amazingly well written. 👌

***

Prolific work done. Written in a lucid manner, the content triggers another dimension of thought process amongst the readers, must read for the youth and the elder alike as it shapes your imagination to great extent. Looking forward for the next release from the author. Thanks.

***

An eye-opening book for our society thanks to the amazing author and a poet….for me ur wordsmith Sayantani Saha 😋

***

5.0 out of 5 stars Good Hindi content, loved the narration of social taboos and stigma. A must read!

***